RNI No. : UPHIN/2023/84344 ₹ : 30

प्रेरणा विचार

दिसम्बर–2023 (पृष्ठ–44) गौतमबुद्धनगर से प्रकाशित

स्व भारत का आत्मबोध

सरस्वती शिशु मन्दिर

सी–41, सेक्टर–12, नोएडा (गौतमबुद्ध नगर)
दूरभाष: 0120–4545608
ई–मेल: ssm.noida@gmail.com
वैबसाइड: www.ssmnoida.in

विद्यालय की विशेषताऐं

* भारतीय संस्कृति पर आधारित व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास की शिक्षा।
* नवीन तकनीकी शिक्षा प्रोजैक्टर, कम्प्यूटर, सी.सी.टी.वी., कैमरा आदि की सुविधा।
* आर.ओ. का शुद्ध पेय जल, सौर ऊर्जा, विशाल क्रीड़ा स्थल व हरियाली का समुचित प्रबन्ध।
* प्रखर देशभक्ति के संस्कारों से युक्त उत्तम मानवीय व चारित्रिक गुणों के विकास पर बल।
* सामाजिक चेतना एवं समरसता विकास के लिए विविध क्रियाकलाप।
* विद्यालय को श्रेष्ठतम बनाने की दृष्टि से आपके सुझाव सादर आमन्त्रित हैं।

दिनेश गोयल	प्रदीप भारद्वाज	असित त्यागी	प्रकाश वीर
(अध्यक्ष)	(व्यवस्थापक)	(कोषाध्यक्ष)	(प्रधानाचार्य)

प्रेरणा विचार

वर्ष -1, अंक - 12

RNI No. UPHIN/2023/84344

संरक्षक
मधुसूदन दादू

सलाहकार मंडल
श्री श्याम किशोर, डॉ. अनिल निगम
प्रो. (डॉ.) हरेन्द्र सिंह

संपादक
डॉ. मनमोहन सिंह शिशौदिया

कार्यकारी संपादक
डॉ. प्रियंका सिंह

प्रबन्ध संपादक
मोनिका चौहान

समन्वयक संपादक
राम जी तिवारी

अध्यक्ष प्रीति दादू की ओर से मुद्रक/प्रकाशक डॉ. अनिल त्यागी द्वारा चंद्र प्रभु ऑफसेट प्रिंटिंग वर्क प्रा. लि. नोएडा से मुद्रित तथा प्रेरणा भवन सी-56/20 सेक्टर-62 नोएडा, गौतमबुद्धनगर से प्रकाशित

संपादकीय कार्यालय
प्रेरणा शोध संस्थान न्यास,
सी-56/20 सेक्टर-62, नोएडा - 201309
दूरभाष : 0120 4565851,
ईमेल : prernavichar@gmail.com
वेबसाइट : www.prernasamvad.in

इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। संपादक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का निपटारा नोएडा की सीमा में आने वाली सक्षम अदालतों/फोरम में मान्य होगा।

संपादक

इस अंक में

भारत का स्वत्व परमार्थ के लिए 05

प्राचीन कालखंड में स्व 08

भारतीय अर्थ जगत में स्वत्व बोध के परिणाम 16

स्व आधारित भारत 41

स्व की रक्षा में कुटुंब का योगदान....10
भारतीय ज्ञान परंपरा में संचार सिद्धांत....12
आत्मबोध और महिलाएं....14
परस्पर निर्भर थे हमारे गांव....18
भारत को अस्थिर करने की साजिश....20
प्रेरणा विमर्श....21-24
भारत और भारतीयता का विचार....25
किसी ने जाति न पूछी....26
स्वत्व आधारित विदेश नीति का प्रभाव....28
कृत्रिम मेधा : खतरे अनेक पर संभावनाएं अपार....30
प्रकृति के साथ सामंजस्य जरूरी....32
इजराइल गाजा शांति वार्ता में कतर का प्रयास....34
उत्सवों और उल्लास का दिसम्बर....36
स्व से अनुप्राणित 'नानी का पिटारा'....38
विशेष समाचार....39
क्या आप जानते हैं?....40

स्व की पुनर्स्थापना समय की मांग

विश्व कल्याण के लिए स्व: जागरण आंदोलन को इसकी पुनर्स्थापना तक जारी रखना होगा। भारत के स्व का मूल आधार है आध्यात्मिक और यह अभिव्यक्त होता है उसकी स्वाधीनता, स्वतंत्रता, स्वदेशी एवं स्वराज्य की संकल्पना से। आवश्यकता है स्व आधारित सांस्कृतिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं स्वास्थ्य संबंधी सोच, और उस सोच पर आधारित विदेश नीति, रक्षा नीति, शिक्षा नीति, अर्थ नीति, कृषि नीति, स्वास्थ्य नीति, मीडिया नीति, आदि निर्मित करने की। यह आवश्यक है कि नई पीढ़ियां भारतीय मूल्यों को खुद में आत्मसात कर यह जानें कि भारतीय संस्कृति दुनिया की प्राचीनतम एवं वैभवशाली संस्कृतियों में से एक है।

रुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर कहते थे, "हमें सबसे पहले वह बनना पड़ेगा जो हम हैं"। अर्थात् भटकाव और बिखराव के कारण भेड़ों के झुंड का हिस्सा बने शेरों को अपनी वास्तविकता का अहसास करना ही होगा। हजारों वर्ष के दासत्व, शोषण एवं षड्यन्त्र का दंश सहने वाले भारत के वास्तविक स्वत्व की पुनर्स्थापना अनिवार्य है। हम भारतीयों को अपने विस्मृत स्व को डी.एन.ए. की भांति अपने सूक्ष्मतम अंश में न केवल स्थापित करना होगा, अपितु उसे भावी पीढ़ियों तक पहुंचाना भी सुनिश्चित करना होगा। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि जिस तरह विश्व कल्याण के लिए भारत का विश्वगुरु बनना आवश्यक है, उसी तरह विश्वगुरु बनने के लिए लगभग 142.86 करोड़ लोगों, 25.4 करोड़ युवाओं एवं दुनिया की 20 फीसदी मानवता को पोषित करने वाले भारत के स्व की पुनर्स्थापना आवश्यक है। अतः विश्व कल्याण के लिए स्वःजागरण आंदोलन को इसकी पुनर्स्थापना तक जारी रखना होगा। भारत के स्व का मूल आधार है आध्यात्मिक और यह अभिव्यक्त होता है उसकी स्वाधीनता, स्वतंत्रता, स्वदेशी एवं स्वराज्य की संकल्पना से। आवश्यकता है स्व आधारित सांस्कृतिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं स्वास्थ्य संबंधी सोच, और उस सोच पर आधारित विदेश नीति, रक्षा नीति, शिक्षा नीति, अर्थ नीति, कृषि नीति, स्वास्थ्य नीति, मीडिया नीति, आदि निर्मित करने की। यह आवश्यक है कि नई पीढ़ियां भारतीय मूल्यों को खुद में आत्मसात कर यह जानें कि भारतीय संस्कृति दुनिया की प्राचीनतम एवं वैभवशाली संस्कृतियों में से एक है। साथ ही यह वसुधैव कुटुंबकम्, विश्व-कल्याण तथा आध्यात्मिकता एवं भौतिकता में समन्वय के विचारों को समाहित करने वाली दुनिया की अकेली संस्कृति है। नई पीढ़ी में स्व कि स्थापना भारत को निश्चित ही विकसित देश बनाने में कारगर सिद्ध होगी।

भारत के स्व को जगाने में समावेशी विकास, सामाजिक सरंक्षण, लैंगिक समानता आधारित विकास, जाति विहीन समाज, तुष्टीकरण मुक्त नीति निर्माण आदि अति महत्वपूर्ण होंगे। जगजाहिर है कि स्व आधारित भारतीय योग आज दुनिया को शारीरिक एवं मानसिक रोगों से छुटकारा दिलाने में अहम भूमिका निभा रहा है। योग के व्यवहरिक रूप में स्थापित होने से पूरे विश्व में इसकी स्वीकार्यता बढ़ी है। ऐसे ही दुनिया के सामने आयुर्वेद आदि को व्यवहरिक एवं प्रभावी बनाना होगा। यह अहसास करना होगा कि जब देश का स्व जाग्रत था तो वह प्रमुख आर्थिक शक्ति था, इसकी सीमाएं सुदूर फैली हुई थीं, कला, धातु विज्ञान, वैमानिकी एवं खगोल शस्त्र अत्यधिक विकसित थे। स्व के ह्रास के साथ ही भारत गरीब हुआ, आकार में सिकुड़ा, विज्ञान-तकनीक एवं व्यापार में पिछड़ा। साथ ही नैतिकता का ह्रास हुआ। यहां यह कहना समीचीन होगा कि किसी भी विधा को हमें देश एवं काल की आवश्यकताओं के अनुरूप बनाना होता है। अतः वस्त्र भले ही हमारे पास हो परंतु उसे नाप के अनुसार काटकर पहनने योग्य बनाना वर्तमान का ही कार्य होता है। अतः हमें अपने प्राचीन ज्ञान को आज समयानुकूल एवं व्यवहरिक बनाकर दुनिया के सामने रखना होगा। स्व की पुनर्स्थापना में मीडिया, शिक्षा, फिल्म एवं साहित्य की भी अहम भूमिका है। आवश्यक है कि फिल्मों में भारतीय संस्कृति एवं जीवन मूल्यों को नई पीढ़ी के सामने रखा जाए। भारतीय सांस्कृतिक एवं पारिवारिक मूल्यों को नष्ट-भ्रष्ट करने एवं इतिहास को गलत संदर्भ में प्रस्तुत करने के षड्यन्त्र बंद हों। हमारी शिक्षा व्यवस्था भारतीय मूल्यों के अनुरूप हो एवं उनकी संवाहक हो। विदेश नीति भारत के स्व को स्थापित करने वाली हो। विदेश नीति में वसुधैव कुटुंबकम् मूल में हो, पर्यावरण में मानव के साथ अन्य जीवों की भी चिंता हो। युवा एवं नई पीढ़ियां देश के स्व को जगाने वाले नायकों से प्रेरणा लें। हमें उस शकुंतला पुत्र भरत को जानना होगा जो बचपन में शेरों से खेला, दुनिया को जीत चक्रवर्ती बना और अपने पुत्रों को अयोग्य देख अपने योग्य शिष्य को राजा चुन कर प्रजातन्त्र का बीजारोपण किया। स्व जागरण के लिए आवश्यक है कि हर भारतवासी यह जानें कि यह देश राम, कृष्ण, मीरा, वाल्मीकि, राणा प्रताप, शिवाजी, दयानंद, सुभाष, बिरसा मुंडा, तुलसी, बप्पा रावल, रानी लक्ष्मीबाई, हरिश्चंद्र, गुरु गोबिंद सिंह जैसे नायकों का है और हम सब उनके जैसी क्षमताओं से युक्त हैं। आशा है कि प्रेरणा विचार का यह अंक पाठकों कि अपेक्षाओं पर खरा उतरेगा। ■

भारत का स्वत्व परमार्थ के लिए

शिवेश प्रताप
तकनीकी-प्रबंध सलाहकार

भारत का महाशक्ति देशों की श्रेणी में स्वीकार्य होना एक सामान्य घटना इसलिए नहीं है क्योंकि भारत जिन मानकों के आधार पर वैश्विक कूटनीति में अपनी पहचान बना रहा है उसके केंद्र में सामरिक और आर्थिक शक्ति का भय न होकर देशों के बीच समानता, बंधुत्व एवं परस्पर कल्याण की भावना निहित है। यानि भारत का स्वत्व परमार्थ के लिए है।

पिछले करीब एक दशक से भारत अपने सनातन शक्ति को पहचान कर निरंतर हर क्षेत्र में अपने आयामों को विस्तार देकर वसुधैव कुटुम्बकम् को चरितार्थ कर रहा है। पिछले कुछ वर्षों से तेजी से बदलते हुए वैश्विक घटनाक्रमों में सुपर पावर के रूप में स्थापित होने के मानकों में भी बड़ा परिवर्तन आया है। भारत का महाशक्ति देशों की श्रेणी में स्वीकार्य होना एक सामान्य घटना इसलिए नहीं है क्योंकि भारत जिन मानकों के आधार पर वैश्विक कूटनीति में अपनी पहचान बना रहा है उसके केंद्र में सामरिक और आर्थिक शक्ति का भय न होकर देशों के बीच समानता, बंधुत्व एवं परस्पर कल्याण की भावना निहित है। यानि भारत का स्वत्व परमार्थ के लिए है।

डिजिटल लोकतंत्र का अगुवा भारत : भारत, पब्लिक डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर यानि सार्वजनिक डिजिटल अवसंरचनाओं के विकास और सहयोग के आधार पर विश्व में पारदर्शी, समावेशी, परस्पर बराबरी को मजबूत करने वाले डिजिटल लोकतंत्र का अगुवा बन रहा है। उसे जी 20 की अध्यक्षता के माध्यम से और बल मिला। भारत ने निर्गुट होकर जिस प्रकार से एक नए तथा सर्वसमावेशी कार्य योजना की आधारशिला रखी है उसने यह सुनिश्चित किया है कि दुनिया के देश आपस में ना आंखें उठाकर बात करें ना आंखें झुका कर बल्कि एक दूसरे से आंखें मिला कर बात करें। बीते दशक में दुनिया के कई देशों की सरकारें निजी कंपनियों से भिड़ंत करती हुई नजर आईं। क्योंकि उन्हें यह स्पष्ट दिख रहा था कि परिवर्तनशील विश्व में शक्ति का जो केंद्र है वह सरकारों से इन बड़ी टेक-महाशक्तियों की तरफ खिसक रहा है एवं कंपनियां अपने लाभ के लिए इस परिवर्तन का भरपूर फायदा उठा रही थीं। बीते हुए वैश्विक परिदृश्य में जैसे संसार सामरिक एवं आर्थिक मोर्चों पर प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय विश्व में बंटा हुआ था उसी प्रकार आज के दौर में संसार इन इंटरनेट सुविधाओं के आधार पर संपन्न एवं विपन्न की श्रेणी में वर्गीकृत दिखाई देता है।

पारदर्शिता से उत्कृष्टता : साइबर आधारित इंफ्रास्ट्रक्चर के अभाव में न केवल आम जनता अपितु बड़े-बड़े देशों के बीच भी एक बड़ा डिजिटल विभाजन स्थापित हो रहा है। यह विभाजन पहले से ही पिछड़े हुए देशों को और अधिक पिछड़ा बनाता जा रहा है। डिजिटल विभाजन की इस वैश्विक समस्या पर दृष्टि तो सबकी थी परंतु इसके समाधान पर विकसित देशों ने अभी कार्य करना प्रारंभ नहीं किया। भारत में इस अत्यंत सामयिक अवसर को भांपकर डिजिटल विभाजन को पाटने का बेड़ा अपने कंधो पर लिया है। मोबाइल बैंकिंग तथा यूपीआई जैसे कुछ नवाचार दुनिया के विकसित देशों में भी निर्मित होना प्रारंभ हो चुके थे परंतु भारत ने इन नए नवाचारी अवसरों एवं बाजार को अपने मानक नियम एवं कानूनों के अंतर्गत समान रूप से प्राइवेट संस्थाओं के लिए भी खोला। जबकि दुनिया के अन्य देश इन नवाचारों पर अपना पूर्ण सरकारी नियंत्रण चाहते थे। भारत ने अपने सार्वजनिक डिजिटल इंफ्रा को ओपन सोर्स पर रखा एवं इनके एपीआई (एप्लीकेशन प्रोग्रामिंग

इंटरफेस) सभी को नए नए नवाचार करने का समान अवसर प्रदान करता था। भारत द्वारा उपलब्ध कराए गए इस नवाचार के समान एवं स्वतंत्र अवसर ने संपूर्ण विश्व के तकनीकी पारिस्थितिकी तंत्र को बदल कर रख दिया है। इस प्रकार से भारत ने किसी एक ही तकनीकी महाशक्ति को और अधिक मजबूत करने की जगह सभी को समान अवसर प्रदान करते हुए उत्कृष्टतम परिणाम दिया।

फिनटेक कूटनीति का विजेता यूपीआई : 2021 में इकोनॉमिस्ट इंटेलिजेंस यूनिट रिपोर्ट के अनुसार यूपीआई ने भारत को आर्थिक तकनीकी यानि फिनटेक क्षेत्र का रोल मॉडल बना दिया है जो अमेरिका, चीन और दक्षिण कोरिया जैसे देशों से बहुत आगे निकल चुका है। दिसंबर 2019 में विश्व में नवाचार का अगुआ मानी जाने वाली कंपनी गूगल ने अमेरिका के फेडरल रिजर्व बोर्ड को एक पत्र लिखकर निवेदन किया कि भारत के यूपीआई से प्रेरणा लेते हुए अमेरिका को जल्द से जल्द एक रियल टाइम भुगतान तंत्र बनाने की आवश्यकता है। आइये समझते हैं कि यूपीआई ने कैसे अपने स्टेट ऑफ द आर्ट रियल टाइम भुगतान तंत्र से चीन के फिनटेक में बादशाहत कायम करने के स्वप्न को चूर कर दिया।

भारत के रिजर्व बैंक ने 2012 में एक पेपरलेस भुगतान तंत्र की स्थापना का विजन स्टेटमेंट जारी किया, जिसमें 6 बिंदुओं सुरक्षा, दक्षता, अभिगम्यता, समावेशन, अंतर्संचालनीयता और प्राधिकारिता को साधते हुए 4 वर्षों में एक डिजिटल पेमेंट व्यवस्था के निर्माण का लक्ष्य रखा गया जो देश के हरित उपक्रम को भी साध सके। 2014 में मोदी सरकार के आते ही मानो इस योजना को पंख लग गए क्योंकि सरकार ने जनधन योजना के तहत खाते खुलवाना एक राष्ट्रव्यापी जन जागरूकता आंदोलन की तरह था। अंततः 2016 में यह परियोजना साकार होकर देश के नागरिकों के प्रयोग में आ गई। यूपीआई को भारत ने हाथों-हाथ लिया और देश विदेश का सबसे बड़ा रियल टाइम भुगतान बाजार बनकर उभरा। अक्टूबर 2023 में यूपीआई द्वारा भुगतान का कीर्तिमान बनाते हुए 110 करोड़ बार भुगतान किया गया।

विश्व के अन्य देश एवं सभी वैश्विक संस्थाएं यह मानती हैं कि जो डिजिटल पारिस्थितिकी तंत्र भारत की जटिल एवं भिन्नता युक्त स्थितियों में भी सफल है वह संसार के द्वारा स्वीकार किए जाने के लिए तैयार है।

यूपीआई की इस अभूतपूर्व और रिकॉर्ड बनाती सफलता के लिए वर्तमान केंद्रीय नेतृत्व की भी प्रसंशा करनी होगी क्योंकि सरकार ने इस प्रोजेक्ट में आने वाली सभी रुकावटों को न केवल तत्परता से हल किया बल्कि इस नवीन सेवा को सभी सेवा क्षेत्रों में सरकार ने अपने डिजिटल मिशन के अंतर्गत प्रमोट भी किया गया। अभी तक जो कार्ड आधारित भुगतान का चलन केवल बड़े शहरों तक सीमित था, सरकार के प्रयासों से यूपीआई आधारित सेवा गांव-गांव के नुक्कड़ों और ठेलों पर भी स्वीकार्य हो चुकी है।

चीन का यूनियनपे : एक तरफ चीन का यूनियनपे है जो दुनिया के देशों द्वारा उसके भुगतान प्रणाली को अपनाने के लिए बहुत प्रयास कर रहा है। वर्तमान में चीन ने रूस पर लगाए गए आर्थिक प्रतिबंधों के बीच अपने भुगतान प्रणाली को रूस द्वारा स्वीकार करने का प्रस्ताव भी दिया है। लेकिन दूसरी ओर दुनिया, भारत के यूपीआई के तेज, सुरक्षित और इंटरऑपरेटीबिलिटी जैसे सुविधाओं के कारण अपनी रुचि स्वतः दिखा रही है। अमेरिका की प्रतिष्ठित कंपनी फिडैलिटी नेशनल ने यूपीआई को नवाचार और ग्राहक सेवा वैल्यू के आधार पर उच्चतम पांच रेटिंग

दिया है जबकि चीन के अंतरराष्ट्रीय भुगतान सेवा को केवल दो। प्रसिद्ध अर्थशास्त्री एवं अर्थतंत्र का सबसे विश्वसनीय चेहरा माने जाने वाले ऑगस्टिन कारस्टेन्स तथा बैंक फॉर इंटरनेशनल सेटलमेंट्स के द्वारा भी यूपीआई की अत्यंत प्रसंशा की जा चुकी है।

भारत की स्वीकार्यता : चीन के ऋण मरीचिका को अब दुनिया के कई देश समझ चुके हैं। साथ ही इसकी विस्तारवादी नीतियां, मानवाधिकार विरोधी कृत्य आदि के पिछले रिकॉर्ड को देखते हुए संसार, भारत के आर्थिक समावेशन को अधिक उपयुक्त और स्वीकार्य मानता है। इस कारण ही सिंगापुर, यूएई, नेपाल, भूटान और म्यांमार के साथ ही फ्रांस ने यूपीआई को स्वीकार करने का निर्णय लेकर विश्व को चौंका दिया है। यूपीआई, वैश्विक बिसात पर अमेरिका और चीन विरोधी देशों के लिए एक आशा के रूप में अग्रसर है।

यूपीआई को निर्मित करने वाली मातृ संस्था भारतीय राष्ट्रीय भुगतान निगम यहीं नहीं रुका, अपितु इस प्रतिस्पर्धा में शीर्ष पर बने रहने के लिए यूपीआई को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ले जाने के क्रम में अंतरराष्ट्रीय भुगतान सेवा प्रदाता कंपनी पीपीआरओ के साथ भारत के डिजिटल पेमेंट इकोसिस्टम को और अधिक मजबूत और प्रतिस्पर्धी बना कर वैश्विक स्तर तक ले जायेगा। यूपीआई भी क्रेडिट कार्ड बाजार में आकर ऐसे नयी संभावनाओं को जन्म दे सकता है जिसे विश्व बिरादरी के अगुआ देश भी नहीं हासिल कर पाए हैं।

10 वर्षों की विकास यात्रा : बैंक फॉर इंटरनेशनल सेटेलमेंट्स की एक रिसर्च के अनुसार डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर के मामले में भारत ने जो विकास बीते 10 वर्षों में दर्ज किया है उसे किसी भी अन्य देश को हासिल करने में 50 वर्ष का समय लगता। एसीआई वर्ल्डवाइड की रिपोर्ट, प्राइम टाइम फॉर रियल टाइम 2022 के अनुसार भारत

का यूपीआई तंत्र अन्य विकसित देशों में प्रयोग किए जाने वाले भुगतान तंत्र से बहुत ही उन्नत किस्म का है।

भारतीय नवाचार : भारत के इस उदीयमान नवाचार एवं तकनीकी विशेषज्ञता का ज्वलंत उदाहरण कोविड-19 के दौरान देखा गया जब दुनिया के 50 से अधिक देशों ने भारत के कोविन प्लेटफार्म में अपनी रुचि दिखाई। इसके बाद भारत में इसे ओपन सोर्स बनाकर सभी देशों के लिए इसे उपलब्ध करा दिया। इसी सिलसिले में जुलाई 2021 में कोविन ग्लोबल कांक्लेव भी ऑर्गेनाइज किया गया जिसमें 140 से अधिक देशों ने भाग लिया।

उपरोक्त सभी विषयों से पूरे विश्व को यह संदेश जा चुका है कि आने वाला समय यदि डिजिटल इंफ्रा क्रांति का है तो निःसन्देह इस क्रांति का सेनानायक भारत ही है। यह इसलिए भी सत्य है क्योंकि भारत के सभी तकनीकी नवाचार एवं डिजिटल विशेषज्ञता को विश्व ने भारत जैसे विभिन्नताओं से भरे हुए समाज की प्रयोगशाला में आरोपित कर उसकी सत्यता, सफलता एवं गुणवत्ता का परीक्षण भी कर लिया गया। विश्व के अन्य देश एवं सभी वैश्विक संस्थाएं यह मानती हैं कि जो डिजिटल पारिस्थितिकी तंत्र भारत की जटिल एवं भिन्नता युक्त स्थितियों में भी सफल है वह संसार के द्वारा स्वीकार किए जाने के लिए तैयार है। दुनिया के 30 देशों के साथ भारत की यूपीआई सेवा को उपलब्ध कराने हेतु वार्ता चल रही है जिसमें संयुक्त अरब अमीरात, नेपाल, ब्रिटेन, मलेशिया एवं सिंगापुर ने इस प्लेटफार्म को पहले ही अंगीकार कर लिया है। जापान एवं चीन से भी इस बारे में बात चल रही है।

इन सभी बातों के आधार पर हम यह कह सकते हैं कि भारत द्वारा हर डिजिटल अवरोधों को समाप्त करते हुए संपूर्ण विश्व को जिस डिजिटल लोकतंत्र एवं तकनीकी समावेशन की ओर ले जाया जा रहा है वह निःसन्देह है, प्रशंसनीय है तथा भारत को एक सुपर पावर की अवधारणा के भीतर स्थापित कर रहा है। संसार में आज 4 बिलियन लोगों के पास अपनी कोई भी डिजिटल पहचान नहीं है। वहीं 1.5 बिलियन लोग बैंकों से नहीं जुड़ सके हैं। वर्तमान में दुनिया के 133 देशों में कोई डिजिटल भुगतान व्यवस्था नहीं है। ऐसे में हम कर सकते हैं कि वह भारत देश ही है जो सभी देशों को एक प्रभावी मार्गदर्शक के रूप में नेतृत्व करते हुए आगे बढ़ा सकता है। ■

मुनीष त्रिपाठी
पत्रकार, इतिहासकार एवं साहित्यकार

प्राचीन कालखंड में स्व

भारत में स्व की भावना ऋग्वैदिक काल में उत्कृष्ट रही है। राजा जन समुदाय का प्रमुख होता था। क्योंकि वह सभा, समिति और विदथ जैसी संस्थाओं के भद्रजनों की सहायता से ही निर्णय लेता था। इस तरह ऋग्वैदिक काल में सत्ता में जनभागीदारी स्वराज की भावना को प्रकट करती थी।

मौजूदा समय में भारत के विद्वतजनों के बीच "स्व" के विषय पर विमर्श शुरू हो चुका है। स्व की मांग भारत भूमि में ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण जगत में आदिकाल से चली आ रही है। यद्यपि भारत में तो यह ऋग्वैदिक काल में उत्कृष्ट रही है। राजा जन समुदाय का प्रमुख होता था इसके बावजूद वह निरंकुश नहीं हो सकता था। क्योंकि वह सभा, समिति और विदथ जैसी संस्थाओं के भद्रजनों की सहायता से ही निर्णय लेता था। इस तरह राजा पर सीधे जनमानस का ही प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष अंकुश होता था। ऋग्वैदिक काल में सत्ता में जनभागीदारी स्वराज की भावना को प्रकट करती थी। हालांकि बाद में उत्तरोत्तर स्वराज की भावना का ह्रास हुआ। स्त्रियों के भी अधिकारों में कटौती हुई। अपाला, विश्ववारा, घोषा, लोपामुद्रा जैसी विदुषी महिलाएं जो मन्त्रद्रष्टा ही नहीं थी बल्कि शासन चलाने में राजा को सलाह देती थीं।

उत्तर वैदिक काल में उनसे राजा ने सलाह लेना बंद कर दिया बल्कि उनके सलाहकार परिषद में शामिल होने पर पाबंदी लगा दी गई। कुछ देशों जैसे मिस्र, मेसोपोटामिया आदि देशों को छोड़ दें तो तब विश्व के अधिकांश भूमण्डल पर लोग इस तरह के समाज की कल्पना भी नहीं कर सकते थे। इसके पहले हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, सभ्यता में स्वप्रेरित अनुशासन मौजूद था। ऐसा समाज जहां हिंसा नाममात्र की ही थी। क्योंकि इतने बड़े साम्राज्य की खुदाई में कहीं व्यापक पैमाने पर हथियारों का न मिलना तो यही साबित करता है। ज्यादा जन समुदाय की भागीदारी शासन में स्वराज की भावना को प्रकट करती है। इसका अर्थ यह बिल्कुल भी नहीं था कि तत्कालीन समाज में प्रशासनिक ढांचा मौजूद नहीं था। प्रशासनिक ढांचा मौजूद था परन्तु सत्ता विकेन्द्रित थी। जन समुदाय की भागीदारी व्यापक थी। लगभग ढाई हजार साल पूर्व बौद्ध काल में भारत में लिच्छवि, मल्ल आदि कई गणराज्यों में सत्ता का संचालन राजा नहीं करता था बल्कि सत्ता का संचालन हजारों सदस्यों वाली योग्य परिषद करती थी जो कि सत्ता के विकेंद्रीकरण और स्वराज से ही प्रेरित थी।

परिषद के बहुमत से ही गणराज्य का प्रमुख निर्णयों को संचालित करता था। भारत में सबसे अधिक स्वायत्तता दक्षिण भारत के चोल साम्राज्य में गांवों को थी, जहां गांव की वारियम नाम की संस्था योग्य लोगों की सदस्यों के द्वारा गांव का प्रशासन संचालित करती थी। इन सदस्यों का चुनाव भी बड़ी सावधानी से किया जाता था। समिति के सदस्यों की उम्र 35 से 70 के बीच होनी चाहिए एवं सदस्य के पास कुछ एकड़ भूमि भी होनी चाहिए। इसके अतिरिक्त सदस्य कम से कम चार में से एक वेद का ज्ञाता होना चाहिए। गांव के मंदिरों में गुरुकुल का भी संचालन भी बड़ी कुशलता

पूर्वक होता था जहां अच्छी वैदिक और भौतिक शिक्षा विद्यार्थियों को प्रदान की जाती थी। इतना सब होने के बावजूद चोल साम्राज्य का गांवों में न्यूनतम हस्तक्षेप होता था। स्वराज की परिकल्पना में आर्थिक, सामाजिक विकेंद्रीकरण, राजनैतिक स्वतंत्रता और समुचित न्याय की व्यवस्था निहित है। रामराज्य की परिकल्पना भी स्वराज के अत्यंत निकट है इसीलिए महात्मा गांधी ने स्वराज को रामराज्य से जोड़ा था। कांग्रेस ने 1906 में कोलकाता अधिवेशन मे अध्यक्ष के रूप में दादा भाई नौरोजी ने सबसे पहले ब्रिटिश हुकूमत से स्वराज की मांग की थी। बाद में तिलक ने भी हुंकार भरी स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है। एनी बेसेंट ने भी होमरूल लीग आंदोलन के माध्यम से स्वराज की वकालत की। उस स्वराज का मतलब तब राजनीतिक स्वतंत्रता न होकर प्रशासन में भारतीयों की अधिक से अधिक भागीदारी की मांग थी।

आजादी के बाद भारतीय व्यवस्था में भी पंचायती राज के माध्यम से स्वराज को प्राप्त करने की कोशिश की गई। परन्तु पंचायती राज में यह व्यवस्था अपने उद्देश्यों को प्राप्त नहीं कर सकी है। इसका कारण भ्रष्टाचार से लेकर संवेदनहीनता, जनता की न के बराबर भागीदारी और पंचायत प्रमुखों की जवाबदेही सुनिश्चित न होना है। पूंजीवाद और मिश्रित अर्थव्यवस्था में विकास तो होता है परंतु सर्वांगीण न होकर एकांगी होता है। विकास कुछ समाज तक ही सीमित रहता है जिसे स्वराज नहीं कहा जा सकता है। कम्युनिस्ट व्यवस्था में हिंसा और वर्गसंघर्ष से स्वराज प्राप्त करने की कोशिश की गई है। परन्तु दुनिया के तमाम देश इस बात के गवाह हैं यह प्रयोग करोड़ों लोगों की जान लेने के बावजूद असफल साबित हुआ। इस तरह की शासन प्रणाली में मनुष्य की स्वतंत्रता बहुत बाधित हो जाती है जो मानवीय स्वभाव और प्रकृति के

अनुरूप नहीं है। अब इसका समाधान क्या है? समाधान धर्म प्रेरित राज्यसत्ता हो सकती है। जिसे मानवीय सत्ता भी कहा जा सकता है। उपरोक्त कालखंड के उदाहरणों से जानकारी हमें मिलती है कि भारतीय जनमानस में यह चिंतन प्राचीन काल से चलता आ रहा है। आजादी के पहले महात्मा गांधी ने ट्रस्टीशिप सिद्धांत के माध्यम से

वंचित समाज के उत्थान के लिए चिंतन आजादी के बाद दीनदयाल उपाध्याय ने एकात्म मानववाद के माध्यम से किया। उन्होंने भी ऐसे समाज की परिकल्पना की जिसमें सशक्त समाज दुर्बल समाज का शोषण न कर पोषण करे। परन्तु यह जोर जबरदस्ती से नहीं बल्कि स्वप्रेरित, स्वबोध और कर्तव्यबोध से होना चाहिए।

इसको बताने की कोशिश की। जिसमें उन्होंने बताया कि सभी व्यक्ति पूंजी को इस भाव से इकट्ठा करें कि वह मालिक न होकर ट्रस्टी है, उसका प्रयोग अपने लिए और वंचित समाज के लिये करेगा। ऐसा ही कुछ चिंतन आजादी के बाद दीनदयाल उपाध्याय ने एकात्म मानववाद के माध्यम से किया। उन्होंने भी ऐसे समाज की परिकल्पना की जिसमें सशक्त समाज निर्बल समाज का शोषण न कर पोषण करे। परन्तु यह जोर जबरदस्ती से नहीं बल्कि स्वप्रेरित, स्वबोध, और कर्तव्यबोध से होना चाहिए। यह कैसे हो क्योंकि मानवीय प्रवृत्ति तीन गुणों सत, रज, तम का मिश्रण है। सिद्धांत ठीक है, परिकल्पना भी ठीक है परन्तु शासन और समाज के लिये इस विचारधारा का एक्शन प्लान का निर्माण अब तक नहीं हो सका है। कुछ प्रयास नानाजी देशमुख ने चित्रकूट में किया है, कुछ गैर सरकारी संगठन भी आदिवासियों और वंचितों के बीच कर रहे हैं जो बहुत ही सीमित है।

महात्मा गांधी भारत की राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्ति में लगे रहे। शायद इसी कारण से वह एक्शन प्लान तैयार नहीं कर सके और दीनदयाल उपाध्याय का असमायिक निधन हो जाने से भी वह भी इसका एक्शन प्लान तैयार नहीं कर सके। यह कैसे हो जिससे मानव जीवन सुखी, समृद्धशाली हो? इस पर गहन शोध की आवश्यकता है। शोध का स्वरूप भी सामूहिक और व्यापक हो। आधुनिक ज्ञान सम्पन्न और प्राचीन ज्ञान सम्पन्न लोग इस शोध में जुड़ें तो सफलता मिल सकती है। समय भले ही शोध में लग जाये परन्तु ऐसे एक्शन प्लान के निर्माण की पूर्ण संभावना है जिसकी कल्पना गांधी और दीनदयाल जी ने की थी जिसका चिंतन मौजूदा समय में आज भी लोग कर रहे हैं और आशाभरी टकटकी निगाहों से प्रतीक्षा कर रहे हैं। ■

स्व की रक्षा में कुटुंब का योगदान

राम जी तिवारी

एक व्यक्ति को संस्कारित और मूल्यवान बनाने की सामाजिक संस्था के रूप में कुटुंब की सार्वभौमिकता निर्विवाद है। कुटुंब वो पाठशाला है, जहां से एक नीतिवान, ईमानदार और चरित्रवान व्यक्ति, समाज और सशक्त राष्ट्र का निर्माण होता है।

दृश्यमान जगत में मनुष्य व राष्ट्र का सर्वांगीण विकास स्व को केंद्र में रखकर ही संभव है। चूंकि स्व संगठित इकाई होते हुए भी एक प्रक्रिया है। भारत में 'स्व' की अवधारणा का संबंध सामाजिक सांस्कृतिक संदर्भ में रहा है। इसके दिग्दर्शन वैदिक कालीन ऋचाओं, संहिताओं, सूत्रों, पुराणों और महाकाव्यों के पात्रों में होते हैं। यह सर्वविदित है कि किसी राष्ट्र के निर्माण में कुटुंब/पारिवार का सर्वाधिक योगदान होता है। क्योंकि व्यक्ति से परिवार, परिवार से समाज और समाज से राष्ट्र का निर्माण होता है। यानि परिवार समाज की मूल इकाई है। परिवार ही वह संस्था है जहां से व्यक्ति को अदृश्य रूप में मूल्य और संस्कार मिलते हैं। ये मूल्य एक आदर्श या मानक की तरह होते हैं जो किसी व्यक्ति, समाज या संगठन के लिए ताउम्र एक दिशा-निर्देश के रूप में कार्य करते हैं। इस तरह मूल्यों (न्यायप्रियता, सामाजिक-रीति रिवाज, परंपरा, धर्म, सहिष्णुता, ईमानदारी, एकता, समयबद्धता, अनुशासन, बड़ों का सम्मान करना) के निर्माण में परिवार पहली सीढ़ी होती है, जिसके जरिए एक व्यक्ति सशक्त राष्ट्र का मजबूत हस्ताक्षर बनता है। यानी कुटुंब एक ऐसी संस्था है जिसकी जिम्मेदारी बहुआयामी है। कुटुंब एक संस्था के रूप में व्यक्ति के पालन पोषण और उसके समाजीकरण का केंद्र भी है।

कुटुंब के व्यापक योगदान के चलते ही अनादि काल से ही भारत में संयुक्त परिवार की व्यवस्था रही है। सामान्य रूप से संयुक्त परिवार भारत की सनातन संस्कृति का लक्षण रहा है। चूंकि संयुक्त परिवार में तीन-चार पीढ़ी के सदस्य एक साथ रहते हैं। उनके द्वारा सैकड़ों वर्षों की परंपरा और संस्कृति का आदान-प्रदान होने पर वह जीवित रहती है। इस तरह संयुक्त परिवार राष्ट्र को सांस्कृतिक व सामाजिक दृष्टि से सबल बनाने में महत्वपूर्ण और अद्वितीय योगदान देते हैं। संयुक्त परिवार के व्यापक उदाहरण ऋगवेद में, स्मृतियों में विशेषकर जातकों में पारिवारिक जीवन का बड़ा विशद एवं सुंदर चित्र मिलता है।

ऋग्वैदिक काल में कुटुंब का व्यापक महत्व दृष्टिगोचर होता है। तत्कालीन समाज समतामूलक था। क्योंकि ऋग्वैदिक काल में सामाजिक व्यवस्था सहयोग एवं सहभागिता पर आधारित थी। इस समय समाज में स्त्री-पुरुष विभेद नहीं था, पुत्रियों को पुत्रों के समान माना जाता था तथा उनकी शिक्षा एवं अधिकार में भी समानता थी। क्योंकि ऋग्वैदिक समाज का आधार परिवार था। जिसमें परिवार का मुखिया घर का स्वामी होता था। ऋग्वैदिक समाज प्रारंभ में वर्ग विभेद से रहित था। सभी लोगों की समान सामाजिक प्रतिष्ठा थी। इस तरह समाज में समरसता थी। कालांतर में संकीर्णता के चलते जब परिवार रूपी संस्था कमजोर हुई तो समाज में हर स्तर पर भेदभाव जैसी विकृतियां राष्ट्र के लिए घातक सिद्ध हुईं। ऋग्वैदिक काल में प्रशासन की सबसे छोटी इकाई कुल थी। यह कुल एक तरह से बड़े परिवार का ही स्वरूप था। जिसमें परिवार के मुखिया को कुलुप कहा जाता था। कई कुलों से मिलकर एक ग्राम बनता था। ग्रामों का संगठन विश् नाम से जाना जाता था और विशों के संगठन जन कहा जाता था। कई जन मिलने से एक राष्ट्र का निर्माण होता था। यानि कुटुंब से नीतिवान, व्यावहारिक शास्त्र में निपुण और मूल्य धारित व्यक्ति बड़ा

होकर सनातन संस्कृति का आधार स्तंभ होता था।

धीरे-धीरे गुजरते समय के साथ औद्योगिकीकरण, शहरीकरण, आधुनिकीकरण, उदारीकरण का एक लंबा दौर चला। अब तो उपभोक्तावादी प्रवृति का चरम दौर चल रहा है। जिसमें अत्यधिक सर्क्रेंदित जीवनशैली और संग्रहण की प्रवृति ने मूल्यों, विश्वासों और प्रथाओं को बड़े स्तर पर प्रभावित किया है। इससे कुटुंब रूपी संस्था के संगठन, संरचना में वृहद परिवर्तन हुआ है। परिणामस्वरूप व्यक्तिगत विकास की महत्वाकांक्षा के चलते परिवार की एकता व स्थिरता पर ग्रहण लग गया। चूंकि बदलती हुई आवश्यकता से आज जीविकोपार्जन का मुख्य जरिया कृषि न होकर द्वितीयक क्षेत्र (विनिर्माण) तृतीयक क्षेत्र (व्यापार, परिवहन, संचार, बैंकिंग, आदि) हो गया है। जिससे लोगों में गांव की मनोहारी जीवनशैली को छोड़कर शहरी केंद्रों की ओर बड़ी संख्या में देशान्तरण हुआ। और देखते ही देखते संयुक्त परिवार, नाभिकीय परिवार में बदल गया।

चूंकि जब परिवार संयुक्त होता था तो परिवार के प्रत्येक सदस्य के सुख-दुख और आवश्यकता का विनियोग होता था। लेकिन अब नाभिकीय परिवार की प्रवृति ने पारिवारिक और सामाजिक उत्तरदायित्वों एवं जिम्मेदारियों को तिरोहित कर दिया है। इससे

गुजरते समय के साथ औद्योगिकीकरण, शहरीकरण, आधुनिकीकरण, उदारीकरण का एक लंबा दौर चला। अब तो उपभोक्तावादी प्रवृति का चरम दौर चल रहा है। जिसमें अत्यधिक संक्रेंदित जीवनशैली और संग्रहण की प्रवृति ने मूल्यों, विश्वासों और प्रथाओं को बड़े स्तर पर प्रभावित किया है। इससे कुटुंब रूपी संस्था के संगठन, संरचना में वृहद परिवर्तन हुआ है। परिणामस्वरूप व्यक्तिगत विकास की महत्वाकांक्षा के चलते परिवार की एकता व स्थिरता पर पर ग्रहण लग गया।

धन का संग्रहण तो खूब हुआ लेकिन असंतोष के तांडव से व्यक्ति आजीवन घुटन में जीता है। याद रखिए जो सुख सहभागिता और मिल बांटकर जीवन जीने में है वह संकेंद्रित जीवनशैली में दूर-दूर तक नहीं है। आज समाज में गांव से लेकर जिले तक, छोटे शहर से लेकर महानगर तक ऐसे लाखों उदाहरण देखने को मिलेंगे जहां, पिता को अभावग्रस्त स्थितियों में छोड़कर बेटा एक नये घर में स्वार्थ केंद्रित आत्ममुग्धता का जीवन जी रहा है। इसी तरह एक भाई कई फैक्ट्रियों का मालिक है तो वहीं दूसरा, एक वक्त की रोटी के लिए कष्टप्रद जीवन जीने को मजबूर है। सीमित समय के जीवन में यदि यही सुख का मानदंड है तो निश्चित ही व्यक्ति, परिवार और समाज को इस पर गहन विमर्श करना होगा।

पहले ही काफी देर हो चुकी है। ऐसे में अब बिना समय बर्बाद किये समाज और राष्ट्र हित में कुटुंब रूपी संस्था को मजबूत करना होगा। जब कुटुंब अपनी वास्तविक भूमिका का निर्वहन करने लगेगा तो संस्कारयुक्त और मूल्यवान नागरिक का निर्माण होगा। इससे समाज में उत्तरदायित्व और कर्तव्य बोध की भावना की पैठ गहरी होगी, तब संस्कृतनिष्ठ, सर्वकल्याकारी और सशक्त भारत एक बार फिर से विश्व गुरु की भूमिका में वसुधैव कुटुम्बकम् के ध्येय से समूचा विश्व लाभान्वित होगा। जिसकी झलक जी 20 में दिखी भी। चूंकि भारत प्रगति पथ पर तीव्र गति से गतिशील है। ऐसे में आत्मनिर्भर भारत के लिए सनातन संस्कृति में निहित स्व को पहचानना होगा। इस स्वत्व को जगाने और बढ़ाने में कुटुंब बेजोड़ है। चूंकि जब कुटुंब मजबूत होगा तो प्रयास समन्वित और सहभागिता से युक्त होगा। हर नागरिक ईमानदार, कर्वत्यपरायण और अनुशासित होगा। यह सब संभव होगा कुटुंब से। ■

भारतीय ज्ञान परंपरा में संचार सिद्धांत

डॉ. रामशंकर
प्रधान संपादक, द एशियन थिंकर

वर्तमान संचार एवं चकाचौंध युक्त माध्यम के परिदृश्य में भारतीय संचार सिद्धांतकारों एवं दर्शनशास्त्रियों की चर्चा न के बराबर ही होती है। शायद यह वैचारिक षड्यंत्र भी है कि आने वाली पीढ़ी को अपने स्वर्णिम अतीत से दिग्भ्रमित भी रख सकें। लेकिन भारतीय अतीत को मुखरित पटल पर लाने का प्रयास भी जोरों से किया जा रहा है। संचार के बहुतेरे सिद्धांत भारतीय ज्ञान परंपरा एवं मनीषा में असंगठित रूप से उपलब्ध हैं, यथा भरतमुनि का नाट्यशास्त्र, यम नचिकेता संवाद, विदुर नीति, नारद भक्ति सूत्र, तुलसीदास रचित श्रीरामचरितमानस में संचार के सूत्र समेत बहुत से अन्यान्य ग्रंथ एवं रचनाएं हैं।

मानव ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ रचना एवं अभिव्यक्ति है। भारत के मनीषियों द्वारा उद्धृत शास्त्र सम्मत संचार दृष्टि विशाल, विराट एवं सम्यक है। भारतीय ज्ञान विरासत में कभी भी शास्त्रों का विखंडों में चिंतन एवं ज्ञान विस्तार नहीं किया गया। सभी शास्त्रों को सम्यक दृष्टि से अध्ययन किया जाता रहा है। भारत के ग्रन्थों में निहित ईश्वरत्व का समावेशी अध्ययन एवं सर्वकल्याण के भाव ने ही भारतीय दृष्टि को दुनिया में श्रेष्ठ बनाया है। संचार को सफल

भारतीय ज्ञान परंपरा में संचार के सिद्धांतों का उदाहरण हमारे धर्म ग्रंथों में आदिकाल से उपलब्ध है। इसमें ऋग्वैदिक काल से लेकर मध्यकाल तक के अनेक शास्त्र जैसे भरतमुनि का नाट्यशास्त्र, यम नचिकेता संवाद, विदुर नीति, नारद भक्ति सूत्र, तुलसीदास रचित श्रीरामचरितमानस आदि शामिल हैं।

बनाने के लिए विश्व में कई सिद्धांतों का प्रतिपादन किया गया है। भारत के लोगों की संचार की अपनी शैली है। संचार का स्वरूप भी संस्कृति एवं भौगोलिक परम्पराओं पर निर्भर करता है ऐसे में हमें भारतीय संचार प्रतिरूपों का उपयोग करना आवश्यक हो जाता है। सामाजिक संवाद की भारतीय दृष्टि पर चिंतन हेतु तुलसीकृत रामचरितमानस में संचार के प्रतिरूपों का अध्ययन किया जाना आवश्यक है।

संचार संबंधी भारतीय सिद्धांत एवं प्रतिरूपों का अध्ययन काफी रुचिकर एवं मनोहारी है। आधुनिक संकल्पना में संचार एवं संवाद को काफी महत्व दिया जाता है। भारतीय शास्त्र सम्मत ग्रंथों में संचार की बात समय-समय उठती रहती है। भारतीय ज्ञान शास्त्र भी भारतीय संचार चेतना और संवाद स्मृति के प्रतिरूपों में गहरा संबंध रखते हैं। भारत ज्ञान परंपरा में संचार की अवधारणाओं एवं सिद्धांतों के कई ऐसे अनछुए पहलू समाहित हैं, जो मानव समाज की संचार दृष्टि की आंतरिक संकल्पना को सूक्ष्म एवं भावपूर्वक विश्लेषित करती है। तुलसीकृत रामचरितमानस में रीति, नीति, युद्धशास्त्र, सामाजिकता, समरसता, राज्य प्रबंधन के तात्विक अवधारणाओं का बखूबी वर्णन है।

भारतीय अध्ययन दृष्टि से यह ग्रंथ अध्ययन कई खंडों पर समेकित है। श्रीरामचरितमानस के उत्तरकांड में राम-भरत संवाद में लोक व्यवस्था, सैन्य तथा न्यायकर्म को समझा जा सकता है। मानस में संचार सिद्धान्तों के सह संबंधों को सीता के परित्याग प्रसंग को पढ़कर कर सकते हैं। परित्याग की इस परिघटना प्रसंग में संचार के कनवर्जेंस प्रतिरूप सिद्धांत के रूप में समझ सकते हैं जहां मानस के दोनों पात्रों की वास्तविकता एवं यथार्थ भौतिकता अलग-अलग होती है।

प्रजा के एक व्यक्ति द्वारा सीता पर प्रश्न चिन्ह लगाना और उनका राम अयोध्या से परित्याग पर कनर्वजेंस सिद्धांत सक्रियता से काम करता दिखाई देता है। सीता का लंका में रहने से संदेह की समझ बनती है। प्रकरण की भिन्न-भिन्न प्रकार की व्याख्याएं बनती हैं। आम लोग भी संदेह को सत्य मानने लगते हैं और संदेह सत्य में बदल जाता है। यही कनकेड का कनर्वजेंस सिद्धांत है जहां एक सूचना संदेह के आधार पर सत्य मान ली जाती है और लोगों की समझ बदल जाती है।

सामूहिकता की अधिकता के निर्णय के आधार पर राजा राम को सीता का परित्याग करना पड़ता है। यहां पर राजा राम के इस फैसले पर विरोध नहीं होता क्योंकि यह सत्य के रूप में स्थापित हो गया था। प्रजा के बीच सामूहिक निर्णय के बाद इस पर एक आपसी समझौता बन जाता है और प्रजा सहज स्वीकार कर लेती है। यहां दो पात्रों के वार्तालाप से मनोवैज्ञानिक वास्ताविकता भौतिक यथार्थ में बदल जाती है और रैखिकीय ढंग से होता है और लोग यानि प्रजा सामाजिक वास्तविकता को स्वीकार कर लेती है। अशाब्दिक संचार का भाव-भंगिमावाला मॉडल लागू होता है। अशाब्दिक संचार को हम अयोध्याकाण्ड की इन चौपाइयों से समझ सकते हैं।

कोटि मनोज लजावनिहारे।
सुमुखि कहहु को आहिं तुम्हारे।।
सुनि सनेहमय मंजुल बानी।
सकुची सिय मन महुँ मुसुकानी।।
तिन्हहि बिलोकि बिलोकति धरनी।
दुहुँ सकोच सकुचित बरबरनी।।
सकुचि सप्रेम बाल मृग नयनी।
बोली मधुर बचन पिकबयनी।।
सहज सुभाय सुभग तन गोरे।
नामु लखनु लघु देवर मोरे।।
बहुरि बदनु बिधु अंचल ढाँकी।
पिय तन चितइ भौंह करि बाँकी।।

राम, सीता और लक्ष्मण वनगमन के लिए निकलते हैं तो, रास्ते में विश्राम के समय ग्रामवासी सीता से पूछते हैं, करोड़ों कामदेवताओं की शोभा को लज्जित करने वाले, ये सुन्दर मुख वाले तुम्हारे क्या लगते हैं। उनके ये स्नेहमय वचन सुनकर सीता मन ही मन मुस्काती हैं। संकोचवश उनकी नजरे झुक जाती हैं। लज्जा के साथ ठीक वैसा ही प्रेम स्पंदित होता है, जैसा मृग के छौनों के नयनों में होता है। कोयल की तरह मधुर वाणी में वो कहती हैं। वो जो सहज हैं, सुन्दर हैं और मन के भाने वाले गौरवर्ण के हैं, उनका नाम लखन है, वो मेरे छोटे देवर हैं। तत्पश्चात वो बाद अपने चन्द्रमुख आँखों से ढक लिया और भौहें टेढ़ी करके ग्रामवधुओं को ये बता दिया कि, वो ही (राम) मेरे प्रियतम हैं। खंजन पंछी की तरह

श्रीरामचरितमानस में कई ऐसी बातें हैं जो संचार के माध्यमों जैसे प्रिंट या इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का मार्ग प्रशस्त कर सकती हैं, जिससे संपूर्ण मानव समाज संचार के उद्देश्यों को प्राप्त कर सके।

नयन तिरछे करके सीता ने इशारा करके महिलाओं को राम के बारे में बता दिया। ये देखकर ग्रामवधुवें बहुत प्रसन्न हुईं, मानों कि रंकों को खजाना प्राप्त हो गया हो। अब इस प्रसंग में अशाब्दिक संचार के भाव-भंगिमा वाला सिद्धांत परिलक्षित होता है। यहां शारीरिक मुद्रायें जैसे लज्जा के वशीभूत होकर एकटक धरती को देखना, मुखमण्डल पर मुस्कराहट तथा नजरें झुकाना तथा इशारों से राम को अपना पति बताना, अशाब्दिक संचार सिद्धांत को व्याख्यायित करता है।

अशाब्दिक संचार को पाश्चात्य ज्ञान परंपरा में वर्ष 1952 में मानवविज्ञानी रे बर्डविशेल की व्याख्या माना जाता है लेकिन इसे रामचरितमानस में बखूबी देखा जा सकता है। इसी प्रकार रामचरितमानस के बालकांड के प्रसंग जनकपुर में स्वयंवर के दौरान राम द्वारा शिव-धनुष भंजन के समय लक्ष्मण और परशुराम के बीच संवाद को देखा जा सकता है। इन चौपाइयों में देखते हैं-

लखन कहा हँसि हमरे जाना।
सुनहु देव सब धनुष समाना।।
का छति लाभु जून धनु तोरें।
देखा राम नयन के भोरें।।
छुअत टूट रघुपतिहु न दोसू।
मुनि बिनु काज करिअ कत रोसू।।
बोले चितइ परसु की ओरा।
रे सठ सुनेहि सुभाउ न मोरा।।

चौपाइयों की इन श्रृंखलाओं में देखा जा सकता है कि, यहाँ पर ऑसवुड और विल्बर श्रेम का वर्ष 1954 जनसंचार मॉडल एवं सिद्धांत सहज ही दिखाई देता है। इस प्रसंग में संचारिक तात्विकता के वे सभी अंश निहित है, जो इस प्रतिरूप के क्रियान्वयन के लिए आवश्यक है। यह एक रेखीय संचार सिद्धांत को दिखाता है। एक तरफ लक्ष्मण और दूसरी तरफ परशुराम हैं। दोनों ही संवादों के माध्यम से तेजी से संदेशों का आदान-प्रदान कर रहे हैं। एक पात्र संदेश में कूटबद्ध करता है दूसरा उस संदेश को कूट संकेतन करके अर्थ समझकर, एक नया संदेश का कूटीकरण करता है और दूसरे पात्र के पास भेजता है। यह प्रक्रिया चलती रहती है। प्रश्न जो प्रत्येक भारतीय के मन में उठता है कि क्या भारतीय संस्कृति में जो मूल्य और नियम हैं, उन्हें अपना कर संपूर्ण मानवता के लिए कुछ किया जा सकता है? क्या भारतीय संस्कृति अत्यंत समृद्ध है? भारतीय परम्परा में सत्य का प्रसार ही संचार का मुख्य लक्ष्य रहा है।

श्रीरामचरितमानस में कई ऐसी बातें हैं जो संचार के माध्यमों जैसे प्रिंट या इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का मार्ग प्रशस्त कर सकती हैं, जिससे संपूर्ण मानव समाज संचार के उद्देश्यों को प्राप्त कर सके।

तुलसीकृत श्रीरामचरितमानस में राम का वर्णन मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में किया गया है। राम को मानव रूप में चरितार्थ किया गया है। राम का चरित्र मानव और संपूर्ण मानवता के परिपेक्ष्य में एक मौलिक आयाम है। राम के चरित्र की प्रमुखताओं को ही मानव संचार का आधार माना गया है। ■

आत्मबोध और महिलाएं

डॉ. पूनम कुमारी
असिस्टेंट प्रोफेसर, आईएमएस गाजियाबाद

आत्मबोध आत्मचिंतन से ही संभव है। जब व्यक्ति स्वयं के बारे में आत्मचिंतन करता है तो वह स्वयं को भलीभांति पहचानता है। उसे अपने अंदर की कमजोरी और मजबूती का बखूबी अहसास होता है। आज भारत की महिलाएं पहले से कहीं ज्यादा अच्छी स्थिति में हैं। पुरुष प्रधान समाज में महिलाओं को अपनी जगह बनाने में कई दशक लग गए और महिलाओं ने अपने बल पर क्रांतिकारी परिवर्तन लाया है। वर्तमान में देश की राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू उन सभी महिलाओं के लिए प्रेरणा का स्त्रोत हैं जो देश और राष्ट्र के लिए कुछ करना चाहती हैं।

जब इंसान को आत्मबोध होता है तो उसे अपने लक्ष्य तक पहुंचने से कोई नहीं रोक सकता है। जिसका जीता जागता उदाहरण जम्मू-कश्मीर के किश्तवाड़ के लोइधर गांव में रहने वाली बिना हाथ की तीरंदाज शीतल देवी जैसी महिला हैं। जिसने हांग्जो के एशियाई पैरा खेलों में दो पदक जीते। इतना ही नहीं प्रांजल पाटिल, भारतीय प्रशासनिक सेवा में चयनित होने वालीं भारत की पहली दृष्टिबाधित महिला जिसने अपने कमजोरियों को नहीं बल्कि अपने अंदर की ताकत को पहचाना। ऐसे तमाम उदाहरणों से स्पष्ट है कि फर्श से अर्श तक का सफर केवल आत्मबोध से ही संभव है।

आत्मबोध से तात्पर्य खुद को पहचानने से है। यह शब्द विभिन्न धार्मिक और दार्शनिक परंपराओं में भी प्रयुक्त होता है, जैसे कि हिन्दू धर्म और बौद्ध धर्म, जहां आत्मबोध स्व के असली रूप की सही पहचान को संकेत करता है और व्यक्ति को सच्चे स्वरूप में जीने के लिए प्रेरित करता है। आत्मबोध आत्मचिंतन से ही संभव है। जब व्यक्ति स्वयं के बारे में आत्मचिंतन करता है तो वह स्वयं को भलीभांति पहचानता है।

उसे अपने अंदर की कमजोरी और मजबूती का बखूबी अहसास होता है। आज भारत की महिलाएं पहले से कहीं ज्यादा अच्छी स्थिति में हैं पर यह स्थिति महिलाओं की हमेशा से नहीं थी। इस पुरुष प्रधान समाज मे महिलाओं को अपनी जगह बनाने में कई दशक लग गए। समूचे विश्व में महिलाओं के साथ उत्पीड़न, अत्याचार, भ्रूण हत्या आदि का इतिहास रहा है। लेकिन महिलाओं ने अपने बल पर क्रांतिकारी परिवर्तन लाया है और देश और समाज के सामने पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलने की काबिलियत भी दिखा दी। वर्तमान में देश की राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू उन सभी महिलाओं के लिए प्रेरणा का स्त्रोत हैं जो देश और राष्ट्र के लिए कुछ करना चाहती हैं। आज कई शीर्ष पदों पर महिलाएं विध्यमान हैं और भलीभांति अपने कर्तव्यों का निर्वहन कर रही हैं। यह महिलाओं के हर क्षेत्र में कुशल नेतृत्व को दर्शाता है कि जीवन में जिन महिलाओं ने अपने बल पर अपनी पहचान बनाई है वह साक्षात दुर्गा स्वरूपा से कम सशक्त और शक्तिशाली नहीं हैं।

आत्मबोध अक्सर सामाजिक जिम्मेदारी की भावना की ओर जाता है, जो आगे चलकर समाज मे बदलाव लाने में मददगार साबित होता है। जब महिलाएं अपने मानवाधिकार, स्वतंत्रता, और समानता को समझती हैं तो वे समाज में अधिक सक्रिय भूमिका निभाती हैं। आज राजनीति और खेल के क्षेत्र में ही नहीं

बिजनस और एंटरटेनमेंट की दुनिया में भी महिलाएं अपने आत्मविश्वास के बल पर जगह बना रही हैं। मशहूर टीवी एक्ट्रेस गुल पनाग जिन्होंने न केवल अभिनय से लोगों का दिल जीता बल्कि एक ट्रेंड पाइलेट भी हैं। स्मृति ईरानी जिसने अभिनय की दुनिया से लेकर राजनीति तक का सफर बखूबी तय किया और आज कई महिलाओं की प्रेरणास्त्रोत हैं। हमारे देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी महिलाओं के सम्मान और उनके उत्थान को लेकर प्रतिबद्ध हैं। यदि आधी आबादी का प्रतिनिधित्व करने वाली हर महिला अपने आप को सशक्त और सक्षम बनाने की ठान ले तो वह दिन दूर नहीं जब देश विकसित देशों की श्रेणी में शामिल होगा, लेकिन इसके लिए आत्मबोध बेहद जरूरी है। खुद को समझने से महिलाओं को सामाजिक रूढ़ियों और अपेक्षाओं को चुनौती देने में मदद मिलती है। आत्मबोध उन्हें अपनी पहचान को परिभाषित करने और सीमित मानदंडों से मुक्त होने की अनुमति देता है जो उनके सशक्तिकरण में बाधा डालते हैं।

भारत ने सफल और प्रभावशाली व्यवसायी महिलाओं की संख्या में निरंतर उल्लेखनीय वृद्धि देखी है, जिन्होंने विभिन्न उद्योगों में पर्याप्त योगदान दिया है। इन महिलाओं ने बाधाओं को तोड़ा है, चुनौतियों को दूर किया है, और भारत में व्यापार परिदृश्य को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। चंदा कोचर भारत के सबसे बड़े निजी क्षेत्र के बैंकों में से एक आईसीआईसीआई बैंक की पूर्व प्रबंध निदेशक और सीईओ हैं। उन्होंने अपने कार्यकाल के दौरान आईसीआईसीआई बैंक के

आत्मबोध शिक्षा, करियर के लक्ष्यों को आगे बढ़ाने और नेतृत्व की भूमिका निभाने में एक महत्वपूर्ण कारक है। यह व्यक्तिगत और व्यावसायिक आकांक्षाओं की खोज को प्रोत्साहित करने के साथ ही समग्र सशक्तिकरण में योगदान देता है। 'आत्मबोध' महिलाओं को उनकी सच्ची शक्ति, स्वतंत्रता, और समर्पण के साथ जीने की क्षमता प्रदान करता है और इस प्रक्रिया के माध्यम से समाज में समृद्धि और सामंजस्य की स्थापना में मदद करता है।

विस्तार और सफलता में महत्वपूर्ण योगदान दिया इसका उदाहरण है। इतना ही नहीं शुगर कॉस्मेटिक्स की संस्थापक विनीता सिंह, जो आजकल टेलिविजन शो "शार्क टैंक" पर भी दिखती हैं, जिसने शुगर जैसे ब्रांड को लोगों के घरों तक पहुंचाया ही नहीं बल्कि महिलाओं का चहेता भी बनाया। नायका ब्रांड की संस्थापक और सीईओ फाल्गुनी नायर, इंफोसिस की सह-संस्थापक कुमारी शिबूलाल आदि महिलाओं ने अपने-अपने क्षेत्रों में सफलता हासिल करने के साथ ही दूसरों को प्रेरित भी किया है। और भारतीय व्यापार जगत में महिलाओं के लिए अधिक अवसरों का मार्ग प्रशस्त किया।

भले ही अभी भी महिलाएं अपने अधिकारों से वंचित हैं और अपने घरों की चहारदीवारी में कैद हैं लेकिन अगर पिछले कुछ दशकों में उनकी संख्या पर नजर डालें तो बदलाव हमें सपष्ट नजर आता है। आत्मबोध शिक्षा, करियर के लक्ष्यों को आगे बढ़ाने और नेतृत्व की भूमिका निभाने में एक महत्वपूर्ण कारक है। यह व्यक्तिगत और व्यावसायिक आकांक्षाओं की खोज को प्रोत्साहित करने के साथ ही समग्र सशक्तिकरण में योगदान देता है। 'आत्मबोध' महिलाओं को उनकी सच्ची शक्ति, स्वतंत्रता, और समर्पण के साथ जीने की क्षमता प्रदान करता है और इस प्रक्रिया के माध्यम से समाज में समृद्धि और सामंजस्य की स्थापना में मदद करता है। ■

भारतीय अर्थ जगत में स्वत्व बोध के परिणाम

प्रहलाद सबनानी
सेवानिवृत्त उप महाप्रबंधक, भारतीय स्टेट बैंक

भारतीय अर्थव्यवस्था आज न केवल विश्व में सबसे अधिक तेज गति से आगे बढ़ती अर्थव्यवस्था बन गई है बल्कि विश्व की पांचवी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था भी। वर्ष 1980 में चीन द्वारा लागू किए गए आर्थिक सुधारों के चलते चीन की अर्थव्यवस्था भी सबसे तेज गति से दौड़ी थी और चीन के आर्थिक विकास में बाहरी कारकों (विदेशी व्यापार) का अधिक योगदान था, परंतु आज भारत की आर्थिक प्रगति में घरेलू कारकों का प्रमुख योगदान है। भारत का घरेलू बाजार ही इतना विशाल है कि भारत को विदेशी व्यापार पर बहुत अधिक निर्भरता नहीं करनी पड़ रही है। वैसे भी, वैश्विक स्तर पर विभिन्न देशों और विकसित देशों की आर्थिक स्थिति आज ठीक नहीं है एवं इन देशों के विदेशी व्यापार सहित सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि दर भी कम हो रही है।

भारत के आर्थिक विकास की वृद्धि दर तेज करने के संबंध में घरेलू कारकों में भारत के नागरिकों द्वारा स्वदेशी के विचार को अपनाया जाना भी शामिल है। आज भारतीय नागरिकों में स्वत्व का बोध स्पष्ट दिखाई दे रहा है। अभी हाल ही में अमेरिका के निवेश के संबंध में सलाह देने वाले एक प्रतिष्ठित संस्थान मॉर्गन स्टैनली ने अपने एक अनुसंधान प्रतिवेदन में यह बताया है कि वैश्विक स्तर पर आर्थिक विकास की दृष्टि से अगला दशक भारत का होने जा रहा है। अभी तक चीन पूरे विश्व के लिए एक विनिर्माण केंद्र बन गया था। परंतु, आगामी 10 वर्षों के दौरान स्थिति बदलने वाली है। भारत चीन से भी आगे निकलकर विश्व में सबसे अधिक आबादी वाला देश बन चुका है, जिससे भारत में उत्पादों का उपभोग तेजी से बढ़ रहा है। अतः भारत न केवल उत्पादों के उपभोग का प्रमुख केंद्र बन बन रहा है बल्कि विश्व के लिए एक विनिर्माण केंद्र के रूप में भी उभर रहा है। सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारत पूर्व में ही वैश्विक स्तर पर सबसे बड़े केंद्र के रूप में विकसित हो चुका है। भारतीय अर्थव्यवस्था का आकार वर्तमान स्तर 3.50 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर से बढ़कर वर्ष 2031 तक 7.5 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर के स्तर पर पहुंच जाएगा और इस प्रकार भारतीय अर्थव्यवस्था अमेरिका एवं चीन के बाद विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगी। भारतीय अर्थव्यवस्था के वैश्विक स्तर पर सुपर पावर बनने के पीछे भारत के विशाल आंतरिक बाजार को मुख्य कारण बताया जा रहा है।

यह स्वत्व का परिणाम है कि वैश्विक स्तर पर आर्थिक विकास की दृष्टि से अगला दशक भारत का होने जा रहा है। अभी तक चीन पूरे विश्व के लिए एक विनिर्माण केंद्र बना हुआ था। परंतु, आगामी 10 वर्षों के दौरान स्थिति बदलने वाली है। अतः आत्मनिर्भर भारत न केवल उत्पादों के उपभोग का प्रमुख केंद्र बनेगा बल्कि विश्व के लिए एक विनिर्माण केंद्र के रूप में भी स्थापित होगा।

वर्ष 2014 में केंद्र सरकार ने भारत में गरीब वर्ग के नागरिकों को बैंकों से जोड़ने के लिए जनधन योजना प्रारम्भ की थी। भारतीय नागरिकों में यह "स्व" का भाव ही था, जिसके चलते बहुत कम समय में इस योजना के अंतर्गत अभी तक लगभग 50 करोड़ बचत खाते विभिन्न बैंकों में खोले जा चुके हैं एवं छोटी छोटी बचतों को जोड़कर आज लगभग 2 लाख करोड़ रुपये से अधिक की राशि इन खातों में जमा की जा चुकी है। भारत ने इस संदर्भ में पूरे विश्व को राह दिखाई है। यह बचत गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन कर रहे नागरिकों को कल का मध्यम वर्ग बनाएगी, इससे देश में विभिन्न उत्पादों का उपभोग बढ़ेगा तथा देश की आर्थिक उन्नति की गति भी तेज होगी। यह भारतीय सनातन संस्कारों के चलते ही सम्भव हो पाया है। भारत में परिवार अपने खर्चों को संतुलित करते हुए

भविष्य के लिए बचत आवश्यक समझते हैं, यह भी स्वत्व का भाव ही दर्शाता है।

हमारी भारतीय सनातन संस्कृति हमें सिखाती है कि प्रकृति का दोहन करना चाहिए, शोषण नहीं। प्रकृति से जितनी आवश्यकता है केवल उतना ही लें। साथ ही, आत्मनिर्भरता प्राप्त करने हेतु स्वदेशी उत्पादों का उपयोग करना भी हमें सिखाया जाता है। स्वदेशी अपनाने से विभिन्न उत्पादों के आयात में कमी लाई जा सकती है। इसके लिए, भारतीय नागरिकों की सोच में गुणात्मक परिवर्तन दिखाई देने लगा है एवं अब वे निम्न गुणवत्ता वाले सस्ते विदेशी उत्पादों का कम उपयोग करने लगे हैं। भारत में ही निर्मित उत्पादों का उपयोग, चाहे वह थोड़े महंगे ही क्यों न हो, बढ़ रहा है। इसी कारण से हाल ही के समय में चीन से कई सस्ते उत्पादों का आयात कम हुआ है। यह समस्त परिवर्तन नागरिकों में स्वत्व की भावना के चलते ही सम्भव हो पा रहा है।

भारत में 60 से 80 के दशकों में लगभग समस्त नागरिक हमारे बचपन काल से ही सुनते आए हैं कि भारत एक गरीब देश है एवं भारतीय नागरिक अति गरीब हैं। हालांकि भारत का प्राचीन काल बहुत उज्ज्वल रहा है, परंतु आक्रांताओं एवं ब्रिटेन ने अपने शासन काल में भारत को लूटकर एक गरीब देश बना दिया था। अब समय का चक्र पूर्णतः घूमते हुए आज के खंड काल पर आकर खड़ा हो गया है एवं भारत पूरे विश्व को कई मामलों में अपना नेतृत्व प्रदान करता दिखाई दे रहा है। गौरतलब है कि वर्ष 2022 में विश्व बैंक द्वारा जारी किए गए एक प्रतिवेदन के अनुसार, वर्ष 2011 में भारत में 22.5 प्रतिशत नागरिक गरीबी की रेखा के नीचे जीवन यापन करने को मजबूर थे परंतु वर्ष 2019 में यह प्रतिशत घटकर 10.2 रह गया है। पिछले दो दशकों के दौरान भारत में 40 करोड़ से अधिक नागरिक गरीबी रेखा से ऊपर आ गए हैं। दरअसल पिछले लगभग 9 वर्षों के दौरान भारत के सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिवेश में कई बड़े बदलाव देखने को मिले हैं। जिसके चलते भारत में गरीबी तेजी से कम हुई है और भारत को गरीबी उन्मूलन के मामले में बहुत बड़ी सफलता प्राप्त हुई है। भारत में अति गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करने वाले करोड़ों नागरिकों का इतने कम समय में गरीबी रेखा के ऊपर आना विश्व के अन्य देशों के लिए प्रेरणा है।

एक और क्षेत्र जिसमें भारतीय आर्थिक दर्शन ने पूरे विश्व को राह दिखाई है, वह है मुद्रास्फीति पर नियंत्रण स्थापित करना। दरअसल, मुद्रास्फीति को नियंत्रित करने के लिए विकसित देशों द्वारा ब्याज दरों में लगातार वृद्धि करते जाना, अर्थव्यवस्था के अन्य क्षेत्रों को विपरीत रूप से प्रभावित करता नजर आ रहा है, जबकि इससे मुद्रा स्फीति पर नियंत्रण होता दिखाई नहीं दे रहा है। पूंजीवादी अर्थव्यवस्थाओं में अब पुराने सिद्धांत भोथरे साबित हो रहे हैं। और फिर, केवल मुद्रास्फीति को नियंत्रित करने के उद्देश्य से ब्याज दरों में लगातार वृद्धि करते जाना ताकि बाजार में

वर्ष 2014 में केंद्र सरकार ने भारत में गरीब वर्ग के नागरिकों को बैंकों से जोड़ने के लिए जनधन योजना प्रारम्भ की थी। भारतीय नागरिकों में यह 'स्व' का भाव ही था, जिसके चलते बहुत कम समय में इस योजना के अंतर्गत अभी तक लगभग 50 करोड़ बचत खाते विभिन्न बैंकों में खोले जा चुके हैं।

वस्तुओं की मांग कम हो, एक नकारात्मक निर्णय है। इससे देश की अर्थव्यवस्था पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। उत्पादों की मांग कम होने से, कंपनियों का उत्पादन कम होता है, देश में मंदी आने की सम्भावना बढ़ने लगती है, इससे बेरोजगारी बढ़ने का खतरा पैदा होने लगता है, सामान्य नागरिकों की ईएमआई में वृद्धि होने लगती है, आदि। अमेरिका में कई कम्पनियों ने इस माहौल में अपना मुनाफा बनाए रखने के लिए 2 लाख से अधिक कर्मचारियों की छंटनी करने की घोषणा की थी। किसी नागरिक को बेरोजगार कर देना एक अमानवीय कृत्य ही कहा जाएगा। और फिर, अमेरिका में ही इसी माहौल के बीच तीन बड़े बैंक फेल हो गए हैं। यदि इस प्रकार की परिस्थितियां अन्य देशों में भी फैलती हैं तो पूरे विश्व में ही मंदी की स्थिति आ सकती है। पश्चिम की उक्त व्यवस्था के ठीक विपरीत, भारतीय आर्थिक चिंतन में विपुलता की अर्थव्यवस्था के बारे में सोचा गया है, अर्थात अधिक से अधिक उत्पादन करो -"शतहस्त समाहर, सहस्रहस्त संकिर" (सौ हाथों से संग्रह करके हजार हाथों से बांट दो) - यह हमारे शास्त्रों में भी बताया गया है। विपुलता की अर्थव्यवस्था में अधिक से अधिक नागरिकों को उपभोग्य वस्तुएं आसानी से उचित मूल्य पर प्राप्त होती रहती हैं, इससे उत्पादों के बाजार भाव बढ़ने के स्थान पर घटते रहते हैं। भारतीय वैदिक अर्थव्यवस्था में उत्पादों के बाजार भाव लगातार कम होने की व्यवस्था है एवं मुद्रा स्फीति के बारे में तो भारतीय शास्त्रों में शायद कहीं कोई उल्लेख भी नहीं मिलता है। भारतीय आर्थिक चिंतन व्यक्तिगत लाभ केंद्रित अर्थव्यवस्था के स्थान पर मानव मात्र के लाभ को केंद्र में रखकर चलने वाली अर्थव्यवस्था को तरजीह देता है।

नागरिकों में स्व का भाव जगा कर, उनमें राष्ट्रप्रेम की भावना विकसित करना भी आवश्यक है। इससे आर्थिक गतिविधियों को देशहित में करने की इच्छा शक्ति नागरिकों में जागृत होती है और देश के विकास में प्रबल तेजी दृष्टिगोचर होती है। इस प्रकार का कार्य जापान, ब्रिटेन, इजरायल एवं जर्मनी ने द्वितीय विश्व युद्ध (1945) के पश्चात सफलतापूर्वक सम्पन्न किया है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ भी वर्ष 1925 में, अपनी स्थापना के बाद से, भारतीय नागरिकों में स्व का भाव जगाने का लगातार प्रयास कर रहा है। संघ के परम पूज्य सर संघचालक डॉक्टर मोहन भागवत ने अपने एक उद्बोधन में बताया है कि दुनिया विभिन्न क्षेत्रों में आ रही समस्याओं के हल हेतु कई कारणों से आज भारत की ओर बहुत उम्मीद भरी नजरों से देख रही है। यह सब भारतीय नागरिकों में स्व के भाव के जगने के कारण सम्भव हो रहा है और अब समय आ गया है कि भारत के नागरिकों में स्व के भाव का बड़े स्तर पर अवलंबन किया जाए क्योंकि हमारा अस्तित्व ही भारतीयतता के स्व के कारण है। ■

परस्पर निर्भर थे हमारे गांव

रामवीर श्रेष्ठ
एंकर, लोकसभा टीवी

एक समय था जब वैश्विक व्यापार और जीडीपी में भारत का दबदबा था। क्योंकि तत्कालीन समय में हर गांव परस्पर निर्भर होकर एक स्वावलंबी आर्थिक इकाई थे। तब भारत के बने तरह-तरह आकर्षक कपड़े, लोहे, लकड़ी के सामान, तांबे, पीतल या कांसे, अस्त्र-शस्त्र, सोने चांदी के आभूषण आदि दुनिया के कोने-कोने में निर्यात होते थे।

भारत एक उद्यम प्रधान देश रहा है, यहां के गांवों के बड़े-बड़े घरों में कपास की धुनाई, धागों की कताई, कपड़ों की बुनाई के अलावा हर घर टेक्सटाइल का सक्रिय केंद्र था। महिलाएं इन कुटीर उद्योगों की केंद्रीय भूमिका में थीं। लोहे, लकक्ड़, तांबे, पीतल या कांसे को कूट कूटकर उन्हें मनचाहा आकार देने का काम निरंतर होता था। इतना ही नहीं अस्त्र-शस्त्र, सोने चांदी के आभूषण सब कुछ हमारे घरों में ही तैयार हो रहा था। जिन्हें लेकर हमारे व्यापारी दुनिया के कोने-कोने में जा रहे थे। नतीजा, अंग्रेजों के आने से पहले विश्व व्यापार में भारत की हिस्सेदारी करीब 30 फीसदी से अधिक थी। जिसे अंग्रेजी शासन की षड्यंत्रकारी नीतियों ने बुरी तरह से प्रभावित किया। मसलन, भारत से इंग्लैंड समेत यूरोप के बाकी देशों में जाने वाले छींट के कपड़े यूरोप के कपड़ा उद्योग को जब सड़क पर ला दिया तो उन्हें मजबूर होकर फ्रांस जैसे देशों को भारत के कपड़े पर पाबंदी लगानी पड़ी।

समृद्ध भारत की इसी श्रृंखला में खेती भी एक प्रमुख कड़ी थी। या यूं कहिए कि खेती के चारों ओर ही सारी व्यवस्थाओं को बुना गया था। किसान उत्पादन करते थे, और बाकी सभी समुदाय समाज की अन्य व्यवस्था करते थे। अगर दर्जी कपड़ा सिल रहा था तो कुम्हार उसे सिलाई के बदले बर्तन दे रहा था। अगर नाई, धोबी को अपनी सेवाएं दे रहा था तो धोबी भी उसे अपनी सेवाएं दे रहा था, सबका ऐसा ही रिश्ता किसानों के साथ भी था। इस रिश्ते में व्यापार नहीं था, व्यवहार था। व्यापार था, गांव के बाहर। गांव तो एक पिण्ड की तरह था, जो एक शरीर की तरह था। जो इंडिपेंडेंट नहीं बल्कि इंटरडिपेंडेंट था।

इंग्लैंड की औद्योगिक क्रांति के साथ ही मशीनों ने मैन को रिप्लेस करना शुरू कर दिया। अंग्रेजों की मैन विरोधी नीतियों ने हमारे कुटीर उद्योगों को ग्रहण लगा दिया। साथ ही खेती पर लगे अनाप शनाप टैक्स से किसान भी डरकर खेती छोड़कर भागने लगे। आप कह सकते हैं कि पूरी ग्राम व्यवस्था पर विदेशी शासन ने एक साथ हमला कर उसे तहस नहस कर दिया। नतीजा, गांव बेकारी के केंद्र होते चले गए।

आजादी के बाद : देश के पहले प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू ने देश की बागडोर संभाली। भविष्य के भारत की नींव रखने का काम शुरू हुआ तो बड़े बांध, बड़े उद्योग, बड़े शिक्षण संस्थान बनकर तैयार होने लगे। किसान हों या कारीगर गुजर बसर के लिए खेती से बस चिपके भर थे। ऐसे में पंडित नेहरू ने रूसी मॉडल को देखते हुए विचार दिया कि अब खेती किसी एक किसान की ना होकर पूरे गांव की होगी। मतलब वो कहना चाहते थे कि "खेती गांव की"। कांग्रेस में वरिष्ठ किसान नेता चौधरी चरण सिंह ने इसका तीखा विरोध करते हुए कहा, खेती परिवार की। मतभेद इतने बढ़े कि चौधरी साहब ने कांग्रेस को छोड़ दिया और पंडित नेहरू ने किसानों को। कहते हैं बड़े लोग जब कोई गलती करते हैं तो परिणाम भी बड़े ही होते हैं। मेरे विचार से चौधरी चरण सिंह भले ही किसान नेता थे, लेकिन भविष्य की खेती पर उनका दृष्टिकोण पंडित नेहरू जितना प्रोग्रेसिव नहीं था। आज 75 साल बाद देश फॉर्मर प्रोड्यूसर ऑर्गेनाइजेशन या फॉर्मर

प्रोड्यूसर कंपनी के जरिए प्रगति की उसी दिशा में जा रहा है। अगर चौधरी चरण सिंह तब मान गए होते और तो प्रगति की गति का पहिया जाहिर तौर पर ज्यादा तेज गति से घूम रहा होता। इसके अनेक सकारात्मक परिणाम भी होते, मसलन, जैसे चकबंदी की समस्या, ना कोई भूस्वामी होता, और ना कोई भूमिहीन, खेती की ज़मीन का जब कोई व्यक्ति मालिक ही नहीं होता तो बेचा भी नहीं जा सकता था। ऐसे में खेती का रकबा सिकुड़ने से भी बच जाता। दरअसल भारत में ये लैंड रिफॉर्म नहीं बल्कि लैंड रिवोल्यूशन होता, जिसके सामाजिक प्रभाव इतने शक्तिशाली हो सकते थे, कि खांचों में बंटे समाज की रचना ही टूट जाती। ये हो सकता था, मगर हो ना सका और इस तरह जिस रफ्तार से सेवाओं और शहरों का विकास हुआ उस रफ्तार से गांवों का विकास ना हो सका।

वो पलायन का दौर : एक वो समय भी आया जब गावों से मोह छूटना लोगों की मजबूरी बन गई। शहरों में व्यवस्थित तरीकों से बसाई गई कॉलोनियों बिजली, पानी, स्वास्थ्य और शिक्षा की बुनियादी सुविधाओं ने गांव के लोगों को भी लुभाना शुरू कर दिया। लड़का शहर गया है तो शादी आसान, उधर बहुओं ने गांव वाली ससुराल आते ही शहर के लिए बोरिया बिस्तर बांधना शुरू किया। नतीजा गांव शहरों की ओर भागने लगे। ये पलायन इतना बढ़ा कि जब मैं छोटा था तब मुझे पढ़ाया जाता था कि गांव में भारत के 85 फीसदी लोग रहते हैं, और बड़ा होते होते आज 72 फीसदी लोग ही गांवों में बचे हैं। वर्तमान में ये आंकड़ा और भी कम हो गया है। दक्षिण भारत में तो शहरी और ग्रामीण आबादी आधी आधी हो चली है। आंकड़े

गांव की ज़रूरतें गांव से पूरी की जाएं, इसके लिए जिन्होंने गांव बसाया था, ऐसे जुलाहों, कुम्हारों, लुहारों, नाई, धोबी, बढ़ई और स्वच्छता के सिपाहियों को फिर से आमंत्रित किया जाए। आओ! उसी सनातन आत्मा से लिपटी नव निर्माण की नित्य नूतन संकल्पना के साथ हर ग्राम को ग्राम गणराज्य बनाते चलें।

बताते हैं कि 2030 तक 60 करोड़ लोग शहरों में निवास कर रहे होंगे। इस बीच जर्मनी से एक नई बात सामने आई है, यहां डिअर्बनाइजेशन शुरू हो चुका है, यानि लोग शहर छोड़ गावों में बस रहे हैं। वजह साफ है, गावों में शहर जैसी सुविधाऐं, और शहरों से बढ़िया आबोहवा।

पुनर्निर्माण का समय : दरअसल देश के पूर्व राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम ग्रामीण आबादी को ब्लॉक वाइज एक ऐसे कल्स्टर के रूप में देखना चाहते थे, जहां लोगों को अपने ब्लॉक के बाहर जाना ही ना पड़े। वो ग्रामीण क्षेत्रों को रूरल ना कहकर ररर्बन कहा करते थे, ऐसे गांव जहां खेतों और खलियानों की गोद में शहरी सुविधाओं से युक्त गांव बसे हों।

ग्रामीण क्षेत्रों में काम करने वाले सामाजिक कार्यकर्ता ललित त्यागी बताते हैं कि समय आ गया है कि अब आबादी समेत पूरे गांव की चकबंदी कर, गांवों को नक्शे से बसाया जाये। वो ऐसे स्मार्ट गांवों की बात करते हैं, जहां गांव को शहरी बस्तियों से भी शानदार तरीके से बसाया जाये। जिसमें हर किसान का घर उसके खेत पर हो। जो किसान नहीं हैं, उनका घर भी कम से कम 500 गज में हो ताकि वो उसमें कुछ घरेलू कामकाज भी कर सकें। चौड़ी सड़कें, एक दूसरे को समकोण पर काटती हुईं, गांव की पूरी जमीन को 10 हिस्सों में बांटकर हर हिस्से में 1 टयूबवेल, जिसके साथ 50 गायों वाली एक गौशाला, जिसके साथ 20 घन मीटर का एक गोबर गैस यूनिट हो, हर यूनिट से 100 एकड़ जमीन की स्प्रिंकल के जरिए सिंचाई की व्यवस्था हो। गांव की जरूरतें गावं से पूरी की जाएं, इसके लिए जिन्होंने गांव बसाया था, ऐसे जुलाहों, कुम्हारों, लुहारों, नाई, धोबी, बढ़ई और स्वच्छता के सिपाहियों को फिर से आमंत्रित किया जाए। आओ! उसी सनातन आत्मा से लिपटी नव निर्माण की नित्य नूतन संकल्पना के साथ हर ग्राम को ग्राम गणराज्य बनाते चलें। ■

भारत को अस्थिर करने की साजिश

नरेन्द्र भदौरिया
वरिष्ठ पत्रकार एवं लेखक

भारत के प्रबुद्ध राष्ट्रवादी विचारक एक बात पर पूरी तरह सहमत हैं सभी यह मत खुल कर व्यक्त कर रहे हैं कि सनातन हिन्दू संस्कृति पर सीधे आक्रमण के लिए देश के भीतर और बाहर के विरोधी एकजुट हो रहे हैं। ऐसे कूट षड्यन्त्रकारी मानते हैं कि भारत का हिन्दू समाज संगठित होकर खड़ा हुआ तो भारत को महाशक्ति बनने से कोई रोक नहीं सकेगा। तमिलनाडु, तेलंगाना, छत्तीसगढ़, केरल सहित कई राज्यों में सनातन संस्कृति को लक्ष्य करके प्रताड़ना भरे वक्तव्य और कृत्य हो रहे हैं।

कांग्रेस और वामपंथ के कूट रचनाकारों की ताल पर भारत विरोधी कई आन्तरिक और बाह्य शक्तियां लयबद्ध हो रही हैं। देश के बाहर इस तन्त्र की डोर कई देशों से जुड़ी है। ऐसे देश, भारत को अस्थिर देखना चाहते हैं। क्योंकि उन्हें पता है कि अस्थिरता का राजनीतिक घाव भारत की प्रगति के रथ को तत्काल रोक देगा। यही लक्ष्य भारत विरोधी शक्तियों का है। हालांकि पूर्व में भी भारत की सनातन संस्कृति ने बड़े उतार चढ़ाव देखे हैं। हिन्दू समाज को विसंगतियों में फंसा कर जैसे चाहा तोड़ा मरोड़ा गया। ऐसी तत्कालीन परिस्थितियों से हिन्दू समाज ने अब तक बहुत क्षति उठायी है। इन बातों के प्रति सामाजिक, सांस्कृतिक संगठन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉक्टर मोहन भागवत ने भी भारत के राष्ट्रवादी समाज को जागरूक किया है। देश के आंतरिक विघटनकारियों को मुट्ठी भर लोग बाह्य देशों से भी समर्थन दिलाने का भरोसा दे रहे हैं। ऐसी स्थिति में राष्ट्र के लिए देश भक्तों को मिलकर गहन चिंतन करना ही चाहिए। क्योंकि भारत को स्वतन्त्रता के उपरान्त अशान्त और अस्थिर रखने के बीज बहुत पहले बोए गये थे। लेकिन अब देश का नेतृत्व ऐसे हाथों में पहुंच गया जहां राष्ट्रीयता की सोच के धरातल पर विद्वेष या हिंसा फैलाने वाली ताकतें टकराकर परास्त हुई हैं। क्योंकि इनका सामना उद्यम और राष्ट्र धारित व्यक्तियों से होता रहा है।

देश की प्रगति और सनातन संस्कृति की पुनर्स्थापना की हुंकार से ईर्ष्यावश कुछ दुराग्रही बाह्य शक्तियां जयचंदों के माध्यम से देश को अस्थिर करने की साजिश रच रही हैं। ऐसे में राष्ट्र हित में सभी वर्ग एवं समुदाय को एकजुट होकर प्रगति रथ के निर्बाध पथ के लिए सहभागी बनना होगा।

भारत में 2024 में आम चुनाव होने जा रहा है। नरेन्द्र मोदी फिर सत्ता में वापसी करते संसार के कूटनीतिज्ञों को दिख रहे हैं। इसलिए ईसाई–मुस्लिम–वामपन्थी गठजोड़ को उनका एजेंडा धराशायी होते दिख रहा है। उन्हें लगता है कि वर्तमान नेतृत्व की वापसी से तो अर्थशास्त्रियों की भविष्यवाणी भी सही हो जाएगी कि भारत संसार की बड़ी महाशक्ति बनकर उभरेगा। इसी के चलते सारी राष्ट्र विरोधी शक्तियां अपने दबे कुचले घोड़ों को उकसाकर खड़ा कर रही हैं। हर किसी की आंखों की किरकिरी हिन्दू समाज व सनातन संस्कृति है। आने वाले चुनाव में छोटा से छोटा बिलौटा भी सिंह बनकर दहाड़ने का दम भर रहा है। परकीय शत्रु अशक्त बिडालों पर भी धन वर्षा करने लगे हैं जो किसी तरह सत्ता से हिन्दू शक्तियों को दूर रखने में सहायक बनते प्रतीत हों। ऐसे में देश की युवा पीढ़ी को इन बाह्य और आंतरिक जयचंदो से सावधान रहना होगा। क्योंकि इतिहास गवाह रहा है कि प्राचीन काल में भी भारत के गौरवमयी इतिहास पर बाह्य आक्रांताओं ने देश में छिपे कुछ जयचंदों के जरिए ही देश को विदीर्ण कर दिया। यानि राजनीतिक अंधता एक बड़ा रोग है, जिसके कारण भारत एक हजार साल तक आक्रान्ताओं से जूझता रहा। यह अंधता और कुछ नहीं गुटों खेमों में बंटकर भारत की विरोधी शक्तियों को बलवान बनाने की नासमझी रही है। इसी तरह भारतीय जनमानस को भ्रमित करने के नाना कुचक्र सभी ओर से आज भी चल रहे हैं। ऐसे में देखना होगा कि भारत की आत्मा के शत्रु कहीं इतने बलिष्ठ न हो जाये कि भारत फिर से अशक्त होकर हांफता खड़ा रह जाये। इसीलिए देश की सभी समुदाय एवं वर्ग को राष्ट्र हित में एकजुटता से सहयोग करना अपना कर्तव्य समझना चाहिए और इस पुनीत कार्य में अभी से सहभागिता करनी होगी। क्योंकि इस बार देश विरोधी शक्तियों के आक्रमण का लक्ष्य भारत की सनातन संस्कृति है। सोची विचारी रणनीति के अनुसार अभी से प्रहार होने लगे हैं। कूट रचनाकारों का लक्ष्य भारत के समाज को असंगठित बनाने का है। क्योंकि बिखरा समाज पूरी तरह शक्तिहीन हो जाएगा। ■

प्रेरणा विमर्श- 2023 "स्व"- भारत का आत्मबोध

प्रेरणा विमर्श की श्रृंखला में प्रेरणा विमर्श 2023 का आयोजन 'स्व भारत का आत्मबोध' विषय पर 15, 16 और 17 दिसंबर, 2023 को है। जिसमें लेखक विमर्श, प्रिंट मीडिया विमर्श, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया विमर्श, वेब मीडिया विमर्श, सोशल मीडिया विमर्श, मीडिया शिक्षक एवं छात्र विमर्श, पत्रकार प्रतिभा खोज परीक्षा, नेशनल कॉन्फ्रेंस और प्रेरणा चित्र भारती फिल्मोत्सव समेत 9 आयामों पर विमर्श होगा। यह कार्यक्रम प्रेरणा शोध संस्थान न्यास, नोएडा और गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय, ग्रेटर नोएडा के संयुक्त तत्वावधान में होगा। कार्यक्रम से संबंधित उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखण्ड के कई जिलों में पोस्टर का विमोचन हुआ।

गौतमबुद्ध विश्वविद्यालय, ग्रेटर नोएडा में प्रेरणा विमर्श-2023 का पोस्टर लॉन्च

प्रेरणा भवन

विश्व संवाद केन्द्र, मेरठ

फिल्म सोसाइटी अवध चित्र साधना, लखनऊ

फिल्म सोसाइटी काशी प्रयाग चित्र साधना, प्रयागराज

विश्व संवाद केन्द्र, देहरादून

हिमगिरी जी विश्वविद्यालय, देहरादून

विनायक विद्यापीठ कॉलेज, मेरठ

आईएफटीएम विश्वविद्यालय, मुरादाबाद

विश्व संवाद केन्द्र, आगरा

प्रेरणा विमर्श कार्यक्रम की झलकियां

जब हम किसी विषय पर चर्चा-परिचर्चा, परिसंवाद और विमर्श करते हैं, तो सहमति-असहमति, पक्ष-विपक्ष से भ्रम के बादल छटते हैं। फिर निष्कर्ष रूप में उससे समाज में सकारात्मक और भ्रमरहित संदेश जाता है। यही नीर क्षीर विवेक का कार्य प्रेरणा शोध संस्थान न्यास पिछले चार वर्षों से 'प्रेरणा विमर्श' कार्यक्रम के जरिए कर रहा है। प्रेरणा विमर्श में संस्कृति, विरासत, इतिहास और समसामयिक जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर तथ्यपरक और गूढ़ विश्लेषण के साथ विद्यार्थियों, शोधार्थियों और आम जनों को संचार के सभी माध्यमों से सूचना उपलब्ध करा रहा है। इस क्रम में हुए पिछले तीन कार्यक्रमों की प्रमुख झलकियां -

प्रेरणा विमर्श- 2022 "भविष्य का भारत"

दीप प्रज्ज्वलित करते कुंवर मानवेन्द्र सिंह एवं जे.नन्द कुमार व अन्य

राज्यसभा सांसद डॉ. कल्पना सैनी व कपिल देव अग्रवाल राज्यमंत्री, उप्र.व अन्य

प्रेरणा विमर्श कार्यक्रमों की श्रृंखला में मीडिया विमर्श के प्रमुख केन्द्र के रूप में प्रतिष्ठित प्रेरणा शोध संस्थान न्यास, नोएडा व सरस्वती शिशु मंदिर के संयुक्त तत्वावधान में 'भविष्य का भारत' विषय को केन्द्र में रखकर 9 से 13 नवम्बर तक प्रेरणा विमर्श-2022 का आयोजन किया गया। इस पांच दिवसीय कार्यक्रम में देशभर से चिंतकों, विश्वविद्यालय के कुलपतियों, समाचार पत्रों और टीवी चैनलों के संपादकों, वरिष्ठ पत्रकारों, सोशल मीडिया के दिग्गजों और फिल्म टेलीविजन के प्रमुख हस्ताक्षरों और सम्मानित जनप्रतिनिधियों को मिलाकर लगभग 50 अतिथियों ने विमर्श को सार्थक बनाया।

◘ **पहला दिन, 9 नवम्बर** - इसमें 'भारत का भविष्य' नामक प्रदर्शनी के उद्घाटन के साथ 250 से अधिक स्लाइडों के माध्यम से भविष्य का भारत व गौरवशाली इतिहास को दिखाया गया।

◘ **दूसरा दिन, 10 नवम्बर** - इसमें मीडिया शिक्षक एवं छात्र विमर्श पर अलग-अलग सत्रों में भारत की संकल्पना, मीडिया की प्रामाणिकता और उसका सामाजिक सरोकार विषय पर विस्तृत चर्चा हुई। इसमें लगभग 25 मीडिया संस्थानों के 89 शिक्षकों एवं 328 विद्यार्थियों ने भाग लिया था।

◘ **तीसरा दिन, 11 नवम्बर** - इस दिन पत्रकार एवं लेखक विमर्श हुआ। विभिन्न आयामों में 220 पत्रकारों एवं 55 लेखकों ने भाग लिया।

◘ **चौथा दिन, 12 नवम्बर** - सोशल मीडिया विमर्श में सोशल मीडिया से जुड़े अलग-अलग आयामों में पंजीकृत 335 लोगों ने सहभागिता की।

◘ **पांचवा दिन, 13 नवम्बर** - इस दिन 'प्रेरणा चित्र भारती लघु फिल्मोत्सव' के अंतर्गत फिल्म विमर्श एवं मास्टर क्लास के दौरान अतिथियों द्वारा फिल्म निर्माण की बारीकियों से प्रतिभागियों को अवगत कराया गया। लघु फिल्मोत्सव में 120 छात्रों ने भाग लिया तथा 67 फिल्में प्राप्त हुई थीं।

◘ कार्यक्रम में ऑनलाइन पंजीकरण की व्यवस्था थी, जिसमें लगभग 920 प्रतिभागियों ने पंजीकरण कराया था। इस दौरान ऑनलाइन पत्रकार प्रतिभा खोज परीक्षा भी आयोजित की गई थी। जिसमें भारत की संस्कृति, इतिहास और पत्रकारिता से संबंधित प्रश्न पूछे थे। इस प्रतियोगिता में लगभग 330 विद्यार्थियों ने ऑनलाइन हिस्सा लिया था।

◘ समापन समारोह (भाऊराव देवरस सरस्वती विद्या मंदिर, नोएडा) में प्रज्ञा प्रवाह के राष्ट्रीय संयोजक श्रीमान जे. नन्द कुमार, उत्तर प्रदेश विधान परिषद के सभापति श्रीमान कुंवर मानवेन्द्र सिंह, यथार्थ हॉस्पिटल ग्रेटर नोएडा के निदेशक डॉ. कपिल त्यागी, भारतीय चित्र साधना के सचिव अतुल गंगवार, प्रेरणा जनसेवा न्यास के अध्यक्ष मधुसूदन दादू, प्रेरणा शोध संस्थान न्यास के अध्यक्ष अर्णज त्यागी एवं प्रेरणा विमर्श 2022 की अध्यक्षा प्रीति दादू समेत अन्य गणमान्यों ने समारोह को भव्यता प्रदान की थी। ■

प्रेरणा विमर्श- 2021 भारतोदय : आजादी का अमृत उत्सव

राज्यसभा सांसद प्रो. राकेश सिन्हा व अन्य

भारतोदय एवं मीडिया विषय को केन्द्र में रखकर 24, 25 एवं 26 दिसम्बर को भारतोदयः आजादी का अमृत महोत्सव नाम से प्रेरणा विमर्श-2021 का आयोजन किया गया। तीन दिवसीय इस कार्यक्रम में देश के महत्वपूर्ण क्षेत्र के प्रमुख हस्ताक्षर और सम्मानित जनप्रतिनिधि उपस्थित रहे। हर दिन चर्चा सत्र में प्रश्नोत्तर का क्रम रखा गया, जिसमें देशभर से हजारों प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया।

◘ **पहला दिन, 24 दिसम्बर** - भारतोदयः आजादी का अमृत उत्सव विषय पर आधारित प्रदर्शनी का उद्घाटन भारत माता एवं प्रथम पत्रकार नारद जी के चित्र के समक्ष दीप प्रज्ज्वलन से हुआ। प्रदर्शनी को क्रांतिवीरों-वीरांगनाओं और राष्ट्र निर्माण में योगदान देने वाले महापुरुषों के चित्रों से सजाया गया था। प्रदर्शनी को 300 से ज्यादा स्लाइडों के माध्यम से दर्शाया गया। इसी दिन सोशल मीडिया विमर्श कार्यशाला को तीन सत्रों में सोशल मीडिया के अलग-अलग आयामों पर चर्चा एवं प्रश्नोत्तर हुए।

◘ **दूसरा दिन, 25 दिसम्बर** - पत्रकार एवं लेखक विमर्श कार्यशाला में मीडिया से जुड़े अलग-अलग आयामों पर पूरे दिन विमर्श चला।

वरिष्ठ पत्रकार विष्णु त्रिपाठी व अशोक श्रीवास्तव

तीसरा दिन 26 दिसम्बर - पत्रकारिता के विद्यार्थी एवं शिक्षक विमर्श कार्यशाला में पत्रकारिता के विभिन्न आयामों पर चर्चा हुई। तीन दिनों तक चले इस महोत्सव में पत्रकारों, बुद्धिजीवियों के अतिरिक्त मुख्य रूप से भावी पत्रकार यानी पत्रकारिता के विद्यार्थियों ने भागीदारी की। कार्यक्रम में ऑनलाइन और ऑफलाइन पंजीकरण की व्यवस्था थी, जिसमें कुल 1000 प्रतिभागियों ने पंजीकरण कराया था। इसके साथ ही प्रेरणा चित्र भारती ऑनलाइन फिल्मोत्सव का आयोजन भी किया गया था। जिसमें भारत की संस्कृति और युवा, भारतीय धरोहर, सामाजिक समरसता, पर्यावरण एवं जल संरक्षण, नारी सशक्तिकरण और सुरक्षा आदि विषयों पर 10 मिनट तक की डॉक्यूमेंट्री और लघु फिल्में मंगायी गई थीं। जिसमें 44 एंट्री आई थी। फिल्मोत्सव में प्रथम तीन प्रतिभागियों को पुरस्कार प्रदान किया गया। इसके अतिरिक्त सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरित किये गये। प्रेरणा विमर्श-2021 के समापन कार्यक्रम में राज्य सभा सदस्य, प्रो. राकेश सिन्हा मुख्य वक्ता एवं महात्मा गांधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय मोतिहारी, बिहार के कुलपति प्रो. संजीव शर्मा ने मुख्य अतिथि के रूप में कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। ■

वरिष्ठ पत्रकार हर्षवर्धन त्रिपाठी व प्रो. सच्चिदानन्द जोशी

प्रेरणा विमर्श- 2020 - विरासत

प्रेरणा जनसंचार एवं शोध संस्थान और गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय के जनसंचार संस्थान के संयुक्त प्रयास से भारत की संस्कृति और मीडिया विषय को केन्द्र में रखकर 6, 7, 8 और 9 फरवरी 2020 को विरासत नाम से प्रेरणा विमर्श-2020 का आयोजन किया गया। चार दिवसीय इस कार्यक्रम में देश के चिंतकों, विश्वविद्यालय के कुलपतियों, समाचार पत्रों एवं टीवी चैनलों के प्रमुख संपादकों, वरिष्ठ पत्रकारों, सोशल मीडिया के दिग्गजों और फिल्म टेलीविजन के प्रबुद्धजनों और जनप्रतिनिधियों को मिलाकर 55 गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला, रामलाल जी व अन्य

◘ **पहला दिन, 6 फरवरी** - विरासत नाम से एक प्रदर्शनी का उद्घाटन हुआ इसमें 354 स्लाइडों के माध्यम से भारत के गौरवशाली इतिहास, महापुरुषों, महात्मा बुद्ध की जीवनी, गौतम बुद्ध नगर जिला और पत्रकारिता का इतिहास एवं प्रेरणा जनसंचार संस्थान और केशव संवाद पत्रिका के विषय में दर्शाया गया।

◘ **दूसरा दिन, 7 फरवरी** - मीडिया कॉन्क्लेव में भारत की संकल्पना, मीडिया की प्रामाणिकता और उसके सामाजिक सरोकार विषय पर चर्चा हुई।

◘ **तीसरा दिन, 8 फरवरी** - सोशल मीडिया से जुड़े अलग-अलग आयामों पर पूरे दिन विमर्श चला।

◘ **चौथा दिन, 9 फरवरी** - खुला मंच सत्र में भारतीय संस्कृति और सिने विमर्श पर चर्चा हुई। चार दिनों तक चले महोत्सव में पत्रकारों, बुद्धिजीवियों के अतिरिक्त मुख्य रूप से पत्रकारिता के विद्यार्थियों ने भागीदारी की। कार्यक्रम में ऑनलाइन और ऑफलाइन पंजीकरण की व्यवस्था थी। जिसमें कुल 1372 प्रतिभागियों ने पंजीकरण कराया था। इस दौरान कई प्रतियोगिताओं का आयोजन भी किया गया। जिसमें चार राज्यों के मीडिया जनसंचार के 37 संस्थानों के विद्यार्थियों ने भी हिस्सा लिया। पत्रकार प्रतिभा खोज परीक्षा में भारत की संस्कृति, इतिहास और पत्रकारिता से संबंधित प्रश्न पूछे गये। इसमें 400 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। निबंध प्रतियोगिता का विषय 'नए भारत की नयी पत्रकारिता' था, इसमें 100 से अधिक प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया।

-भारत की संस्कृति और युवा, भारतीय धरोहर, सामाजिक समरसता, पर्यावरण और जल संरक्षण, नारी सशक्तिकरण और सुरक्षा विषयों पर 10 मिनट तक की डाक्यूमेंट्री और लघु फिल्में मंगाई गई थीं, जिसमें 90 एंट्री प्राप्त हुई थी।

◘ इस प्रकार तीन प्रतियोगिताओं में लगभग 900 प्रतिभागियों ने प्रतिभाग किया। इन प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान पर आने वाले प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया। इसके अतिरिक्त सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरित किये गये।

◘ प्रेरणा विमर्श- 2021 के समापन कार्यक्रम में लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला, गोवा की पूर्व राज्यपाल मृदुला सिन्हा, अभिनेता गजेन्द्र चौहान, जीबीयू के कुलपति प्रो. भगवती प्रकाश शर्मा, सुदर्शन न्यूज के संपादक सुरेश चव्हाण के, रा.स्व.संघ के अ. भा. सह संपर्क प्रमुख रामलाल, उत्तर प्रदेश के जल शक्ति मंत्री डॉ. महेन्द्र सिंह, प.उ.प्र.क्षेत्र के क्षेत्र संघचालक सूर्यप्रकाश टोंक, राज्य सभा सांसद कांता कर्दम, पिछड़ा आयोग उत्तराखण्ड की अध्यक्ष कल्पना सैनी, गौतमबुद्ध विश्वविद्यालय की प्रो. वन्दना पांडेय, न्यूबर्ग इंजी. लि. के संस्थापक अनिल त्यागी व प्रेरणा विमर्श 2020 के अध्यक्ष अणंज त्यागी मुख्य व विशिष्ट अतिथि के रूप में कार्यक्रम में उपस्थित थे।

भारत और भारतीयता का विचार

सोनम लववंशी
स्वतंत्र लेखिका एवं शोधार्थी

वर्तमान केंद्रीय नेतृत्व में भारत, एक भारत, श्रेष्ठ भारत की परिकल्पना को साकार कर रहा है। देश वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना को सार्थक करते हुए विश्व गुरु बनने के पथ पर अग्रसर है। वैश्विक स्तर पर भारत अपनी रीति और नीतियों के कारण अग्रणी भूमिका निभा रहा है। यहां तक कि वैश्विक मंचों पर भी भारतीय संस्कृति, संस्कार और पुरातन ज्ञान परंपरा को महत्व दिया जा रहा है। जिसके परिणामस्वरूप दुनिया, भारत के नेतृत्व में आगे बढ़ रही है। भारत, राष्ट्रहित सर्वोपरि की भावना के चलते अपने संस्कार और संस्कृति को आत्मार्पित कर दुनिया का मार्ग प्रशस्त करने की दिशा में मजबूती से कदम बढ़ा चुका है। जिसमें जी-20 समूह की अध्यक्षता मिलना हो या फिर अंतरराष्ट्रीय खेलों का आयोजन करना हो। इन आयोजनों ने भारतीयों के लिए एक सुखद अनुभूति का काम किया। यहां तक कि वैश्विक अर्थव्यवस्था जब कोविड-19 के बाद उथल-पुथल के दौर से गुजर रही थी। उस परिस्थिति में भारत ने न केवल जी-20 की अध्यक्षता सहर्ष स्वीकार की, बल्कि मानव केंद्रित विकास को प्राथमिकता दी और कोरोना काल में 'वैक्सीन मैत्री' मुहिम चलाकर दुनिया के सामने भारतीयता का बोध कराया।

आज लगभग 130 करोड़ भारतीयों की शक्ति और सामर्थ्य का ही नतीजा है कि हम ग्लोबल माउथ की आवाज़ बनकर वैश्विक पटल पर उभरे हैं। मानव सेवा ही माधव सेवा का ध्येय लेकर आगे बढ़े हैं। भारत के नेतृत्व में जी-20 समूह ने देश में महिला नेतृत्व विकास को भी प्राथमिकता दी है। आज महिलाएं बड़े पैमाने पर नेतृत्वकारी भूमिका में आगे बढ़ रही हैं। देश जी-20 आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और डिजिटल टेक्नोलॉजी इंफ्रास्ट्रक्चर के क्षेत्र में बड़ी छलांग लगा रहा है। भारत, दुनिया के अग्रणी देशों को जलवायु परिवर्तन से निपटने का गुरु मंत्र दे रहा है। भारत ने वर्तमान समय में जिस जी-20 समूह की अध्यक्षता की है। ये

सामाजिक न्याय और सांस्कृतिक अभ्युदय की जो आधारशिला दुनिया के सामने हमारे देश और वर्तमान केंद्र सरकार ने रखी है। वह वैश्विक परिदृश्य के लिए अनुकरणीय है और यही वजह है कि भारत और भारतीयता के सान्निध्य में दुनिया आगे बढ़ने को लालायित दिख रही है।

समूह वैश्विक कार्बन उत्सर्जन में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। ऐसे में अगर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी वैश्विक मंचों से कहते हैं कि, 'जलवायु परिवर्तन, आतंकवाद, और महामारियों की चुनौतियों का समाधान एक-दूसरे के खिलाफ लड़कर नहीं, बल्कि एक साथ मिलकर ही किया जा सकता है।' तो यह भारतीयता के उस विचार को आगे बढ़ा रहा है। जो हमारे ऋषि-मुनियों ने सदियों पहले वसुधैव कुटुम्बकम की परिकल्पना की थी। भारत के नेतृत्व में सभी देश आगे बढ़ रहे है। ऐसे अनेक उदाहरण इस बात के पर्याय हैं कि भारतीयता और भारत का ज्ञान कितना समृद्ध और विश्व-कल्याण की भावना से ओत-प्रोत है।

जी-20 समूह के देश, वैश्विक अर्थव्यवस्था की लगभग 85 प्रतिशत जीडीपी और 75 फीसदी ग्लोबल ट्रेड पर ही अधिपत्य नहीं रखते, बल्कि इन देशों की संस्कृति में एकजुट होने की क्षमता अंतर्निहित है। यही वजह है कि ये देश भारत के नेतृत्व में विभिन्न दृष्टिकोणों और पृष्ठभूमियों को समायोजित कर एक बेहतर भविष्य का निर्माण करने में लगे हैं। आज दुनिया के हर विकसित, विकासशील देश, भारत की तरफ आशान्वित दृष्टिकोण से देख रहे हैं। बाली-डिक्लेरेशन के समय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का यह कहना कि, 'आज का युग युद्ध का नहीं है।' यह दर्शाता है कि दुनिया में शांति और सद्भाव बुद्ध और गांधी के विचारों से ही संभव है। जापान जैसा विकसित देश बुद्ध के विचारों को सदैव आत्मसात करने में अग्रणी रहा है। आज का दौर बहुपक्षवाद का है और यह गुण भारत की विदेश नीति में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। जलवायु परिवर्तन जैसे मुद्दों से निपटने के उपाय भी हमारी संस्कृति और जीवन मूल्यों में समाहित हैं। सतत विकास के लक्ष्यों में एक लक्ष्य भुखमरी को जड़ से खत्म करना भी शामिल है और 'अंत्योदय से भारत उदय' की कहानी लिखकर भारत दुनिया को यह संदेश दे रहा है कि ऐसी पहल से भूख और ग़रीबी को जड़ से वैश्विक स्तर पर मिटाया जा सकता है।

शांति, विश्वबन्धुत्व और साझा उद्देश्यों की वैश्विक स्तर पर पूर्ति के लिए भारत के सकारात्मक प्रयास की दुनिया कायल है। सामाजिक न्याय और सांस्कृतिक अभ्युदय की जो आधारशिला दुनिया के सामने हमारे देश और वर्तमान केंद्र सरकार ने रखी है। वह वैश्विक परिदृश्य के लिए अनुकरणीय है और यही वजह है कि भारत और भारतीयता के सानिध्य में दुनिया आगे बढ़ने को लालायित दिख रही है। ■

किसी ने जाति न पूछी

रमेश शर्मा
वरिष्ठ पत्रकार

अयोध्या हो या तिरुपति बालाजी या बद्रीनाथ, केदारनाथ धाम हो या वैष्णो देवी हो या मथुरा और काशी समेत तीर्थ स्थलों पर हर बार की तरह इस बार भी बिना किसी भेदभाव के करोड़ों लोगों में भारत के सामाजिक जीवन का समरस स्वरूप दिखा। यही सनातन का वास्तविक मूल्य है बावजूद इसके कुछ स्वार्थी तत्व देश को जातियों और संप्रदायों में बांटने की साजिश रचते रहते हैं।

भव्य दीपोत्सव की श्रृंखला में एक बार फिर अयोध्या के सरयू तट पर दीपोत्सव का कीर्तिमान बना। इधर उत्तर भारत में लाखों लोगों ने लगभग 23 लाख द्वीप जलाये, उधर दक्षिण भारत स्थित तिरुपति बालाजी मंदिर में दीपावली के तीन दिनों में पौने दो लाख लोग दर्शन के लिए पहुंचे। पर किसी ने किसी से जाति नहीं पूछी। यनि समाज या धर्मस्थलों में जाति का महत्व नहीं है। फिर भी कुछ राजनीतिक दल समाज में जातीय आधारित जनगणना करने पर जोर दे रहे हैं। आखिर जातीय बंटवारा करने का उद्देश्य क्या है?

इस वर्ष पांच दिवसीय दीपावली उत्सव के समापन पर दो प्रकार के समाचार मीडिया की सुर्खियों में रहे। पहला- दीपावली उत्सव, बाजार और धर्म स्थलों की समीक्षा का, दूसरा- इन पांच दिनों में राजनेताओं के वक्तव्यों के विश्लेषण का। इस दौरान तो सबसे प्रमुख समाचार अयोध्या से रहा। क्योंकि वहां सरयू तट पर दीपोत्सव का विश्व कीर्तिमान बना। अयोध्या में जैसे-जैसे राम जन्म भूमि मंदिर की पूर्णतः की तिथि समीप आ रही है वैसे वैसे उत्साह नई अंगड़ाइयां ले रहा है। मानो नवीनता स्वयं आकर पूरे नगर का नव श्रृंगार कर रही हो। अयोध्यावासियों के इसी उत्साह ने सरयू तट पर दीपोत्सव का एक और विश्व कीर्तिमान बनाया। पूरी अयोध्या में त्रेता युग का अहसास था। सबका स्वरूप एक था। धनवान, निर्धन, बूढ़े, युवा और बालक वृंद सभी एक भाव में थे। सबके हृदय में राम और हाथों में दीप थे। यह राम भक्ति की शक्ति थी कि सब शांत और स्व अनुशासित। सब एक दूसरे का सहयोग करते अपना दीप प्रज्ज्वलित करते और दूसरे के दीप की जल प्रवाह यात्रा देखते हुए ये सभी दृश्य इतिहास बने। कौन महंगे आभूषण या वस्त्र पहने था अथवा किसके वस्त्र पुराने और जीर्ण थे, इस पर किसी का ध्यान नहीं। सबसे महत्वपूर्ण बात किसी ने किसी की जाति नहीं पूछी। सबने अपने दीप की लौ से दूसरे का दीप जलाने में सहयोग किया। सब एकरूप, सब समरूप थे।

दीपावली पर यह दृश्य उत्तर भारत का है। दूसरी तरफ दक्षिण भारत में तिरुपति बालाजी मंदिर का दृश्य देखिये। वहां दीपावली उत्सव 11,12 और 13 नवम्बर के तीन दिन में लगभग पौने दो लाख श्रद्धालुओं ने दर्शन किये। वहां भी किसी ने किसी की जाति नहीं पूछी। तिरुपति में बालाजी के दर्शन हों या अयोध्या में दीपदान दोनों जगह सभी का एक दूसरे के कंधे से कंधा मिला था और परस्पर बातचीत और सहयोग के अद्भुत दृश्य।

अयोध्या और तिरुपति बालाजी के इन दृश्यों और आंकड़ों के साथ श्रद्धालुओं का एक और आंकड़ा उत्तराखंड से रहा। बद्रीनाथ और केदारनाथ धाम के कपाट बंद होने तक दर्शन करने वालों का। इस वर्ष का आंकड़ा एक करोड़ के समीप पहुंचा। ये लोग देश भर से

पहुंचे थे। हर भाषा, हर बोली और हर जाति के। सबने एक दूसरे का सहयोग किया, ठंड के वस्त्र ही नहीं भोजन की वस्तुओं का आदान-प्रदान भी हुआ। पर किसी ने किसी से जाति नहीं पूछी। यदि तीर्थ यात्रियों से अलग हटकर पूजन, भोजन सामग्री विक्रेताओं की बात करें तो उनमें हर समाज और हर जाति के लोग हैं। जाति ही नहीं अन्य धर्मावलंबी दुकानदार भी थे। पर किसी को किसी से कोई परहेज नहीं था। एक आस्था के साथ, एक भाव के साथ सब लोग पहुंचे थे और उसी के साथ लौटे। यह है भारत के सामाजिक जीवन का समरस स्वरूप, जिसके दर्शन सदैव होते हैं और इस दीपावली पर भी हुये।

यदि दीपावली के इन आंकड़ों और दृश्यों को ध्यान में रखकर अन्य तीर्थ स्थलों जैसे वैष्णो देवी, रामेश्वरम, मथुरा, काशी, ओंकारेश्वर, बालाजी, जगन्नाथ जी, सोमनाथ, द्वारका, बैजनाथ धाम, त्र्यम्बकेश्वर, गयाजी, प्रयाग सहित विभिन्न तीर्थ स्थलों को देखें और पूरे वर्ष आने वाले तीर्थ यात्रियों को जोड़ें तो तीर्थों के समागम का यह आंकड़ा केवल एक वर्ष में करीब दस करोड़ के आसपास बैठता है। इस वर्ष 2023 में दीपावली तक अकेले वैष्णो देवी पहुंचने वाले तीर्थ यात्रियों की संख्या लगभग 90 लाख तक पहुंच गई। इसके अलावा कितने लोगों ने नर्मदा परिक्रमा, गोवर्धन परिक्रमा की। पर कभी किसी तीर्थ से यह समाचार कभी नहीं आया कि किसी तीर्थयात्री ने अपनी पूजन या भोजन की सामग्री क्रय करने से पहले दुकानदार से, दर्शन की कतार में अपने पास लगे किसी श्रद्धालु से, या दर्शन के लिये प्रभु प्रतिमा के सामने पहुंचे किसी श्रद्धालु से किसी पुजारी ने जाति पूछी हो।

अब इसी दीपावली बाजार का दृश्य देखें। बाजार ने पिछले सभी रिकॉर्ड तोड़े। स्वर्णाभूषण, वस्त्र, वर्तन, भवन मकान, ही नहीं खाने के खील बताशे से लेकर मिठाइयां भी खरीदी गईं पर कहीं किसी खरीददार ने दुकानदार से जाति पूछकर सामान न खरीदा। अनुमान है इस दीपावली पर्व बाजार की खरीदारी से लेकर देव दर्शन तक लगभग चालीस करोड़ लोगों की सहभागिता रही। विद्युत सज्जा आदि में ही नहीं अन्य खाद्य सामग्री विक्रय में भी सभी धर्मों के लोग सहभागी रहे। यह है भारत के सामाजिक जीवन का समरस स्वरूप।

तब प्रश्न उठता है कि जब भारतीय समाज समरस है तो यह जातीय विवरण पर कौन जोर दे रहा है? कौन समाज को बांटने की साजिश में है? इसका उत्तर तुष्टिकरण प्रेमी सरकारों और राजनीति के आसपास मिलेगा। समाज तो जाति नहीं पूछता। न मंदिर में न बाजार में। पर कुछ तुष्टिवादी सरकारें और राजनीति कदम-कदम पर जाति पूछती हैं। स्वतंत्रता के समय भले महात्मा गांधी, पंडित जवाहरलाल नेहरू, सरदार पटेल, बाबा साहब अंबेडकर, डॉक्टर राम मनोहर लोहिया, पंडित दीनदयाल उपाध्याय ही नहीं बाद की पीढ़ी में इंदिरा गांधी, अटल बिहारी वाजपेई आदि सभी नेताओं ने जातीय आधारित जनगणना को भारत की विकास गति के विरुद्ध बताया किन्तु अब कुछ राजनीतिक दल जातीय आधारित जनगणना करने और इसके लिए पूरे देश में जातीय भावना प्रबल करने का मानों तूफान उठा रहे हैं। यह प्रचार अभियान इस सीमा तक आ गया है कि यदि व्यक्तिगत अपराध की कोई घटना घटी तो उसे जाति से जोड़कर समाज में दूरियां बनाने का प्रयास होता है। हाल ही एक सभा में एक नेता ने मध्य प्रदेश के संदर्भ में यह आंकड़े भी बताए कि किस जाति के सबसे कम अफसर हैं। प्रश्न यह नहीं है कि कथित नेता महोदय ने जो आंकड़े बताए और सोशल मीडिया पर जो आंकड़े प्रचारित किये जा रहे हैं वह कितना वैधानिक है और वे कितने सत्य हैं? पर इससे समाज में एक अदृश्य विभाजन रेखा तो आकार लेने लगी है। हर व्यक्ति के मन में यह बिठाने का प्रयास हो रहा है कि उसकी जाति की उपेक्षा हुई है, विकास के जो अवसर मिलने चाहिए थे वो नहीं मिले और इसका कारण जातीय आधारित जनगणना न होना है।

जब भारतीय समाज समरस है तो जातीय विवरण पर कौन जोर दे रहा है? कौन समाज को बांटने की साजिश में है? इसका उत्तर तुष्टिकरण प्रेमी सरकारों और राजनीति के आसपास मिलेगा। समाज तो जाति नहीं पूछता। न मंदिर में न बाजार में। पर कुछ तुष्टिवादी सरकारें और राजनीति कदम-कदम पर जाति पूछती हैं।

यूं तो यह वातावरण पूरे देश में बनाने का प्रयास हो रहा है पर विधानसभा चुनाव वाले पांच राज्यों में प्रचार अधिक रहा। इसमें तीन हिंदी भाषी राज्य हैं। ये तीन राज्य हैं मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और राजस्थान। जातीय जनगणना की महत्ता इन तीन राज्यों में अधिक समझाई गई मीडिया ने तो इससे एक कदम आगे बढ़कर समीक्षा कर डाली। जो विवरण दिये उनमें जाति ही नहीं उपजाति और उपजाति की भी उपजाति के आंकड़े दे दिये। जैसे ओबीसी में कितने यादव, कितने रघुवंशी और कितने लोधी हैं आदि।

निसंदेह कुछ राजनीतिक दलों का जातीय स्वरूप पर जोर देना और दीपावली पर दिखे भारतीय सामाजिक जीवन का स्वरूप दोनों की मूल पिण्ड में जमीन-आसमान जितना अंतर है। समाज समरस रहना चाहता है और राजनीति समाज को जातियों में विभाजित करना चाहती है। किसी भी परिवार, समाज और राष्ट्र का सशक्तिकरण सदैव समरस एवं संगठित स्वरूप से होता है। विभाजन से परिवार और समाज ऊंचाई के रास्ते पर कभी नहीं जाता। विभाजन का यह सूत्र ही अंग्रेजी शासन की शक्ति था। 'डिवाइड एंड रूल'। विभाजन के विदेशी षड्यंत्रों के चलते भारत ने कितनी त्रासदियां झेली हैं। उनका विवरण इतिहास के पन्नों में भरा पड़ा है। फिर भी कुछ राजनीतिक शक्तियां व्यक्तिगत स्वार्थ के चलते भारतीय समाज में जातीय विभाजन का एजेण्डा चला रहीं हैं। सामाजिक विभाजन की इस राजनीति के पीछे कौन है? और यह किसका हित संवर्धन करेंगी? इस प्रश्न का उत्तर भविष्य के गर्भ में है। ■

स्वत्व आधारित विदेश नीति का प्रभाव

डॉ. अरुण प्रकाश
विचारक एवं लेखक

आज विश्व गत वर्षों तुलना में अधिक अस्थिर है। श्रेष्ठता का दंभ व दोहन की नीति पकड़े समर्थ देशों के कर्मों की यही परिणति होनी थी। हालांकि, यह अशुभ संकेत नहीं है। जब वर्षों की जमी धूल पर झाड़ू लगती है तो खूब गुबार उठता है, लेकिन यह स्वच्छता के लिहाज से शुभ संकेत होता है। इस अस्थिरता के बहाने विश्व जो करवट ले रहा है उसका आकार भारतीय दृष्टि के अनुरूप होगा। विश्व में दिख रही अस्थिरता, वास्तव में पावर सेंटर का विपर्यय है। लेकिन, इस बार महज पावर सेंटर ही नहीं बदलेगा, नियमन का तरीका भी बदल रहा है, अंतरराष्ट्रीय संबंधों को देखने की दृष्टि भी बदल रही है। क्योंकि, विश्व ने उन स्वघोषित पावर सेंटर की अति महत्वाकांक्षा व आत्मश्लाघा का परिणाम देख लिया है।

आज जब विश्व के पास स्थापित धारणाएं हैं। प्रेम और घृणा के लिए तय चेहरे हैं। वे स्थितियां नहीं देखते, उनके कर्म नहीं देखते, चेहरे देखते हैं। जिसे घृणा के लिए चुना गया है, उसके हर कर्म घृणित होंगे। जिसे प्रेम के लिए चुना गया है, उसके अपराध भी यज्ञ सा पावन हो जाते हैं। जबकि, भारत ने किसी भी स्थिति में किसी की धारणा को प्रोत्साहित नहीं किया है। भारत ने अपनी पारमिता दृष्टि से विश्व को देखा है, उसे ही प्रोत्साहित किया है।

पिछले एक दशक में भारत की विदेश नीति इस तरह से बदली है कि विश्व के किसी भी हिस्से में हो रहे संघर्ष में भारत सर्वाधिक विश्वस्त मध्यस्थ के रूप में देखा जाता है। किसी देश के लिए सामान्य बात नहीं है कि वह अपनी भौगोलिक सीमाओं व महत्वाकांक्षाओं के लिए प्रतिबद्ध होकर भी, सर्वतोभद्र का भाव बनाये रखे।

स्वत्व का भाव, स्व में सर्व देखना और सर्व में स्व का साक्षात करना भारत का अनूठा चिंतन है। पूरे पश्चिम व अरब का कबीलाई उद्विकास एक 'प्रॉमिस लैंड' से बंधा है जबकि भारत ने अपनी संकल्पना में ही 'विश्ववारा' होने का गौरव जीया है। यही कारण है कि विश्व के विकासशील देश भारत पर अधिक भरोसा कर सकते हैं।

हालांकि भारतीय विदेश नीति एक लंबे समय तक आत्मविस्मृत की स्थिति में रही है। और इस दौरान उससे कुछ भी मनवाने के लिए उसके मूल्य की दुहाई तो दी जाती थी लेकिन शायद ही भारत ने कभी अपने मूल्य के अनुरूप निर्णय लिए हों और संबंधों को प्रतिष्ठित किया हो। पिछले एक दशक में भारत की विदेश नीति इस तरह से बदली है कि विश्व के किसी भी हिस्से में हो रहे संघर्ष में भारत सर्वाधिक विश्वस्त मध्यस्थ के रूप में देखा जाता है। किसी देश के लिए सामान्य बात नहीं है कि वह अपनी भौगोलिक सीमाओं व महत्वाकांक्षाओं के लिए प्रतिबद्ध होकर भी, सर्वतोभद्र का भाव बनाये रखे।

भारत ने आपद काल में भी नागरिक भेद किए बिना सब को हर संभव सहयोग उपलब्ध कराया जबकि आपद काल में ही धर्म की परख होती है। ट्रेड व टेक्नोलॉजी पर केंद्रित हो चुके वैश्विक कूटनीतिक संबंधों को भारत ने अपने मूल्यों से नया आयाम दिया है। हमने

देखा है कि ट्रेड और टेक्नोलॉजी आधारित वैश्विक संबंध कम स्थिर व अधिक महत्वाकांक्षी होते हैं और उनमें सामूहिक संघर्ष की संभावना हमेशा रहती है। ऐसे संबंध क्षणिक लाभ के लिए तो अच्छे हैं लेकिन वैश्विक स्थिरता और दूरगामी संबंधों के लिए यह अच्छे नहीं होते।

जलवायु संकट, कोविड संकट, वैश्विक सप्लाई चेन संकट और कर्ज संकट, भू-राजनीतिक संकट और हाल के दिनों में सामने आए खाद्य और ऊर्जा संकटों ने अर्थव्यवस्थाओं विशेष रूप से विकासशील अर्थव्यवस्थाओं को उथल-पुथल में डाला हुआ है। तब भारत ने वैश्विक स्तर पर अपनी निरपेक्ष व मानवतावादी व्यापार नीतियों और शांति प्रतिबद्धता से अप्रतिम उपस्थिति दर्ज की है। अन्य समर्थ देशों के अपने आग्रह व आकांक्षाओं को पोषित करने से इतर भारत ने हमेशा मूल्यों, उचित आवश्यकताओं, स्थिर बाजार व सैन्य निरपेक्षता को संबोधित किया है। भारत ने जी 20 के आयोजन से भी विश्व को एक नया संदेश दिया है कि शक्ति का सदुपयोग कैसे किया जाता है और नेतृत्व की सही परिभाषा क्या है। इससे उन देशों के प्रोपेगेंडा पर प्रहार हुआ है जिन्हें अपना आंगन ही विश्व लगता है। यह भारत के भरोसे का ही प्रमाण है की दुनिया की सर्वाधिक विकासशील आबादी वाला क्षेत्र अफ्रीका संघ, जी 20 का हिस्सा बना।

विश्व में भारत की नेतृत्वकारी भूमिका का लाभ उठाने के लिए भारत के प्राचीन ज्ञान और आध्यात्मिकता का उपयोग करने की आवश्यकता है, इसे अब विश्व स्वीकारने लगा है। भारत की स्वत्व आधारित विदेश नीति न सिर्फ भारत के महत्व को बढ़ा रही है बल्कि विश्व में हो रहे शक्ति विपर्यय के बीच एक समरस, सम्यक और समर्थ नेतृत्व की पताका भी फहरा रही है।

भारत ने वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा के बदले परस्परता को प्रतिष्ठित करने में अपने मूल्यों को खूब सदुपयोग किया है। योग की वैश्विक स्वीकार्यता के बाद कोरोना महामारी के समय हाथ मिलाने के बजाय नमस्ते करने का चलन शुरू हुआ। यह सब जैसे भारत के लिये अपने सॉफ्ट पावर को व्यवस्थित व सांस्थानिक तरीके से लागू करने की पूर्वपीठिका बने। मंच पर जो विषय उठाये जा सकते हैं, उनको लेकर भारत में परंपरागत विमर्श व दृष्टि रही है जो कि विश्व के लिए किसी वरदान से कम नहीं है। क्योंकि, यह सब वर्षों से अभ्यासित व आजमाये हुये मूल्य हैं।

भारत ने अपनी गुटनिरपेक्ष प्रतिबद्धताओं, लोकतांत्रिक मूल्यों, नैतिकता और लोकाचार, शैक्षिक समझौतों, कलाकारों व विद्वानों, कला और वास्तुकला, सांस्कृतिक कार्यक्रमों, आयुर्वेद, पर्यटन, खेल, स्थानीय उत्पादों को बढ़ावा देने के साथ ही भारतीय विदेश नीति में सॉफ्ट पावर और सांस्कृतिक कूटनीति पर अधिक ध्यान केंद्रित किया है। इसी के साथ ही सांस्कृतिक विनिमय व अकादमिक राजनय जैसी अवधारणाओं को बल मिला है। यह सब वह क्षेत्र हैं जहां भारत को सर्वस्वीकार्य व सदियों पुरानी बढ़त हासिल है। विश्व में भारत की नेतृत्वकारी भूमिका का लाभ उठाने के लिए भारत के प्राचीन ज्ञान और आध्यात्मिकता का उपयोग करने की आवश्यकता है, इसे अब विश्व स्वीकारने लगा है। भारत की स्वत्त्व आधारित विदेश नीति न सिर्फ भारत के महत्व को बढ़ा रही है बल्कि विश्व में हो रहे शक्ति विपर्यय के बीच एक समरस, सम्यक और समर्थ नेतृत्व की पताका भी फहरा रही है। यह बहुत संभव है कि ईर्ष्यावश अनेक देश भारत को इस रूप में न स्वीकारें लेकिन वह भारत की नीतियों को नाम बदलकर, पर्याय बदलकर खुद भी विदेश नीति में आजमा रहे हैं और अधिक गतिशील व सुरक्षित भविष्य की ओर बढ़ रहे हैं। ■

कृत्रिम मेधा : खतरे अनेक पर संभावनाएं अपार

प्रो. (डॉ.) अनिल कुमार निगम
वरिष्ठ पत्रकार

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का भविष्य क्या होगा? रचनात्मक होगा यह सहांरक इस पर वैश्विक स्तर पर सकारात्मक और नकारात्मक चर्चा जारी है। क्योंकि एआई के प्राथमिक चरण से खतरनाक सिद्ध होने की आहट आने लगी है। इसलिए इसके संभावित खतरे को लेकर एआई के गॉडफादर कहे जाने वाले जेफ्री हिंटन ने एआई को दुनिया के लिए क्लाइमेट चेंज से ज्यादा खतरनाक बताया।

आज मानव जीवन का कोई भी पक्ष आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) यानि कृत्रिम मेधा से अछूता नहीं है। एआई हमारे जीवन का अहम हिस्सा बन चुका है। 23 नवंबर 2022 को ओपन एआई कंपनी द्वारा चैट जीपीटी लांच करने और इसके जवाब में गूगल कंपनी द्वारा जेनेसिस चैट बोट लॉन्च करने की खबर आने के बाद इस पर चर्चा का बाजार अत्यधिक गरमा गया है। पहले से ही मीडिया में दखल दे चुका एआई अब नए स्वरूप में जहां पत्रकारिता के क्षेत्र में एक मददगार के तौर पर उभरा है वहीं उसने पत्रकारों के समक्ष अनेक प्रकार की चुनौतियां भी पैदा कर दी हैं।

वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम की एक रिपोर्ट के अनुसार, "एआई और टेक्नोलॉजी की वजह से अगले पांच साल में लगभग 8.3 करोड़ लोगों की नौकरियां चली जाएंगी।" निःसंदेह, इस बात का असर मीडिया जगत पर भी पड़ने लगा है। आज इसके चलते पत्रकारों के कार्यों में कुशलता एवं क्षमता बढ़ी है और काम करने की गति तेज हो गई है लेकिन एआई का पत्रकारिता जगत पर नकारात्मक प्रभाव भी पड़ रहा है। आज एआई के चलते अनेक प्रकार के खतरे पैदा हो गए हैं, और भविष्य में इसके और अधिक खतरे पैदा भी हो सकते हैं।

चैट जीपीटी आने के पूर्व से मीडिया में अल्फाकोड, हाईपर राइट, गिटहब, कोपायलट, सिंथेसिया, स्टेबल डिफ्यूजन, मिडजर्नी जैसे प्रोग्राम का इस्तेमाल हो रहा है। इनका प्रयोग कंटेंट, वीडियो, तस्वीरों अथवा टेक्स्ट को तैयार करने में किया जाता है। ये संपादन करने, शीर्षक लगाने, संक्षिप्तीकरण करने और हाईलाइटर निकालने में मदद करता है। इसके अलावा ये पैराग्राफ बनाने के साथ-साथ समाचार-पत्रों और पत्रिकाओं के प्रस्तुतीकरण को अधिक आकर्षक बनाता है।

नवंबर 2022 में चैट जीपीटी लॉन्च होने के बाद मार्च 2023 में ऐलन लेवी ने एआई संचालित जीपीटी न्यूज चैनल लॉन्च कर दिया और इस चैनल को समाचारों की दुनिया का गेम चेंजर कहा गया। दिलचस्प यह है कि इस चैनल में कोई मानव रिपोर्टर नहीं है। इस चैनल में एआई के माध्यम से दुनिया भर के स्रोतों को स्कैन कर खबरें, लेख और फीचर तैयार किए जाते हैं। खबरों के संपादन, एंकरिंग जैसे सभी कार्य एआई ही करता है। इसके पूर्व वर्ष 2018 में चीन की न्यूज एजेंसी शिन्हुआ ने अपना पहला एआई न्यूज एंकर लॉन्च किया। चीन के

बाद कुवैत और रूस ने भी एआई एंकर लांच किए और भारत में आज तक न्यूज चैनल ने अप्रैल 2023 में सना एआई न्यूज एंकर लांच कर दिया।

आज एआई मीडिया में काम करने वाले पत्रकारों एवं संस्थानों की अच्छा कंटेंट तैयार करने में बहुत मदद कर रहा है। इससे काम में काफी सहजता भी आई है। आज एआई की सोशल मीडिया में भी अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका हो गई है। आज फेसबुक, यूट्यूब, इंस्टाग्राम, स्नैप चैट और एक्स जैसे सोशल मीडिया प्लेटफार्म अपने लाभ को बढ़ाने की बाबत कंटेंट जनरेशन से लेकर एमआईएस तक को मैनेज करने के लिए एआई टूल्स का इस्तेमाल कर रहे हैं।

चैट जीपीटी के आने के बाद मीडिया संस्थान और वहां पर काम करने वाले पत्रकार एवं गैर पत्रकार कर्मचारी अनेक प्रकार की चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। ऐसे कर्मचारियों का संख्याबल कम करने की प्रक्रिया चल रही है और भविष्य में अनेक कर्मचारियों की नौकरियां जा सकती हैं। गौरतलब है कि माइक्रोसॉफ्ट जैसी कंपनियां और अनेक कॉरपोरेट संस्थान मीडिया संस्थानों के कंटेंट का प्रयोग करने और नया कंटेंट जनरेट करने के लिए कंटेंट क्रिएटर अथवा कंटेंट लेखकों को नौकरी पर रखती थीं। लेकिन एआई तकनीक का इस्तेमाल करने के चलते माइक्रोसॉफ्ट कंपनी ने अपने 50 न्यूज प्रोड्यूसरों की छंटनी कर दी। इसी तरह वर्ष डायच वेले में प्रकाशित एक रिपोर्ट के अनुसार, यूरोप के सबसे बड़े पब्लिकेशन हाउस स्प्रिंगर ने भी संपादकीय में काम करने वालों की संख्या में कटौती की है।

उल्लेखनीय है कि चैट जीपीटी लॉन्च होने के बाद इसका जवाब देने की तैयारी गूगल कर रहा है। खबर है कि वह बाजार में जेनेसिस लेकर आएगा। यह अपने ऐप में कौन से फीचर लेकर आएगा, इसका पता तो इसके लॉन्च होने के बाद ही मालूम होगा। दिलचस्प है कि विश्व के प्रमुख समाचार-पत्रों वाशिंगटन पोस्ट, वाल स्ट्रीट जर्नल, न्यूयॉर्क टाइम्स जैसे

आज एआई मीडिया में काम करने वाले पत्रकारों एवं संस्थानों की अच्छा कंटेंट तैयार करने में बहुत मदद कर रहा है। इससे काम में काफी सहजता भी आई है। आज एआई की सोशल मीडिया में भी अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका हो गई है। आज फेसबुक, यूट्यूब, इंस्टाग्राम, स्नैप चैट और एक्स जैसे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म अपने लाभ को बढ़ाने की बाबत कंटेंट जनरेशन से लेकर एमआईएस तक को मैनेज करने के लिए एआई टूल्स का इस्तेमाल कर रहे हैं।

अखबारों ने जेनेसिस में अपनी रुचि जाहिर की है। यही नहीं एसोएिएटेड प्रेस ने तो बाकायदा चौट जीपीटी को अपने वर्ष 1985 के बाद एकत्र कंटेंट के इस्तेमाल की भी अनुमति दे दी है।

यहां अहम सवाल यह भी है कि क्या एआई पत्रकारों द्वारा किए जाने वाले सभी कार्यों को कर सकेगा? क्या एआई मानवीय संवेदनाओं पर आधारित खबरों को कवर कर सकेगा? क्या एआई खबरों के विभिन्न ऐंगिल तय करने की क्षमता रखता है? सवाल यह भी है कि क्या एआई समय, परिस्थितियों और विभिन्न भौगोलिक स्थितियों में खुद निर्णय ले सकेगा? इस संबंध में सवाल अनेक हैं लेकिन इन सबका जवाब एक ही है कि वह चैट जीपीटी हो या जेनेसिस, वह मानव की भूमिका को कम कर सकता है लेकिन वह पत्रकारों की भूमिका को खत्म नहीं कर सकेगा। ऐसे में पत्रकारों एवं गैर पत्रकार कर्मचारियों को बदली हुई परिस्थितियां और तकनीक के अनुरूप खुद को तैयार एवं अपडेट करना होगा ताकि कोई भी तकनीक उसे अप्रासंगिक न बना दे।

प्रकृति के साथ सामंजस्य जरूरी

प्रमोद भार्गव
साहित्यकार एवं वरिष्ठ पत्रकार

उत्तराखंड के उत्तरकाशी में निर्माणाधीन सुरंग का एक हिस्सा भूमि में धंस जाने के कारण सुरंग बना रहे 40 मजदूर उसके अंदर फंस गए। यह हादसा उत्तरकाशी से 55 किमी दूर बन रही सिल्क्यारा-पोलगांव निर्माणाधीन सुरंग के भीतर भूस्खलन के कारण सुरंग का 15 मीटर हिस्सा जमीन में धंस जाने के कारण घटित हुआ। सुरंग का निर्माण उत्तरकाशी जिले में धरासू-यमुनोत्री राष्ट्रीय राजमार्ग पर चार धाम यात्रा को हर मौसम में सुगम बनाने की दृष्टि से किया जा रहा है। सुरंग की लंबाई करीब साढ़े चार किलोमीटर है। इसे लगभग चार किमी बना भी लिया गया है। सुरंग के संपूर्ण होने के बाद यात्रियों की 26 किमी दूरी कम हो जाएगी। इससे समय बचत के साथ ही सेवा सामाग्रियों की पहुंच आसान हो जाएगी। नतीजतन श्रद्धालुओं और पर्यटकों की संख्या बढ़ेगी और स्थानीय लोगों को रोजगार 12 माह मिलने लग जाएगा। परंतु इस हादसे के बाद एक बार फिर न केवल उत्तराखंड, बल्कि हिमाचल प्रदेश के साथ अन्य पहाड़ी राज्यों में चल रहे विकास कार्यों के परिप्रेक्ष्य में पहाड़ों को काटकर किए जा रहे निर्माण कार्यों पर प्रश्नचिन्ह लग गया है। क्योंकि इस घटना के पहले भी इस तरह के छोट-बड़े हादसे हो चुके हैं।

समूचे हिमालय क्षेत्र में बीते एक दशक से पर्यटकों के लिए सुविधाएं जुटाने के परिप्रेक्ष्य में जल विद्युत संयंत्र और रेल परियोजनाओं समेत अन्य विकास परियोजनाओं की बाढ़ आई हुई है। इन योजनाओं के लिए हिमालय क्षेत्र में रेल गुजारने और कई हिमालयी छोटी नदियों को बड़ी नदियों में डालने के लिए सुरंगें निर्मित की जा रही हैं। बिजली परियोजनाओं के लिए भी जो संयंत्र लग रहे हैं, उसके लिए भी हिमालय को खोखला किया जा रहा है। इस आधुनिक औद्योगिक और प्रौद्योगिकी विकास का ही परिणाम है कि आज हिमालय ही नहीं, हिमालय के शिखर भी दरकने लगे हैं, जिन पर हजारों साल से मानव बसावटें अपने ज्ञान-परंपरा के बूते जीवन-यापन करने के साथ हिमालय और वहां रहने वाले अन्य जीव-जगत की भी रक्षा करते रहे हैं। हिमालय और पृथ्वी सुरक्षित बनी रहे, इस दृष्टि से कृतज्ञ मनुष्य ने अथर्ववेद में लिखे पृथ्वी-सूक्त में अनेक प्रार्थनाएं की हैं। यह सूक्त राष्ट्रीय अवधारणा एवं वसुधैव कुटुंबकम की भावना को विकसित, पोषित एवं फलित करने का संदेश देता है। जिससे मनुष्य नीति, धर्म और प्रकृति से जुड़ा रहे। लेकिन हमने कथित भौतिक सुविधाओं के लिए अपने आधार को ही नष्ट करने का काम आधुनिक विकास के बहाने कर दिया। उत्तरकाशी हो या जोशीमठ इसी अनियोजित विकास की परिणति है।

नाजुक पारिस्थितिकी तंत्र वाले पहाड़ों, गंगा और उसकी सहायक नदियों के अस्तित्व से छेड़छाड़ जानबूझकर बड़ी आपदा का आमंत्रण है। इसलिए विकास और हिमालयी राज्यों के पारिस्थितिकी तंत्र में सामंजस्य की अपरिहार्य आवश्यकता है।

उत्तराखंड में गंगा और उसकी सहयोगी नदियों पर करीब एक लाख तीस हजार करोड़ की जल विद्युत परियोजनाएं निर्माणाधीन हैं। इन संयंत्रों की स्थापना के लिए लाखों पेड़ों को काटने के बाद पहाड़ों को निर्ममता से छलनी किया जाता है। और नदियों पर बांध निर्माण के लिए बुनियाद हेतु गहरे गड्ढे खोदकर खंभे व दीवारें खड़े किए जाते हैं। कई जगह सुरंगे बनाकर पानी की धार को संयंत्र के पंखों पर डालने के उपाय किए गए हैं। इन गड्ढों और सुरंगों की खुदाई में ड्रिल मशीनों से जो कंपन होता है, वह पहाड़ की परतों की दरारों को खाली कर देता है और पेड़ों की जड़ों से जो पहाड़ गुथे होते हैं, उनकी पकड़ भी इस कंपन से ढीली पड़ जाती है। नतीजतन तेज बारिश के चलते पहाड़ों के ढहने और हिमखंडो के टूटने की घटनाएं पूरे हिमालय क्षेत्र में लगातार बढ़ जाती हैं। यही नहीं कठोर पत्थरों को तोड़ने के लिए भीषण विस्फोट कर हिमालय को हिलाया जा रहा है। गोया, प्रस्तावित सभी परियोजनाओं को यदि साकार करने के उपाय

जारी रहते हैं तो हिमालय का क्या हश्र होगा कहना मुश्किल है?

हिमालय में अनेक रेल परियोजनाएं अभी भी निर्माणाधीन हैं। सबसे बड़ी रेल परियोजना उत्तराखंड के चार जिलों (टिहरी, पौड़ी, रुद्रप्रयाग और चमोली) के तीस से ज्यादा गांवों को भी विकास की कीमत चुकानी पड़ रही है। छह हजार परिवार विस्थापन के दायरे में आ गए हैं। रुद्रप्रयाग जिले के मरोड़ा गांव के सभी घर दरक गए हैं। रेल विभाग ने इनके विस्थापन की तैयारी कर ली है। यह तो शुरुआत है, लेकिन ये विकास इसी तरह जारी रहते हैं तो बर्बादी का मंजर अंतहीन होगा। दरअसल ऋषिकेश से कर्णप्रयाग रेल परियोजना 125 किमी लंबी है। इसके लिए सबसे लंबी सुरंग देवप्रयाग से जनासू तक बनाई जा रही है, जो 14 किमी से ज्यादा लंबी है। केवल इसी सुरंग का निर्माण बोरिंग मशीन से किया जा रहा है। बांकी जो 15 सुरंगे बन रही हैं, उनमें ड्रिल तकनीक से बारूद लगाकर विस्फोट किए जा रहे हैं। इस परियोजना का दूसरा चरण कर्णप्रयाग से जोशीमठ की बजाय अब पीपलकोटी तक होगा। भूगर्भीय सर्वेक्षण के बाद रेल विकास निगम ने जोशीमठ क्षेत्र की भौगोलिक संरचना को परियोजना के अनुकूल नहीं पाया था। इसलिए अब इस परियोजना का अंतिम पड़ाव पीपलकोठी कर दिया है। जो एक अच्छी पहल है। इसी तरह अन्य जिलों के श्रीनगर, मलेथा, गौचर ग्रामों के नीचे से सुरंगें निकाली जा रही हैं। इनमें किए जा रहे धमाकों से घरों में दरारें आ गई हैं। वैसे भी पहाड़ी राज्यों में घर ढलानयुक्त जमीन पर ऊंची नींव देकर बनाए जाते हैं। जो निर्माण के लिहाज से ही कमजोर होते हैं। ऐसे में विस्फोट इन घरों को ओर कमजोर कर रहे हैं। हिमालय की अलकनंदा नदी घाटी ज्यादा संवेदनशील है। रेल परियोजनाएं इसी नदी से सटे पहाड़ों के नीचे और ऊपर निर्माणाधीन हैं।

दरअसल उत्तराखंड के भूगोल का मानचित्र बीते डेढ़ दशक में तेजी से बदला है। ऋशिकेश-कर्णप्रयाग परियोजना ने जहां विकास और बदलाव की ऊंची छलांग लगाई है, वहीं इन योजनाओं ने खतरों की नई सुरंगें भी खोल दी हैं। उत्तराखंड के सबसे बड़े पहाड़ी शहर श्रीनगर के नीचे से भी सुरंग निकल रही है। नतीजतन धमाकों के चलते 150 से ज्यादा घरों में दरारें आ गई हैं। रेल परियोजनाओं के अलावा यहां बारह हजार करोड़ रुपये की लागत से बारहमासी मार्ग निर्माणाधीन हैं। सिलक्यारा-पोलगांव सुरंग भी इसी उद्देश्य से बनाई जा रही है। इन मार्गों पर पुलों के निर्माण के लिए भी सुरंगें बनाई जा रही हैं, तो कहीं घाटियों के बीच पुल बनाने के लिए मजबूत आधार स्तंभ बनाए जा रहे हैं। हालांकि

मार्गों पर पुलों के निर्माण के लिए भी सुरंगें बनाई जा रही हैं, तो कहीं घाटियों के बीच पुल बनाने के लिए मजबूत आधार स्तंभ बनाए जा रहे हैं। हालांकि ये सड़कें सेना के लिए अत्यंत उपयोगी हैं। सैनिकों का हिमालयी क्षेत्र में इन सड़कों के बन जाने से चीन की सीमा तक पहुंचना आसान हो गया है। लेकिन पर्यटन को बढ़ावा देने के लिहाज से जो निर्माण किए जा रहे हैं, उन पर पुनर्विचार की जरूरत है।

ये सड़कें सेना के लिए अत्यंत उपयोगी हैं। सैनिकों का हिमालयी क्षेत्र में इन सड़कों के बन जाने से चीन की सीमा तक पहुंचना आसान हो गया है। लेकिन पर्यटन को बढ़ावा देने के लिहाज से जो निर्माण किए जा रहे हैं, उन पर पुनर्विवार की जरूरत है। इस उपाय से समय और पैसा तो बचेंगे, लेकिन पहाड़ नष्ट हो जाएंगे।

हिमालय में हाल ही में केन-बेतवा नदी जोड़ों अभियान की तर्ज पर उत्तराखंड में देश की पहली ऐसी परियोजना पर काम शुरू हो गया है, जिसमें हिमनद (ग्लेशियर) की एक धारा को मोड़कर बरसाती नदी में पहुंचाने का प्रयास हो रहा है। यदि यह परियोजना सफल हो जाती है तो पहली बार ऐसा होगा कि किसी बरसाती नदी में सीधे हिमालय का बर्फीला पानी बहेगा। हिमालय की अधिकतम ऊंचाई पर नदी जोड़ने की इस महापरियोजना का सर्वेक्षण शुरू हो गया है। इस परियोजना की विशेषता है कि पहली बार उत्तराखंड के गढ़वाल मंडल की एक नदी को कुमाऊं मंडल की नदी से जोड़कर बड़ी आबादी को पानी उपलब्ध कराया जाएगा। यही नहीं एक बड़े भू-भाग को सिंचाई के लिए भी पानी मिलेगा। 'जल जीवन मिशन' के अंतर्गत इस परियोजना पर काम किया जा रहा है। लेकिन इनके बनने के क्रम में पहाड़ों के पारिस्थितिकी को भी ध्यान में रखना होगा। हिमालय के लिए बांधों के निर्माण पहले भी खतरा बनकर कई बार बाढ़, भू-स्खलन और केदरनाथ जैसी प्रलय की आपदा का कारण बन चुके हैं।

उत्तराखंड भूकंप के सबसे खतरनाक जोन-5 में आता है। उत्तराखंड और हिमाचल में बीते आठ साल में 130 बार से ज्यादा छोटे भूकंप आए हैं। पहाड़ी राज्यों में जल विद्युत और रेल परियोजनाओं ने बड़ा नुकसान पहुंचाया है। पर्यावरणविद और भूवैज्ञानिक भी हिदायत देते रहे हैं कि गंगा और उसकी सहायक नदियों की अविरल धारा बाधित हुई तो गंगा के साथ ही हिमालय की अन्य नदियां भी अस्तित्व के संकट से जूझेंगी। इसलिए विकास और हिमालयी राज्यों के पारिस्थितिकी तंत्र में सामंजस्य बिठाने की अपरिहार्य आवश्यकता है। ■

इजराइल गाजा शांति वार्ता में कतर का प्रयास

विक्रम उपाध्याय
वरिष्ठ पत्रकार

यमन, लेबनान और अफगानिस्तान मामले में क़तर की मध्यस्थता काफी सफल रही है। संवाद और सहयोग के प्रति इसकी अटूट प्रतिबद्धता ने कतर को दुनिया भर में पहचान और सम्मान दिलाया है। विशेषज्ञों का मानना है कि अरब के इस छोटे से किंतु अमीर देश ने उल्लेखनीय मध्यस्थता प्रयासों से विभिन्न क्षेत्रीय संघर्षों को सफलतापूर्वक हल किया है, जिससे मध्य पूर्व में स्थिरता बढ़ी है। क़तर ने आतंकवाद और उग्रवाद से निपटने के उद्देश्य से अंतरराष्ट्रीय पहल का सक्रिय रूप से समर्थन किया है। इसी क्रम में इजराइल और गाजा के बीच युद्ध विराम और इजराइली बंधकों को छुड़ाने के लिए कतर कमर कस चुका है।

हमास और इजराइल के बीच यदि कोई शांति की मजबूत कोशिश कर रहा है तो वह कतर है, क्योंकि कतर ही यह दावा रहा है कि हमास शीघ्र ही उन बंधकों को छोड़ देगा, जिन्हें उसके लड़ाकों ने 7 अक्टूबर को इजरायल पर हमला कर 240 लोगों को बंधक बना लिया था। हालांकि बंधकों को छोड़ने की शुरुआत हो चुकी है। दुनिया कतर के दावे पर भरोसा भी कर रही है। इसका कारण भी है, क्योंकि पिछले एक दशक में कतर की कूटनीति असाधारण रही है। उसने खुद को अंतरराष्ट्रीय क्षेत्र में एक उभरती ताकत के रूप में स्थापित किया है। यमन, लेबनान और अफगानिस्तान मामले में कतर की मध्यस्थता काफी सफल रही है। संवाद और सहयोग के प्रति इसकी अटूट प्रतिबद्धता ने कतर को दुनिया भर में पहचान और सम्मान दिलाया है। विशेषज्ञों का मानना है कि अरब के इस छोटे से किंतु अमीर देश ने उल्लेखनीय मध्यस्थता प्रयासों से विभिन्न क्षेत्रीय संघर्षों को सफलतापूर्वक हल किया है, जिससे मध्य पूर्व में स्थिरता बढ़ी है। क़तर ने आतंकवाद और उग्रवाद से निपटने के उद्देश्य से अंतरराष्ट्रीय पहल का सक्रिय रूप से समर्थन किया है।

गाजा में शांति की पहल अमेरिका में इजरायली राजदूत माइकल हर्जोग ने हाल ही में यह उम्मीद जताई है कि आने वाले दिनों में सभी बंधकों की रिहाई संभव है। उनके इस विश्वास का आधार भी मध्यस्थता कर रहे कतर का यह भरोसा है कि समझौता उनकी पहुंच के भीतर है। इसमें अमेरिका की मध्यस्थता भी शामिल है। कतर के प्रधानमंत्री मोहम्मद बिन अब्दुलरहमान अल-थानी ने 19 नवंबर को यह दावा किया कि केवल मामूली व्यावहारिक और तार्किक बाधाएं बची हैं और और हम किसी समझौते पर पहुंचने के काफी करीब पहुंच चुके है। यानि हमास द्वारा बंधक बनाए गए लोगों की रिहाई सुनिश्चित करने के लिए कतर मध्यस्थता प्रयासों में अग्रणी भूमिका निभा रहा है। कतर उस वार्ता में भी शामिल था, जिसके कारण अब तक चार लोगों को रिहा किया गया है। जिनमें अमेरिकी मां -बेटी और दो बुजुर्ग इजरायली महिलाएं शामिल थीं। वैसे वैसे हमास के नेताओं का कतर से सीधा संबंध भी रहा है। हमास का दोहा में कार्यालय भी रहा है। 2011–2012 में कतर ने प्रतिद्वंद्वी फिलिस्तीनी गुट फतेह और हमास के बीच भी मध्यस्थता कराई थी, वह भी संयुक्त राज्य अमेरिका की इच्छा के विरुद्ध। अमेरिका और तालिबान के बीच संधि तालिबान और अफगान सरकार के बीच कतर ने ही सितंबर 2020 में ऐतिहासिक शांति वार्ता का आयोजन किया था। दोहा में हुई वार्ता में ही यह तय किया गया कि अफगानिस्तान की सत्ता एक

साझा सरकार को सौंप दी जाएगी। दशकों से चल रहा युद्ध समाप्त किया जाएगा। साथ ही 2001 से अफगानिस्तान में लड़ाई लड़ रही अमेरिकी सेना वहां से निकल जाएगी। हालांकि कतर वार्ता के साथ ही अमेरिकी सेना की वापसी शुरू हो गयी और तत्कालीन अफगान अधिकारियों और नागरिकों के खिलाफ तालिबान ने युद्ध छेड़ दिया और उसमे गंभीर हिंसा हुई।

यमन में आंशिक सफलता : 2003 के बाद यमन में गृह युद्ध छिड़ गया था। सादा के उत्तरी प्रांत में जायदी शिया विद्रोही पूरे क्षेत्र को अस्थिर करने की धमकी दे रहे थे। युद्ध विराम समझौते हुए, लेकिन सभी विफल रहे। मई 2007 में कतरी विदेश मंत्रालय ने एक प्रतिनिधिमंडल भेज करत्तरी यमन में हौथी नेताओं से बातचीत की और जून 2007 में, यमन सरकार और हौथी विद्रोही के बीच एक संयुक्त युद्ध विराम समझौते की घोषणा हो गई। फरवरी 2008 को दोहा में कतर के साथ एक शांति समझौते पर हस्ताक्षर किये गये। हालांकि समझौते पर हस्ताक्षर होने के कुछ ही समय बाद लड़ाई फिर से शुरू हो गई।

लेबनान में मिली सफलता : जुलाई 2006 में इजराइल-हिजबुल्लाह युद्ध के बाद, लेबनान में राजनीतिक संघर्ष छिड़ गया। शुरुआत में बेरूत शहर में लगातार धरना प्रदर्शन से हुआ। 2008 में जब लेबनान के प्रधानमंत्री फ़ौद सिनिओरा ने हिज़्बुल्लाह को खत्म करने का प्रयास किया तो जवाब में हिजबुल्लाह ने पश्चिमी बेरूत के अधिकांश हिस्से पर कब्जा कर लिया। लेबनान एक और गृहयुद्ध की आग में जलने लगा। 2008 में क़तर ने हस्तक्षेप किया। परस्पर विरोधी लेबनानी दलों को दोहा में वार्ता के लिए लाया गया। 21 मई 2008 को दोहा समझौते पर पर हस्ताक्षर हुआ और अठारह महीने का संघर्ष अंततः समाप्त हो गया। कतर पर दोनों पक्षों का अच्छा विश्वास था।

कतर ने एक सफल मध्यस्थ बनने और अपना अंतरराष्ट्रीय रसूख बनाने के लिए अपने विशाल वित्तीय संसाधनों का उपयोग करता रहा है। जैसा कि दारफुर में हुआ जहां क़तर ने दोनों पक्षों को महत्वपूर्ण समझौते के बदले भारी निवेश की पेशकश की। विशेषज्ञों के अनुसार लेबनान में चेकबुक कूटनीति अपनाई गई। कतर अपनी ब्रांडिंग बड़े-बड़े आयोजनों के जरिए करता है। डब्लूटीओ की बैठक, यूनाइटेड नेशंस की कांफ्रेंस, फीफा वर्ल्ड कप और जीकेए वर्ल्ड टूर जैसे महंगे आयोजन क़तर अपनी शान के लिए करता रहता है।

चेक बुक की कूटनीति : कतर ने एक सफल मध्यस्थ बनने और अपना अंतरराष्ट्रीय रसूख बनाने के लिए अपने विशाल वित्तीय संसाधनों का उपयोग करता रहा है। जैसा कि दारफुर में हुआ जहां कतर ने दोनों पक्षों को महत्वपूर्ण समझौते के बदले भारी निवेश की पेशकश की गई। विशेषज्ञों के अनुसार लेबनान में चेकबुक कूटनीति अपनाई गई। कतर अपनी ब्रांडिंग बड़े-बड़े आयोजनों के जरिए करता है। डब्लूटीओ की बैठक, यूनाइटेड नेशंस की कांफ्रेंस, फीफा वर्ल्ड कप और जीकेए वर्ल्ड टूर जैसे महंगे आयोजन क़तर अपनी शान के लिए करता रहता है। ■

उत्सवों और उल्लास का दिसम्बर

नीलम भागी
लेखिका, जर्नलिस्ट, ब्लॉगर, ट्रैवलर

सनातन संस्कृति में पर्व या त्यौहार हमारी विविधता और उत्सवधर्मिता के पर्याय हैं। हमारे प्रत्येक पर्व धर्म और लोक कथाओं के वाहक होने के साथ ही प्रकृति संरक्षण की प्रतिबद्धता के पथ प्रदर्शक भी हैं।

उत्सव, पर्व या त्यौहार का हमारी संस्कृति में विशेष स्थान है। हर ऋतु, हर महीने में कम से कम एक प्रमुख त्यौहार भारतीय संस्कृति की विविधता का पर्याय है। धर्म और लोक कथाओं के बाद उत्सव की उत्पत्ति का महत्वपूर्ण हिस्सा प्रकृति एवं कृषि है। सनातन संस्कृति प्रकृति प्रेमी रही है इसलिए हमारे उल्लास में प्रकृति के परिवर्तन का संरक्षण विविध उत्सवों के जरिए सम्मान रूप में उल्लास से मनाते रहे हैं। इस क्रम में निम्न उत्सव उल्लेखनीय है।

झिड़ी का मेला उत्सव - जम्मू से 22 किमी दूर झिड़ी गांव में उत्तर भारत का सबसे बड़ा किसान मेला, क्रांतिकारी ब्राह्मण किसान, माता वैष्णों के परम भक्त बाबा जित्तो और उनकी बेटी बालरूप कौड़ी बुआ की याद में लगता है। श्रद्धालु बाबा तालाब में स्नान करते हैं। ऐसा माना जाता है कि उसमें नहाने से त्वचा रोग ठीक हो जाते हैं। यहां 500 वर्ष प्राचीन बाबा जित्तो का मंदिर है। इस मेले का मुख्य आकर्षण खेती बाड़ी से जुड़े स्टॉल हैं। दंगल और ग्रामीण खेल हैं। बुआ कौड़ी के लिए गुड़िया लाते हैं। बाबा जित्तो ने उस समय की सामंती व्यवस्था पर सवाल खड़े किए थे। आज सबसे पहले अपने खेत का अनाज बाबा जित्तो को चढ़ाते हैं, बाद में अपने लिए रखते हैं।

कुंभलगढ़ उत्सव - यह कुंभलगढ़ किले में मनाया जाता है। इसमें अलग अलग संस्कृतियों से जुड़े कार्यक्रम को देखने, देशी विदेशी पर्यटक बड़ी संख्या में भाग लेते हैं।

कोणार्क नृत्य महोत्सव - कोणार्क सूर्य मंदिर में पूरे भारत से नर्तक अपनी कलात्मकता दिखाने को एकजुट होते हैं।

अंतरराष्ट्रीय रेत कला महोत्सव - सबसे अधिक ओडिशा के पुरी और चंद्रभागा के तटीय रेत पर कलाकार जटिल कलाकृतियां बनाते हैं। श्री क्षेत्र उत्सव, पुरी की परंपराओं को जीवित करती रेत की कला है।

गलदान नामचोट - लेह लद्दाख में महान विद्वान जे त्सोंगखापा का जश्न मनाते हुए रंगीन दीपक से सर्दी के अंधेरे को रोशन करते हैं।

कोचीन कार्निवल - केरल के शहर में दस दिवसीय उत्सव है। जिसमें संस्कृति और मनोरंजन का अनूठा मेल देखने को मिलता है। मसलन संगीत, रंगारंग जुलूस, पोशाक, मुखौटे लगाए पर्यटक और स्थानीय लोग घूमते हैं।

हॉर्नबिल उत्सव - नागालैंड की 60 प्रतिशत से अधिक आबादी कृषि पर निर्भर है ऐसे में त्यौहार भी खेती के आसपास ही घूमते हैं। ये हॉर्नबिल पक्षी के नाम पर है, जिसके पंख सिर पर लगाते हैं। बहादुर नायकों की प्रशंसा के गीत गाए जाते हैं। तरह तरह के पकवान, लोक नृत्य और कहानियां इस त्यौहार का हिस्सा हैं। इस उत्सव पर नागा संस्कृति देखने के लिए देश विदेश से पर्यटक आते हैं।

कार्तिगाई दीपम - हिन्दू तमिलों, केरल, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, कर्नाटक और श्रीलंका में इस रोशनी के त्यौहार को कार्तिगाई पूर्णिमा कहा जाता है। केरल में इस त्यौहार को त्रिकार्तिका के नाम से जाना जाता है जो देवी कार्तियेनी (चोट्टानिक्कारा अम्मा) भगवती के स्वागत के लिए मनाया जाता है। शेष भारत में, कार्तिक पूर्णिमा अलग तारीख में मनाया जाता है। तमिलनाडु

के नीलगिरी जिले में 'लक्षभा' के नाम से मनाया जाता है। आंध्र प्रदेश तेलंगाना के घरों में कार्तिक मासालु (माह) को बहुत शुभ माना जाता है। स्वामीनारायण संप्रदाय भी इस त्यौहार को बहुत उत्साह से मनाता है। इसी तरह चेन्नई नृत्य एवं संगीत समारोह मध्य दिसम्बर से एक महीने तक चलने वाला उत्सव है। दक्षिण भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विविधता का अनुभव करने देश विदेश से संगीत प्रेमी दर्शक, संगीतकार और कलाकार यहां आते हैं।

विवाह पंचमी - नौलखा मंदिर जनकपुर समेत समूचे नेपाल में राम जानकी की विवाह वर्षगांठ को बहुत हर्ष उल्लास से मनाते हैं। यह प्राचीन काल में मिथिला की राजधानी माना जाता है। यहां के राजा जनक थे। जो मां सीता के पिता थे। यह भगवान राम की ससुराल के नाम से विख्यात है। यहां की भाषा मैथिली, हिन्दी और नेपाली है। यहां पर अयोध्या से बारात आई थी और राम जी और जानकी का विवाह माघ शीर्ष शुक्ल पंचमी को जनकपुरी में संपन्न हुआ था। परिसर के भीतर ही राम जानकी विवाह मंडप है। मंडप के खंभों और दूसरी जगहों को मिलाकर कुल 108 प्रतिमाएं हैं। जानकी मंदिर से सटे राम जानकी विवाह मंडप के चारों ओर छोटे छोटे 'कोहबर' हैं जिनमें सीता राम, माण्डवी भरत, उर्मिला लक्ष्मण एवं श्रुतिकीर्ति शत्रुघ्न की मूर्तियां हैं। मंदिर पगोड़ा शैली में बना हुआ है।

छाऊ झूमर उत्सव (२० से २२ दिसम्बर)- प्रेम, विजय और साहस की कहानियों को जीवंत वेशभूषा में नर्तक लयबद्ध नृत्य से दर्शाता है।

गीता जयंती (22 दिसम्बर) - यह मार्गशीर्ष महीने के शुक्ल पक्ष की एकादशी तिथि को मनाया जाता है। अंतरराष्ट्रीय गीता महोत्सव पर कुरुक्षेत्र में ब्रह्म सरोवर के आस पास 300 से अधिक राष्ट्रीय स्टॉल लगते हैं। यहां के 75 तीर्थों पर इस दौरान गीता पूजन, गीता यज्ञ, अंतरराष्ट्रीय गीता सेमिनार, गीता पाठ, वैश्विक गीता पाठ, संत सम्मेलन आदि मुख्य कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। तीर्थयात्री कुरुक्षेत्र की 48 कोस परिक्रमा करके गीता महोत्सव मनाते हैं। 18 अध्यायों और 700 श्लोकों में चारों वेदों का संक्षिप्त ज्ञान गीता है। यहां एक प्राचीन सरोवर और एक पवित्र अक्षयवट है जो भगवान श्री कृष्ण के गीता उपदेश का एकमात्र साक्षी माना जाता है।

दत्तात्रेय जयंती (26 दिसम्बर) भगवान दत्तात्रेय त्रिगुण स्वरूप यानि ब्रह्मा, विष्णु और शिव तीनों के अंश हैं। इसके अलावा भगवान दत्तात्रेय को गुरु के रूप में पूजा जाता है। भगवान दत्तात्रेय, महर्षि अत्रि और उनकी सहधर्मिणी अनुसूया के पुत्र थे। इनके पिता महर्षि अत्रि सप्तऋषियों में से एक हैं और माता अनुसूया को सतीत्व के रूप में जाना जाता है। राजा कार्तवीर्य अर्जुन सहस्त्रबाहु भगवान दत्तात्रेय के अनन्य भक्तों में से एक हैं। ऐसी मान्यता है कि दत्तात्रेय नित्य सुबह काशी में गंगा स्नान करते हैं। इसी कारण काशी के मणिकर्णिका घाट की दत्त पादुका, दत्त भक्तों के लिए पूजनीय स्थान है। इसके अलावा मुख्य पादुका स्थान कर्नाटक के बेलगाम में स्थित है। देशभर में दत्तात्रेय को गुरु के रूप मानकर उनकी पादुका को नमन किया जाता है। भगवान दत्त के नाम पर दत्त संप्रदाय का उदय हुआ। नृसिंहवाडी दत्ता भक्तों की राजधानी के लिए जाना जाता है। यह कृष्णा और पंचगंगा नदियों के पवित्र संगम पर स्थित है। दक्षिण भारत सहित पूरे देश में इनके अनेक प्रसिद्ध मंदिर हैं। राजस्थान के माउंट आबू के अरबुदा पहाड़ों की 1722 मी. की गुरु शिखर चोटी पर बना भगवान दत्तात्रेय का मंदिर है।

रणथंभौर संगीत और वन्यजीव महोत्सव (27 से 29 दिसम्बर) - राष्ट्रीय उद्यान के हरे भरे जंगल की पृष्ठभूमि में संगीत समारोह का आयोजन होता है।

पचमढ़ी उत्सव (25 से 31 दि०) भारत का सबसे लोकप्रिय प्रकृति की प्रचुरता का आनन्द उत्सव है। संगीत, नृत्य प्रदर्शन, साहसिक गतिविधियां, प्रदर्शनियां यहां की समृद्ध विरासत को दर्शाती है।

मामल्लापुरम नृत्य महोत्सव (25 दि० से 15 जनवरी) - महाबलीपुरम में प्रसिद्ध शास्त्रीय नर्तक भारतनाटयम, कथक, कुचिपुड़ी आदि नृत्य शैलियों का शानदार प्रदर्शन करते हैं। ममल्लपुरम डांस फेस्टिवल (चेन्नई) खुले आकाश के नीचे, नृत्य संगीत, शास्त्रीय और लोक नृत्य, का उत्सव है।

विष्णुपुर महोत्सव (27 से 31 दिसम्बर) - मदनमोहन मंदिर विष्णुपुर के आसपास आयोजित यह महोत्सव हस्तशिल्प, रेशम साड़ी, कपड़ों और मिठाइयों के लिए मशहूर है। शास्त्रीय संगीत के घराने, विष्णुपुर घराने के लिए भी बहुत प्रसिद्ध है।

सनबर्न फेस्टिवल, गोवा (28 से 31 दिसम्बर) - यह इलेक्ट्रॉनिक संगीत नृत्य उत्सव है। भारत में आयोजित यह महोत्सव दुनिया का सबसे बड़ा तीसरा नृत्य महोत्सव बन गया है।

संगीत प्रेमियों के लिए, माउंट आबू विंटर फेस्टिवल, राजस्थान (29 से 31 दि०) यहां लोकनृत्य, संगीत घूमर, गैर और धाप, डांडिया, शामें कव्वाली का आनन्द लिया जाता है।

रण उत्सव (26 दि० से 20 फरवरी, गुजरात) रेगिस्तान में सांस्कृतिक कार्यक्रम गरबा लोक संस्कृति, हस्तशिल्प और गुजराती व्यंजन आदि के लिए प्रसिद्ध है।

हिमाचल हिल्स फेस्टिवल (३० से ३१ दिसम्बर) कड़ाके की ठंड में बोनफायर के चारों ओर मनाया जाने वाला संगीतमय उत्सव है। ■

स्व से अनुप्राणित 'नानी का पिटारा'

देश की संस्कृति आत्मनिर्भरता की पोषक रही है। जिसमें स्वावलंबन की नैसर्गिक चेतना ने सदैव नवाचार का मार्ग प्रशस्त किया है। इसी क्रम में एक नया नाम है 'नानी का पिटारा'। इसके नाम से लेकर स्वाद तक सब में देशज की सुगंध होने के साथ-साथ आज यह महिलाओं के लिए प्रेरणास्रोत भी है। देशज और स्व से परिपूर्ण नानी का पिटारा से जुड़े तमाम पहलुओं पर प्रबंध संपादक मोनिका चौहान ने बात की विनीता बंसल से। प्रस्तुत है बातचीत का संपादित अंश-

हमारी सनातन संस्कृति स्व से अनुप्राणित रही है। स्व की स्वाभाविक चेतना जन-जन में नैसर्गिक रूप में विद्यमान रही है। यही स्वावलंबन का आधार था। भारत में अनादिकाल से गुरुकुल में शिक्षा का स्वरूप आत्मनिर्भरता का था। शिक्षा हो या भक्ति काव्य या नीति शास्त्र प्रत्येक में व्यक्ति को स्वावलंबी बनाने के लिए कर्म का महत्व सहज ही मिल जाता है। इसलिए हमारे पूर्वजों दादी-नानी के अनुभव और प्रेरणादायक कहानियां आदिकाल से वर्तमान तक लाखों के जीवन में उम्मीद की किरण बनी हैं। इसी क्रम में गाजियाबाद की रहने वाली विनीता भी हैं, जिनके उत्पाद ही नहीं, ब्रैंड नेम से भी शुद्धता और देशज की खुशबू आती है। जी हां हम बात कर रहे हैं, विनता के स्टार्टअप "नानी का पिटारा" की। विनीता ने इसकी पृष्ठभूमि के बारे में बात करते हुए कहा कि मैं खुद भोजन प्रेमी हूं, जहां हर भोजन मेरी नानी के अचार और मां की खास रेसिपी के बिना अधूरा था। मैंने अंत में पारंपरिक व्यवसाय में आधुनिकता के तड़के के साथ-साथ भारतीय सांस्कृतिक को पहचान दिलाने की प्रतिबद्धता के साथ कदम बढ़ाया। जिसका परिणाम आज सफलता के रूप में है।

हालांकि शुरुआती दिनों में स्थिति उतनी सहज नहीं थी लेकिन कुछ कर गुजरने की जिद ने आज इस मुकाम पर पहुंचा दिया। इस यात्रा में सबसे कठिन दौर था कोरोना काल का, जहां लॉकडाउन में सभी की तरह मैंने भी वर्क-फ्रॉम-होम के जरिए न केवल इसे विस्तारित किया बल्कि उस दौरान मिले नये आइडिया भी आज के लिए तारणहार भी बने।

नानी का पिटारा के उत्पाद

आम का अचार, आम का हींग वाला अचार, आम की मीठा अचार, आंवले का तड़के वाला अचार, करेले का अचार, नींबू का अचार, चाय मसाला, रायता मसाला, बिरयानी मसाला, छोले मसाला, पाव भाजी मसाला, चाट मसाला, शिकंजी मसाला, मठरी बिस्कुट, प्लेन अजवाइन मठरी, अचारी मठरी, पालक तिल मठरी, बाजरा मठरी, रागी मठरी, मीठे शकरपारे आदि।

बात करने पर नानी का पिटारा की संस्थापिका ने कहा कि हम लक्ष्य को हासिल करने का उद्देश्य रखते हैं, जिससे हर स्तर पर सीखकर मजबूती से बढ़ सकें। यह विचार मेरे स्टार्टअप के लिए सफलता का कारक बना। उन्होंने नानी का पिटारा की सफलता पर बात करते हुए कहा कि हमने जिम्मेदारियों के प्रति अपने कर्तव्यों की गंभीरता को अच्छी तरह समझा और उनमें सामंजस्य बिठाया। इसी का परिणाम है कि आज हमारे पास 50 से अधिक प्रोडक्ट्स हैं, जो सभी पूरी तरह से होममेड और प्रिजर्वेटिव फ्री होने के साथ ही प्रकृति और पर्यावरण के अनुकूल भी हैं। ताकि किसी के स्वास्थ्य को किसी प्रकार का नुकसान न पहुंचे। क्योंकि नानी कभी भी इसमें किसी प्रकार की मिलावट नहीं करतीं, प्यार से बनाती हैं और शुद्ध खिलाती हैं। हम इन्हीं उद्देश्यों पर आज भी कायम हैं। उन्होंने कहा कि हम सभी उत्पादों को ऑनलाइन पोर्टल के माध्यम से बेचते हैं। इस स्टार्टअप में पहले परिवार की भागीदारी थी। लेकिन अब हमारी टीम में आधा दर्जन से अधिक लोग हैं। इस तरह आज नानी का पिटारा एक स्टार्टअप होने के साथ ही समाज में स्वावलंबन और महिलाओं के लिए एक प्रेरणा स्त्रोत भी है। ■

विशेष समाचार

21 अक्टूबर : मिशन गगनयान टीवी डी1 परीक्षण उड़ान का सफल प्रक्षेपण।

22 अक्टूबर : हमारे सशस्त्र बल ड्रोन, हेलीबोर्न ऑपरेशन और यूएवी सहित उन्नत हथियारों से सुसज्जित हैं। -केंद्रीय मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह।

23 अक्टूबर : एशियाई पैरा खेल 2022 में पुरुषों की ऊंची कूद में प्रवीण कुमार ने स्वर्ण पदक जीता।

24 अक्टूबर : प्रधानमंत्री ने आईटीबीपी के स्थापना दिवस पर आईटीबीपी कर्मियों को शुभकामनाएं दीं।

25 अक्टूबर : एशियाई पैरा खेल में महिलाओं की लंबी कूद टी 47 फाइनल स्पर्धा में निमिषा ने जीता स्वर्ण पदक।

26 अक्टूबर : राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह सरकार्यवाह डॉ. मनमोहन वैद्य जी की पुस्तक We and The World Around का विमोचन हुआ।

27 अक्टूबर : प्रधानमंत्री ने चित्रकूट में जगतगुरु रामभद्राचार्य की तीन पुस्तकों- 'अष्टाध्यायी भाष्य', 'रामानन्दाचार्य चरितम' और 'भगवान श्री कृष्ण की राष्ट्रलीला' का विमोचन किया।

28 अक्टूबर : एशियाई पैरा खेल 2022 पुरुषों की एफ-55 भाला फेंक स्पर्धा में नीरज यादव ने स्वर्ण पदक अपने नाम कर बनाया नया रिकॉर्ड।

29 अक्टूबर : सेवा यात्रा के दौरान एनएमओ एवं सेवा भारती द्वारा 87 सेवा बस्तियों में चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। सेवा बस्तियों में आयोजित चिकित्सा शिविरों में 10590 मरीजों का निशुल्क परीक्षण किया।

30 अक्टूबर : राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत ने केरल में स्व. रंगा हरि जी की पार्थिव देह के अंतिम दर्शन कर श्रद्धांजलि अर्पित की।

31 अक्टूबर : भुज में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत ने कच्छ की महारानी से शुभेच्छा भेंट कर वार्तालाप किया।

1 नवम्बर : इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री राजीव चंद्रशेखर ने ब्रिटेन (यूके) के बकिंघमशायर के बैलेचले पार्क में 'आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस सुरक्षा सम्मेलन 2023' के पहले दिन, पूर्ण सत्र को संबोधित किया।

2 नवम्बर : निर्वाचन आयोग ने देश भर की कक्षाओं में चुनावी साक्षरता लाने के लिए शिक्षा मंत्रालय के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए।

3 नवम्बर : अ. भा. कार्यकारी मंडल बैठक स्थान कच्छ क्षेत्र के भुज शहर में विभाग के 10 हजार से अधिक स्वयंसेवकों का पूर्ण गणवेश में एकत्रीकरण हुआ। विभाग के सभी 30 नगर एवं तहसील के 102 मंडल से कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

4 नवम्बर : राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अ.भा. का.मंडल की बैठक प्रारंभ हुई।

5 नवम्बर : प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने छत्तीसगढ़ के डोंगरगढ़ में मां बम्लेश्वरी की पूजा-अर्चना की।

6 नवम्बर : भारतीय नौसेना के नवीनतम, स्वदेशी, निर्देशित मिसाइल विध्वंसक, 'सूरत' का अनावरण गुजरात के मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल ने किया।

7 नवम्बर : राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय कार्यकारी मंडल की बैठक समाप्त हुई। बैठक में संघ दृष्टि से 45 प्रांतों व 11 क्षेत्रों के संघचालक, कार्यवाह, प्रचारक, अखिल भारतीय कार्यकारिणी सदस्य तथा कुछ विविध संगठनों के अखिल भारतीय संगठन मंत्रियों सहित 357 प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

8 नवम्बर : राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय के 11वें दीक्षांत समारोह में सम्मिलित हुईं।

9 नवम्बर : दीनदयाल अंत्योदय योजना-राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन और भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक ने एक ऐतिहासिक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए।

10 नवम्बर : नागालैंड और असम के पूर्व राज्यपाल पद्मनाभ बी आचार्य का निधन।

11 नवम्बर : रियर एडमिरल राजेश धनखड़ ने पूर्वी नौसेना कमान की स्वॉर्ड आर्म यानी पूर्वी बेड़े की कमान संभाली।

12 नवम्बर : प्रधानमंत्री ने हिमाचल प्रदेश के लेप्चा में बहादुर जवानों के साथ दिवाली मनाई।

13 नवम्बर : राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत ने जैन मंदिर श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मोठे मंदिर, इतवारी, नागपुर में प्रातः दर्शन किए।

14 नवम्बर : दक्षिणी नौसेना कमान मुख्यालय के तहत नौसेना के तोपखाना और मिसाइल युद्ध उत्कृष्टता केन्द्र, आईएनएस द्रोणाचार्य में तोपखाना संगोष्ठी का आयोजन।

15 नवम्बर : प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भगवान बिरसा मुंडा की जन्मस्थली झारखंड के उलिहातू गांव का दौरा कर उनकी प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित की।

16 नवम्बर : भारत-श्रीलंका का संयुक्त सैन्य अभ्यास 'मित्र शक्ति-2023' का नौवां संस्करण औंध (पुणे) में शुरू हुआ।

17 नवम्बर : नई दिल्ली में आयोजित दूसरे वॉयस ऑफ ग्लोबल साउथ शिखर सम्मेलन में केन्द्रीय मंत्री धर्मेन्द्र प्रधान ने शिक्षा मंत्रियों के सत्र की अध्यक्षता की।

18 नवम्बर : नई दिल्ली में एयरोनॉटिकल सोसाइटी ऑफ इंडिया द्वारा अपनी 75वीं वर्षगांठ के मौके पर '2047 में एयरोस्पेस और विमानन' विषय पर आयोजित एक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन और एग्जीबिशन में राष्ट्रपति ने भाग लिया।

19 नवम्बर : ओडिशा में 37 पीएमश्री केंद्रीय विद्यालय और 26 पीएमश्री जवाहर नवोदय विद्यालय का शुभारंभ हुआ

20 नवम्बर : राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ प्रचारक सरदार चिरंजीव सिंह जी का निधन। ■

1. अयोध्या किस पावन नदी के तट पर है?

a) गंगा **b)** सरयू

c) सरस्वती d) यमुना

2. चित्रकूट स्थित तुलसी पीठ के संस्थापक हैं।

a) जगद्गुरु रामभद्राचार्य **b)** बाबा रामदेव

c) प्रेमानंद महाराज d) श्री श्री रवि शंकर

3. अयोध्या में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा होगी?

a) 22 जनवरी 2024 **b)** 14 जनवीर 2024

c) 21 फरवरी 2024 **d)** 21 मार्च 2024

4. ऋग्वेद में कितने मंडल हैं?

a) 8 **b)** 9

c) 10 **d)** 11

5. भगवान राम का वंश था।

a) भृगु **b)** कश्यप

c) इक्ष्वाकु **d)** अत्रि

6. श्री रामचरितमानस के अंतिम अध्याय का क्या नाम है?

a) अरण्यकांड **b)** सुंदरकांड

c) लंकाकांड **d)** उत्तरकांड

7. त्रेतायुग में शेषावतार थे

a) लक्ष्मण **b)** भरत

c) शत्रुघ्न **d)** सुग्रीव

8. उत्तर और पूर्व के बीच के कोण को कहते हैं।

a) ईशान **b)** आग्नेय

c) नैऋत्य **d)** वायव्य कोण

9. एक महीन में कितनी एकादशी तिथि होती है?

a) 1 **b)** 2

c) 3 **d)** 4

10. हिंदी कैलेंडर के आठवें महीने का नाम है?

a) अश्विन **b)** फाल्गुन

c) भाद्रपद **d)** कार्तिक

उत्तर

1. (b), 2.(a), 3.(a), 4.(c), 5.(c), 6.(d), 7.(a), 8. (a) , 9. (b), 10. (d)

स्व आधारित भारत

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, नोएडा विभाग द्वारा आयोजित प्रबुद्ध नागरिक समारोह में 'स्व आधारित भारत' विषय पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉक्टर मोहन भागवत ने व्यापक दृष्टिकोण रखा। प्रस्तुत है सरसंघचालक के उद्बोधन का संपादित अंश -

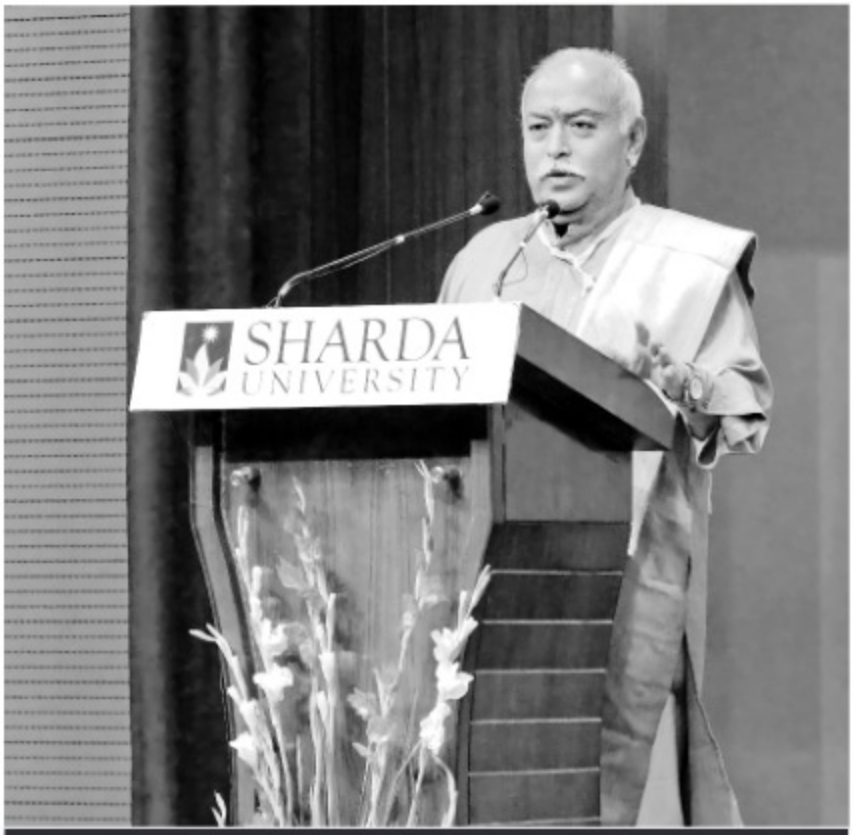

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पूज्य सरसंघचालक डॉ.मोहन भागवत

स्व आधारित भारत, यह बहुत व्यापक विषय है। उसको अगर पूरा समझना है तो एक व्याख्यान में बात पूरी नहीं होगी और एक व्यक्ति के बोलने से पूरी नहीं होगी। यह उद्बोधन है 26 नवंबर को नोएडा में स्व आधारित भारत पर सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत का। उद्बोधन के क्रम में उन्होंने कहा कि स्व आधारित भारत, आजकल इसकी चर्चा होने लगी है। पहले इसको आवश्यक नहीं माना जाता था और एक ऐसा विचार भी था कि जो-जो भारत का है वो कुछ काम का नहीं है और भारत का जो था वह हजार साल पुराना है, वह आज के समय में बिल्कुल उपयोगी नहीं है। ऐसा विचार होने लगा था कि हमको कुछ लेना चाहिए तो दूसरों से ही लेना चाहिए, उनकी नकल करनी चाहिए, उधर (पश्चिमी जगत से) से इधर (भारत में) करना। लेकिन यह एक सामान्य नियम है कि यदि व्यक्ति की, राष्ट्र की, समाज की उन्नति होनी है तो उसकी उन्नति उसकी अपनी प्रकृति पर आधारित होगी तो उन्नति कही जाएगी नहीं तो वह एक तमाशा होता है और तमाशा भी देखने लायक होता ही है।

स्व का आधार होना बहुत महत्वपूर्ण बात है क्योंकि स्व ही प्रगति की प्रेरणा है। हम कौन हैं? यदि यह पहचान लें तो हमारा पराक्रम और पुरुषार्थ जागता है। स्व पुरुषार्थ की प्रेरणा है। स्व प्रगति का कारक है और स्व ही दिशा दिखाता है कि प्रगति कैसी होनी चाहिए। क्योंकि दशा हर व्यक्ति की अलग-अलग रहती है, दशा अलग है तो दिशा अलग होगी। पाश्चात्य राष्ट्रों में लोग कम हैं तो यंत्रों पर ज्यादा जोर रहेगा, हमारे यहां पर प्रचण्ड जनसंख्या है, हर हाथ को काम देना एक समस्या है तो हम जितनी सरल सीधी टेक्नोलॉजी लेंगे ज्यादा रोजगार देने वाला तंत्र ग्रहण करेंगे उतना हमारे लिए अच्छा है। अमेरिका की नकल करने से यहां कुछ नहीं होगा, तो स्व ही प्रगति की नीति की दिशा निर्धारित करता है और इसलिए भारत को बढ़ने के लिए स्व आधारित भाव की आवश्यकता है। भारत बढ़ेगा तो हम और आप सुखी होंगे। हमारा अपना जीवन खड़ा करने के लिए हम कुछ भी परिश्रम करें, तो भारत का बड़ा होना यह हमारी अपनी प्रगति के लिए भी अनिवार्य बात है और दूसरी तरफ भारत का बड़ा होने की आज दुनिया को भी आवश्यकता प्रतीत हो रही है।

विश्व की चिंता स्वाभाविक है क्योंकि 2000 साल में विश्व ने बहुत प्रयोग किये हैं। सब प्रकार के उपाय कर लिए, ईश्वर न मानने वाला विचार स्वीकार कर लिया, ईश्वर मानने वाला विचार स्वीकार करके देख लिया, सामुदायिकता को प्रथम स्थान देने वाला विचार स्वीकार किया, व्यक्तिगत, व्यक्तित्व स्वतंत्रता को पहला स्थान देने वाला विचार स्वीकार किया, लेकिन सब करने के बाद कुछ न कुछ तो हुआ। दुःख से मुक्ति नहीं मिली, मन में संतोष और समस्याओं का समाधान नहीं हुआ। इसके विपरीत मनुष्य, मनुष्यता को भूलकर और नीचे गिरता चला गया। अब

विश्व को लगने लगा है कि समृद्धि भी नहीं रहेगी, पर्यावरण बिगड़ जाएगा तो पृथ्वी पर जीवन रहेगा या नहीं रहेगा यह समस्या है। सारे उपाय करके देख लिए कोई परिणाम नहीं निकला, तो विश्व को अनुभव में आया कि इतिहास के अनुसार एक भूला बिसरा उपाय भारत के पास था, उसी उपाय के आधार पर भारत ने 10000 साल खेती की लेकिन आज भी उसकी भूमि वैसी की वैसी उपजाऊ है। उसी उपाय के बलबूते ढाका के मलमल जैसा वस्त्र भारत ने बनाया जो आज के कंप्यूटर भी नहीं बना सकते। जहाजों को सागर में लॉन्च करने की जो टेक्नोलॉजी हमारे पास थी वह आज दुनिया के पास नहीं है। और जब कभी जहाज अड़ जाते हैं तो समस्या पैदा हो जाती है। एक बार विशाखापट्टनम में एक जहाज अड़ (आगे बढ़ने में बाधित) गया, जहाज आगे नहीं जा रहा था, तो पूरी पटरी बदलने का विचार होने लगा जो बहुत खर्चीला था, तब वहां के स्थानीय लोगों में से प्राचीन ग्रंथों का अध्ययन करने वाला एक व्यक्ति सामने आया, उसने कहा कि पके हुए केले उस पटरी पर डालो तो पके हुए केले लाकर उस पटरी पर घिसे गये, पटरी ऐसी बन गई कि एक ही प्रयास में वह जहाज पानी में चला गया। हमारी परम्परा में इस प्रकार की कई बातें हैं। जब कोरोना चला तब दुनिया को भी मालूम हो गया कि इनकी दादी मां के बर्तन में जो काढ़ा बनता है वो काढ़ा कोरोना से बचा सकता है, अब तक वे आयुर्वेद का नाम नहीं ले रहे थे अब आयुर्वेद का नाम सारी जगह घूम रहा है। दे योग को उपेक्षा से देख रहे थे, जादू टोना कहते थे अब सारी दुनिया 21 जून को योग दिवस मनाती है। यह उनके ध्यान में आ गया है कि भारत के पास उपाय है और भारत इसे हमको दे लेकिन पहले भारत को देने योग्य बनना होगा।

भारत का स्व क्या है? हरेक विषय पर हमारी दृष्टि क्या है? ये जानकर उनको करना है। उनका मन ऐसा ही है, जानकारी में कम ज्यादा है। उनके परिणाम होते हैं। वह जानकारी बढ़ जाए तो काम हो जाएगा। लेकिन (अंग्रेजी तंत्र) तंत्र जो बना बनाया है उसको धीरे-धीरे बदलना है वह हो रहा है, करना पड़ेगा पूरा। फिर दूसरी बात आती है समाज की व्यवस्था। अर्थात् अर्थ, काम की व्यवस्था, तो उसकी नीति भी, उसका मॉडल भी हमें अपनी (भारतीय) दृष्टि से बनाना पड़ेगा। हमारी दृष्टि कैसी है? आज अर्थ के बारे में डिमांड क्रिएट करो उसके लिए सप्लाई को नियंत्रित करो, डिमांड बढ़ेगी तो सप्लाई कम होगी तो ज्यादा मूल्य बनेगा, प्राप्ति ज्यादा होगी लेकिन महंगाई होगी, अभी ऐसे ही चल रहा है। इसके आधार पर ही वर्तमान अर्थतंत्र चलता है। किन्तु हमारा (भारतीय) अर्थतंत्र इससे बिल्कुल उल्टा चलता है। हम कहते हैं भरपूर उत्पादन करो, उत्पादन को एक हाथ में केंद्रित मत करो। मास प्रोडक्शन नहीं करना है प्रोडक्शन बाई मास करना है।

हमारे पास जो स्वदेशी ज्ञान भंडार है, प्राचीन समय से हमारे पास जो तकनीक है, आजकल सिद्ध भी हो रहा है। हम उसको युगानुकूल बना कर लेंगे और बाहर से जो भी लेंगे उसे देश अनुकूल बना कर लेंगे यह रहेगा हमारा आर्थिक तंत्र। इस प्रकार हम नया (भारतीय तंत्र) खड़ा करेंगे, इसी में से चलकर धीरे-धीरे तंत्र विकसित होगा।

प्रोडक्शन को विकेन्द्रित करो, छोटे-छोटे जगह ये काम होने चाहिए। भरपूर उत्पादन करो, उत्पादन से मुनाफा होता है। उसका न्यायपूर्ण वितरण होना चाहिए और उपभोग पर संयम होना चाहिए, उसका नियंत्रित उपभोग होना चाहिए। इससे सस्ताई होगी और सस्ताई होने के कारण फिर महंगे मूल्यों की प्रतिस्पर्धा नहीं होगी। तब उत्कृष्टता की प्रतिस्पर्धा होगी। सब सस्ता है तो जो अच्छे से अच्छा है वह टिकेगा। इसलिए हमारे यहां आज की तकनीकि को भी दांतों तले अंगुली दबाने लगाने वाले उत्पादन हुए हैं। आज भी अपनी तकनीक से झारखण्ड में लोहा बनता है, आठ लोग भट्ठी उठाकर चलते हैं आपके घर के आंगन में आपको लोहा तैयार कर दे देते हैं। वह लोहा जंग नहीं खाता। अपने यहां बने बहुत से ऐसे लौह स्तम्भ हैं। आज भी वहां के आदिवासी लोग ये बनाते हैं। उसका सैंपल नागपुर में लाया गया और उसके 37 पैरामीटर निश्चित किए। वह लोहा किसी फैक्ट्री में, किसी मशीन से, किसी कंप्यूटर से नहीं बनता। उनकी तकनीक से बनाने का प्रयास किया, झारखंड से दो आदिवासियों को लेकर आए और वैसा लोहा बनवा लिया।

हमारे पास जो स्वदेशी ज्ञान भंडार है, प्राचीन समय से हमारे पास जो तकनीक है, आजकल सिद्ध भी हो रही है। हम उसको युगानुकूल बना कर लेंगे और बाहर से जो भी लेंगे उसे देश अनुकूल बना कर लेंगे यह रहेगा हमारा आर्थिक तंत्र। इस प्रकार हम नया (भारतीय तंत्र) खड़ा करेंगे, इसी में से चलकर धीरे-धीरे तंत्र विकसित होगा।

भारत का ही ऐसा स्वभाव है और जब इस तंत्र को खड़ा करके हम अपना देश खड़ा करेंगे, उसको बल संपन्न, शक्ति संपन्न बनाएंगे तो हम अपने भाव या तंत्र को किसी पर थोपेंगे नहीं। हम सबके सामने उदाहरण रखेंगे और अपने मार्ग को चूक गई, लड़खड़ा गयी दुनिया हमको देखकर अपना वैसा तंत्र अपनी प्रकृति के आधार पर बनाएगी और संपूर्ण विश्व में बंधुभाव रूपी धर्म सर्वव्याप्त हो जाएगा। तब अपनी-अपनी विशिष्टता पर विकसित होकर सब आपस में लड़ाई झगड़ा नहीं करेंगे। तब वे सारे विश्व के जीवन को समृद्ध बनाने वाला अपना-अपना योगदान अर्पित करेंगे। उस विश्व का सपना देखने वाला भारत खड़ा करने का दायित्व आज के हम लोगों के सामने और हमारे बाद आने वाली दो पीढ़ियों के सामने है। उसके लिए हम तैयार हो जाएं, यह सारा अध्ययन-चिंतन करके भारत अपना विशिष्ट रास्ता बनाए और समय-समय पर लड़खड़ाती दुनिया को संतुलन देने वाला, नई सुख-सुंदर, शांतियुक्त दुनिया उत्पन्न करने वाला विश्वगुरु भारत हम सब खड़ा करें यह अपना कर्तव्य है। ■

9761757840

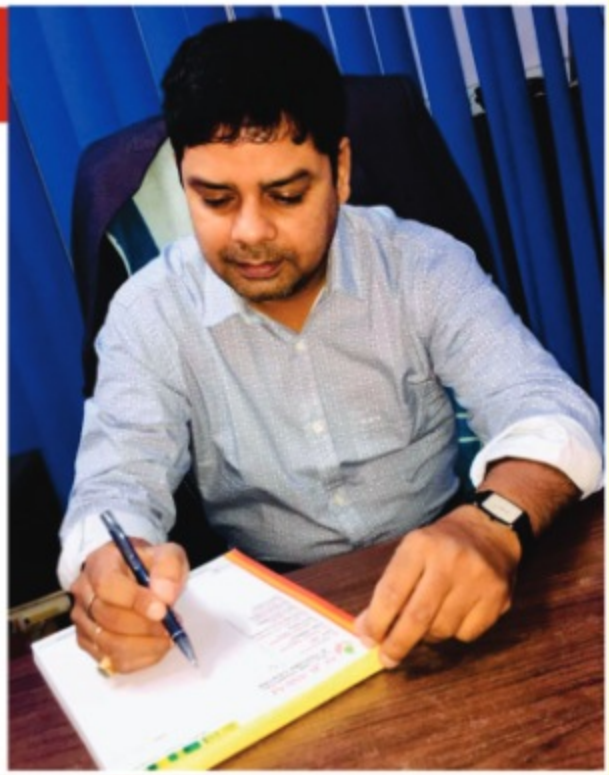

Dr. Naveen Kumar Gupta

M.B.B.S.,Dip.C.H.(Paediatrics)

Gold Medalist

नवजात, शिशु व बाल रोग विशेषज्ञ

Satyavati Clinic

Brij Chikitsa Sansthan Market,

Daresi Road, Mathura (up)

281001

RNI No. : UPHIN/2023/84344 Postal Reg No. : DL (DS)-61/MP/2023-24-25

BHAURAV DEVRAS SARASWATI VIDYA MANDIR

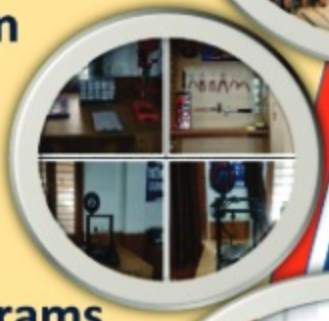

- Digital Library
- Atal Tinkering Laboratory
- Well Equipped Laboratories
- All Sports Activities
- Studio for Smart Education
- Value Based Education
- Easy Transport options from most suburbs
- Unique & Innovative Programs
- Modern Resources & Technologies

H-107, Sector-12, NOIDA
E-Mail: bdsvidyamandir@gmail.com
Contact No. 0120-4238317, 9910665195